www.UPSCPDF.com

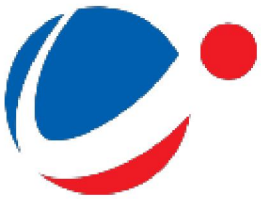

VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

विश्व इतिहास : भाग 2A

VISION IAS
Downloaded From
www.studymaterialofficial.com
www.UPSCPDF.com

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

1. द्वितीय विश्व युद्ध के मुख्य कारण 5

2. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान घटित विभिन्न घटनाक्रमों का सारांश 7

3. द्वितीय विश्व युद्ध के कुछ महत्वपूर्ण घटनाक्रम और उनका विश्लेषण 9

4. द्वितीय विश्वयुद्ध में नौसेना की भूमिका 16

5. द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र देशों की विजय में वायुसेना की भूमिका 16

6. धुरी राष्ट्रों की पराजय (Axis Defeated) (जुलाई 1943-45) 17

7. द्वितीय विश्वयुद्ध में धुरी राष्ट्रों की पराजय क्यों हुई? 18

8. द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव 18

9. विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रणालियां 19

9.1. पूंजीवाद 19

9.2. साम्यवाद 20

9.3. समाजवाद 20

10. समाजवाद के विभिन्न प्रकार 21

11. एक राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था के रूप में समाजवाद का विकास 25

12. कार्ल मार्क्स के विचार 28

13. रूस में समाजवाद: सामाजिक क्रान्तिकारी, बोल्शेविक और मेंशेविक 33

14. लेनिन और मार्क्सवाद 40

15. भारत में समाजवाद 43

16. स्टालिनवाद 46

16.1. स्टालिन के समक्ष चुनौतियाँ और उसका समाधान 46

16.2. स्टालिन ने भारी उद्योगों पर बल क्यों दिया? 47

16.3. पंचवर्षीय योजनाओं का शुभारंभ 47

16.4. कृषि का सामूहिकीकरण (1929) 48

16.5. स्टालिनवाद का परिणाम 48

17. विस्टालिनीकरण (De-Stalinization) 50

18. ब्रेजनेव युग (1964-82) 51

19. साम्यवादी राज्यों का पतन 52

19.1. दूरगामी प्रभाव 52

19.2. पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में साम्यवाद की आर्थिक विफलता 52

VISION IAS
Downloaded From
www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

19.3. मिखाइल गोर्बाचोव 53
19.4. मिखाइल गोर्बाचेव की नीतियों के कारण USSR का पतन क्यों हुआ? 54
20. USSR के पश्चात् साम्यवाद 56
21. चीनी साम्यवाद बनाम रूसी साम्यवाद 57
21.1. 1949 में चीन की समस्याएं 57
21.2. रूसी मॉडल में परिवर्तन क्यों किया गया? 58
21.3. 1958 तक रूसी मॉडल के साथ समानताएँ 58
21.3.1. रूस सदृश्य कृषि परिवर्तन (1950-56) 59
21.3.2. रूस सदृश्य औद्योगिक परिवर्तन (1953-58) 59
21.4. ख्रुश्चेव के नेतृत्व वाले रूसी दृष्टिकोण से मतभेद 59
21.5. सांस्कृतिक क्रांति (1966-69) 61
22. 1976 में माओ की मृत्यु के बाद चीन में साम्यवाद 63
23. चीन में साम्यवाद क्यों जीवित रहा और सोवियत संघ में क्यों विफल हुआ? 67
24. इटली: मुसोलिनी और फासीवादियों का उदय 69
24.1. रोम मार्च (MARCH ON ROME: 1922) 69
24.2. एसरबो कानून (ACERBO LAW) ने सत्ता पर मजबूत पकड़ बनाने में मुसोलिनी की सहायता की (1923) 70
24.3. अधिनायकवादी राज्य की दिशा में कदम 71
24.4. निगमित राज्य या कॉर्पोरेटिव स्टेट 71
24.5 लेटरन संधि/समझौता (LATERAN TREATY- 1929) 71
24.6. परिवर्तन 72
24.7. इटली में मुसोलिनी के शासन का मूल्यांकन 72
24.7.1. इटली वासियों के लिए फासीवाद के सकारात्मक पहलू 72
24.7.2. इटली में फासीवाद के नकारात्मक पहलू 73
24.8. मुसोलिनी के पतन के कारण 74
24.9. मुसोलिनी की प्रणाली कितनी अधिनायकवादी थी? 74
25. जर्मनी: वाइमर गणतंत्र और हिटलर का उदय 74
25.1. जर्मन क्रांति (नवंबर 1918-अगस्त 1919) 74
25.2. वाइमर गणतंत्र के विरूद्ध हुए विफल प्रयास 75
25.3. वाइमर गणतंत्र के तीन चरण 76
25.4. वाइमर गणतंत्र का पतन 76
25.5. हिटलर के उदय एवं नाजियों की लोकप्रियता के लिए उत्तरदायी कारण 78

VISION IAS
Downloaded From
www.studymasteroffical.com
www.UPSCPDF.com

25.6. हिटलर को चांसलर क्यों बनाया गया था? 79
25.7. हिटलर के पास शक्ति का संचय 80
25.8. हिटलर का शासन या नाजीवादी कार्यप्रणाली 80
25.9. हिटलर के शासनकाल का आंकलन 82
26. जापान: सैन्य फासीवाद (Japan: Military Fascism) 83
27. स्पेन: फ्रैंको का फासीवाद (Spain: Franco's Fascism) 84
27.1. स्पेन के गृहयुद्ध (1936-39) से पूर्व की स्थिति 84
27.2. स्पेन का गृहयुद्ध (1936-39) 85
27.3. स्पेन में फासीवाद (1939-75) 85
28. फासीवादी दर्शन 86
29. नाजीवाद (राष्ट्रीय समाजवाद) {Nazism (National Socialism)} 87
30. नाजीवाद और इटली के फासीवाद में समानताएँ 88
31. नाजीवाद और फासीवाद में अंतर 89
32. साम्यवाद और फासीवाद में समानताएं 89
33. फासीवाद और साम्यवाद में अंतर 90

VISION IAS
Downloaded From
www.studymasteroffical.com
www.UPSCPDF.com

1. द्वितीय विश्व युद्ध के मुख्य कारण

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारणों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: **अनिवार्य परन्तु अपर्याप्त कारण** और **अप्रत्याशित कारण।**

- अनिवार्य परन्तु अपर्याप्त कारणों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं-
  - वर्साय की संधि और म्यूनिख समझौते जैसी संधियाँ, जिसने या तो यूरोपीय देशों के बीच असंतोष पैदा किया या आक्रामक शक्तियों को तुष्ट करने की असफल कोशिश की।
  - राष्ट्रसंघ और 'सामूहिक सुरक्षा' की अवधारणा की विफलता।
  - अमेरिका में महान आर्थिक मंदी ने वैश्विक आर्थिक संकट को प्रेरित किया और इससे हिटलर एवं अन्य फासिस्ट शक्तियों का उदय हुआ।
- हिटलर और जर्मनी की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति, UK एवं अन्य देशों द्वारा अपनाई गई तुष्टीकरण की नीति तथा USSR की भूमिका जैसे कारक युद्ध के अप्रत्याशित कारण सिद्ध हुए।
  - **हिटलर की भूमिका**
    - उसने पोलैंड से अपनी कुछ मांगों को मनवाने यथा पोलिश कॉरिडोर और डैनज़िंग पर कब्जा करने, के बजाय सभी मोर्चों से पोलैंड पर हमला कर दिया। हिटलर के इस कदम से पता चलता है कि वह केवल वर्साय की संधि के बाद खोए क्षेत्रों को ही पाना नहीं चाहता था बल्कि पूरे पोलैंड का विनाश चाहता था।
    - हिटलर रूस को नष्ट करना चाहता था और अपने लेबेन्स्रॉम (Lebensraum) या 'जर्मनों के लिए रहने की जगह' के लिए उस क्षेत्र का उपयोग करना चाहता था। लेबेन्स्रॉम की अवधारणा को पहले ही समझाया जा चुका है। पूर्व में रूस की ओर मार्च करने के लिए पोलैंड पर कब्जा करना एक महत्वपूर्ण शर्त थी। रूस के साथ 1939 का अनाक्रमण समझौता पोलैंड पर आक्रमण के समय रूस को तटस्थ रखने के लिए था। वह दो मोर्चों पर एक साथ युद्ध नहीं चाहता था अर्थात् एक तरफ पश्चिमी शक्तियों के विरुद्ध (जो पोलैंड की सहायता के लिए आते) और दूसरी तरफ रूस के विरुद्ध। रूस पर कब्जा करने की हिटलर की इच्छा का सबूत मेन कैम्फ (मेरा संघर्ष) और एक अप्रकाशित गुप्त किताब से मिलता है जिसे उसने 1928 में लिखा था। यदि यह सिद्धांत सही है, तो तुष्टीकरण को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। ऐसा कहा जा सकता है कि तुष्टीकरण ने ही हिटलर की लक्ष्य प्राप्ति को सरल बना दिया। इसी प्रकार जर्मन लोगों को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। अतः यहां यह कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के लिए केवल हिटलर जिम्मेदार था।
    - फिर भी, ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के लिए सिर्फ हिटलर दोषी नहीं था। वह केवल स्थानीय युद्ध चाहता था। उसने नहीं सोचा था कि ब्रिटेन और फ्रांस जिन्होंने हिटलर के अनुचित कदम के बावजूद चेकोस्लोवाकिया की सहायता नहीं की थी वे पोलिश सीमाओं की सुरक्षा की दी गई गारंटी का सम्मान करेंगे। उसने सोचा कि पोलैंड और रूस कमजोर हैं तथा जर्मन ब्लिट्ज़क्रिग यानी तीव्र हवाई बमबारी के साथ एक तेज और हिंसक सैन्य आक्रमण के माध्यम से वे शीघ्र ही पराजित हो जाएंगे।
    - इसके अतिरिक्त, यह तर्क दिया जा सकता है कि हिटलर एक अवसरवादी था और 1939 में चेकोस्लोवाकिया (सुडेटेनलैंड को छोड़कर) पर कब्जा करने से पीछे नहीं हटा क्योंकि स्लोवाकिया द्वारा अर्द्ध-स्वतंत्रता की मांग के कारण खराब कानून-व्यवस्था के रूप में हिटलर के समक्ष एक अवसर विद्यमान था।

VISION IAS
Downloaded From
www.studymaster official.com
www.UPSCPDF.com

- **तुष्टिकर्ताओं की भूमिका:** तुष्टिकर्ता हिटलर के समान ही दोषी हैं। तुष्टीकरण की नीति ने उसके देश में उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया। हिटलर को म्यूनिख सम्मेलन (1938) में जितनी सरलता से सुडेटेनलैंड की पेशकश की गई उसे देखते हुए उसने जब 1939 में पौलैंड पर आक्रमण किया तो उसे ब्रिटिश और फ्रांसीसी निष्क्रियता पर दृढ़ विश्वास था। इसके अतिरिक्त, यह तर्क दिया जा सकता है कि ब्रिटिश प्रधानमन्त्री चेम्बरलेन ने जर्मनी के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई के लिए एक गलत मुद्दा उठाया। डैनज़िंग और पोलिश कॉरिडोर सुडेटेनलैंड की तुलना में अधिक वास्तविक मांग थी क्योंकि डैनज़िंग की आबादी में जर्मन लोगों का 95% हिस्सा था और पूर्वी प्रशा को शेष जर्मनी के साथ जोड़ने के लिए पोलिश कॉरिडोर महत्वपूर्ण था। म्यूनिख सम्मेलन में हिटलर को तुष्ट करने के ब्रिटिश फैसले को इस आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता कि ब्रिटेन को पुनर्सैन्यीकरण के लिए और अधिक समय की आवश्यकता थी क्योंकि चेकोस्लोवाकिया सैन्य रूप से सशक्त था और जर्मनी के आक्रमण के विरुद्ध सुडेटनलैंड में उत्कृष्ट किलेबंदी थी। इस प्रकार, सुडेटेनलैंड की घटना के समय चेकोस्लोवाकिया पोलैंड की तुलना में बेहतर सहयोगी हो सकता था। इसके अतिरिक्त, चेकोस्लोवाकिया पर कब्जे के दौरान ब्रिटेन और फ्रांस की निष्क्रियता निंदनीय है।

- **वर्साय की संधि और जर्मन जनता:** यह तर्क दिया जा सकता है कि जर्मन जनता के समर्थन के बिना, हिटलर का उदय संभव ही नहीं हो पाता। हिटलर ने सत्ता में आने के लिए कोई तख्तापलट नहीं किया, वह चुनावों के लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से सत्ता में आया। उसने नाज़ी पार्टी की अध्यक्षता की और चुनाव लड़ा और अच्छी-खासी सीटें जीतीं। ऐसा कहा जा सकता है कि हिटलर ने वे बातें कहीं जो जर्मन सुनना चाहते थे। वर्साय की संधि के विरुद्ध उसके प्रचार ने जर्मनों के बीच इस संधि से मिले अपमान के कारण पल रहे क्रोध को भड़काने का काम किया। जर्मन जनता ने हिटलर की कार्रवाई को मंजूरी प्रदान की थी। अतः यह कहा जा सकता है कि हिटलर के उत्थान के लिए जनता जिम्मेदार थी, लेकिन हिटलर द्वारा किए गए अत्याचारों के लिए जनता को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। हिटलर का एक

Downloaded From www.studymasteroffical.com
www.VISIONIAS.com

प्रचार विभाग था जो जर्मनों का लगातार ब्रेनवाश करता रहता था और उनके मन में एंटीसेमेटिक (यहूदियों के प्रति घृणा) विचार भरता रहता था। स्कूल के पाठ्यक्रम को तदनुसार बदल दिया गया था। हिटलर ने साम्यवाद के प्रति सार्वजनिक भय पैदा कर दिया और इस भय का उपयोग अपने हित के लिए किया। हिटलर के उदय से पूर्व के वे कमजोर नेता भी दोषी हैं, जिन्होंने केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए काम किया और हिटलर के विरुद्ध खड़े नहीं हुए। जर्मन पूंजीपतियों ने नाज़ियों के पक्ष में धन व्यय किया क्योंकि नाजियों ने कानून और व्यवस्था को बहाल करने में मदद की थी। लोगों और व्यापारियों ने हिटलर का समर्थन किया क्योंकि उसने कानून और व्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित की और साथ ही वे आम तौर पर साम्यवाद के विरुद्ध थे।

- **सोवियत संघ और जर्मनी के बीच अनाक्रमक संधि:** यह तर्क दिया जा सकता है कि USSR ने जर्मनी के साथ 1939 के अनाक्रमक समझौते पर हस्ताक्षर करके विश्वयुद्ध को अपरिहार्य बना दिया। अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो जर्मन आक्रामकता उभरने से पहले ही कुचल दी गई होती। भारत और अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में कोमिन्टर्न की गतिविधियाँ भी अविश्वास की स्थिति के लिए जिम्मेदार थीं। अपने बचाव में, रूसी विद्वानों का तर्क है कि रूस को पता था कि भविष्य में रूस पर हमला किया जाएगा और अपनी सुरक्षा को मजबूत करने के लिए रूस को समय की आवश्यकता थी इसलिए उसने अनाक्रमक समझौता किया।
- **सोवियत संघ और भावी मित्र राष्ट्रों के बीच अविश्वास:** सोवियत संघ और भावी मित्र राष्ट्रों के बीच अविश्वास भी एक प्रमुख कारण था। फ्रांस और ब्रिटेन के रूढ़िवादी, नाजियों की तुलना में सोवियत संघ के साम्यवादियों को लेकर अधिक संदेहग्रस्त थे। फ्रांस के दक्षिणपंथी हिटलर के प्रति सहानुभूति रखते थे और उसकी उपलब्धियों को लेकर आदर का भाव रखते थे। फ्रांस के रूढ़िवादियों ने 1935 में फ्रांस और USSR के बीच हस्ताक्षरित समझौते में सैन्य सहयोग के एक खंड को जोड़ने से फ्रांस को रोक दिया। अगर दोनों देशों के मध्य सैन्य गठबंधन उसी समय हो गया होता तो जर्मनी पूर्वी यूरोप के स्थानीय युद्धों में हार गया होता या हो सकता था कि उसने युद्ध ही नहीं किया होता।

2. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान घटित विभिन्न घटनाक्रमों का सारांश

- प्रथम विश्व युद्ध के विपरीत, जो खाइयों की लड़ाई (war of trenches) थी {खाई युद्ध (trench warfare) थल युद्ध (land warfare) का एक रूप है जिसमें बड़े पैमाने पर सैनिकों से भरी खाइयों की युद्ध पंक्तियाँ होती हैं, अर्थात गड्ढे जिसमें सैनिक दुश्मन के छोटे युद्धास्त्रों की मार से काफी सुरक्षित होते हैं और उन्हें तोप के गोलों से भी काफी सुरक्षा मिलती है}, द्वितीय विश्व युद्ध तेज गतिविधियों वाला युद्ध था। सैनिक टैंकों, ट्रकों आदि से लैस मैकेनाइज्ड डिवीजनों में चलते थे। हालांकि युद्ध में सभी प्रतिभागियों को उनकी सैन्य सहायता के लिए यह तकनीकी लाभ नहीं था।
- जब जर्मनी और USSR ने 1939 में पोलैंड पर हमला किया था तो पोलैंड ने अपने सैनिकों को स्थानांतरित करने के लिए घुड़सवार सेना का उपयोग किया। इसी प्रकार, फ्रांस अपने सैनिकों को तैनात करने में सुस्त था, जो जर्मनी से मिली हार का एक प्रमुख कारण था। युद्ध प्रशांत महासागर, सुदूर पूर्व, अटलांटिक महासागर, उत्तरी अफ्रीका, रूस की मुख्य भूमि, मध्य और पश्चिमी यूरोप में लड़ा गया था, जिसके कारण यह एक विश्व युद्ध बना।
- युद्ध को निम्नलिखित चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

प्रथम चरण: आरंभिक गतिविधियां: (सितम्बर 1939- दिसंबर 1940)

- जर्मनी और रूस ने पोलैंड पर कब्जा कर लिया।
- रूस ने एस्टोनिया, लाटविया, लिथुआनिया और फिनलैंड पर हमला किया।
- फोनी युद्ध (Phoney War): जर्मनी ने नॉर्वे और डेनमार्क पर कब्जा कर लिया।
- हॉलैंड, बेल्जियम और फ्रांस पर जर्मनी ने हमला किया।
- ब्रिटेन की लड़ाई (Battle of Britain) जर्मन और ब्रिटिश वायु सेना के बीच लड़ी गयी।
- मुसोलिनी ने मिस्र और ग्रीस पर हमला किया।

द्वितीय चरण: धुरी देशों की आक्रामकता में वृद्धि:

- 1941 में जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया।
- पर्ल हार्बर पर जापानी वायु सेना द्वारा बमबारी की गई, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में प्रवेश किया।
- दक्षिण-पूर्व एशिया के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर जापानी कब्जा। इसके नियंत्रण में था - फिलीपींस, बर्मा, मलाया और सिंगापुर।
- जर्मनी और जापान अपराजेय लग रहे थे, जबकि इटली कम सफल था।

तृतीय चरण: धुरी शक्तियों की तीन प्रमुख हार:

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने मिडवे द्वीप के युद्ध में जापान को हराया।
- जर्मनी ने संघर्षरत इटली की मदद के लिए मिस्र पर हमला किया। शीघ्र ही जर्मनी को उत्तरी अफ्रीका से ब्रिटेन और न्यूजीलैंड द्वारा बाहर कर दिया गया।
- रूस में, जर्मन सेना 1942 तक स्टालिनग्राद तक पहुंच गई थी, लेकिन अत्यधिक सर्दी के कारण संघर्षरत जर्मन सेना स्टालिनग्राद की लड़ाई हार गयी।
- दोनों पक्ष एक दूसरे के प्रमुख शहरों और प्रतिष्ठानों पर हवाई बमबारी में संलग्न थे।
- अमेरिका और ब्रिटेन जर्मन पनडुब्बी खतरे को रोकने में सक्षम थे।

चतुर्थ चरण: धुरी देशों की निर्णायक हार

- इटली पराजित होने वाला पहला राष्ट्र था।
- ब्रिटेन और अमेरिका ने नॉरमैंडी पर हमला किया। जिस दिन मित्र देशों की सेनाएं (Allied forces) नॉरमैंडी के समुद्र तटों पर उतरीं, उसे डी-डे के रूप में जाना जाता है और इस ऑपरेशन को ऑपरेशन ओवरलॉर्ड कहा जाता है। इस युद्ध में अमेरिकी पैराट्रूपर्स ने प्रमुख भूमिका निभाई। अमेरिका ने अपने टैंकों को इस युद्ध के मैदान में उतारा। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप फ्रांस स्वतंत्र हो गया, बेल्जियम और हॉलैंड भी जर्मन नियंत्रण से मुक्त हुए।
- इसी चरण में मित्र राष्ट्रों कि सेना ने जर्मनी में राइन नदी पार कर ली।
- रूस ने स्टालिनग्राद (1942) की लड़ाई में जीत के बाद जर्मनी को बाहर धकेल दिया और उसके बाद, पोलैंड के माध्यम से जर्मनी पर आक्रमण किया। यह अमेरिका और ब्रिटेन से पहले बर्लिन पहुंचने में सक्षम रहा।
- 1945 तक जर्मनी युद्ध हार चुका था।
- 1945- जापान को आत्मसमर्पण करने हेतु मजबूर करने के लिए अमरीका ने हिरोशिमा पर परमाणु बम से हमला किया। इसके उपरांत भी जब जापान ने आत्मसमर्पण नहीं किया तो उसने नागासाकी पर भी परमाणु बम से हमला किया।

VISION IAS
Downloaded From
www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

3. द्वितीय विश्व युद्ध के कुछ महत्वपूर्ण घटनाक्रम और उनका विश्लेषण

इस अध्याय में हम युद्ध की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करेंगे और उन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करेंगे जो प्रासंगिक हैं।

युद्ध के प्रारंभिक चरणों में जर्मनी अधिक सफल क्यों रहा?

- ब्लिट्जक्रिग की रणनीति (technique of Blitzkrieg) के कारण जर्मनी आरंभ में बहुत सफल रहा जिससे जर्मन सेना मशीनीकृत डिवीजनों में बहुत तेजी से आगे बढ़ सकी।
- विभिन्न देशों के सैनिक अपने टैंकों द्वारा मार्च करते हुए और मार्ग में आने वाले दुश्मनों पर हमला बोलते हुए आगे बढ़ सकते थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस समय थल सेना के आक्रमण को बेहतर और विनाशकारी वायुसेना की सहायता भी प्राप्त थी। जर्मनी द्वारा जीते गए युद्धों में जर्मन वायु सेना की श्रेष्ठता एक महत्वपूर्ण कारक थी।
- इसके अतिरिक्त जिन देशों पर आक्रमण किया गया उन देशों में स्थानीय नाज़ी समूहों का समर्थन जर्मन सेनाओं के लिए सहायक साबित हुआ। उदाहरण के लिए, नॉर्वे पर आक्रमण के दौरान स्थानीय नाजियों ने जर्मनों की मदद की। हालांकि इस आक्रमण को विफल करने हेतु ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने सैनिक भी भेजे लेकिन हवाई समर्थन की अनुपस्थिति यहाँ घातक साबित हुई।

आरंभिक गतिविधियाँ (सितंबर 1939-दिसंबर 1940)

पोलैंड की पराजय: 1939 की अनाक्रमण संधि के तहत रूस और जर्मनी ने एक-दूसरे पर हमला न करने का करार किया था। इस संधि के महत्वपूर्ण प्रावधानों और उनके उपरांत के घटनाओं का विवरण निम्नलिखित है:

- USSR को पोलैंड के कुछ हिस्से और बाल्टिक राज्य देने का वादा किया गया था।
- जर्मनी द्वारा पोलैंड पर हमले की स्थिति में USSR को तटस्थ रहना था। हालांकि जब जर्मनी ने पश्चिम से पोलैंड पर हमला किया तो रूस ने पूर्व से इस पर हमला बोला। पोलैंड इस हमले को नहीं झेल सका।
- जर्मन ब्लिट्जक्रिग ने पोलिश रेलवे और एयरफोर्स को नष्ट कर दिया। पोलैंड की सेना में कोई मोटर चालित प्रभाग नहीं था और वे सेना के आवागमन के लिए घोड़ों का उपयोग करते थे।
- इस हमले के दौरान ब्रिटेन पोलैंड की बहुत ज्यादा मदद नहीं कर सका और पुराने ढंग की धीमी गति से चलने वाली सेना होने के कारण फ्रांस समय पर कार्रवाई करने में विफल रहा था।
- इसका परिणाम यह हुआ कि पोलैंड को USSR और जर्मनी के बीच विभाजित कर दिया गया। पूर्वी पोलैंड USSR को मिला और पश्चिमी भाग अनाक्रमण संधि (1939) के तहत व्यक्त सहमति के अनुसार जर्मनी को मिला।

फोनी युद्ध (The Phoney War): यह 6 महीने की एक ऐसी अवधि थी जिसे सामान्यतः छद्म युद्ध (Phoney War) कहा जाता है। इस अवधि में जर्मनी ने इस आशा में पश्चिमी यूरोप के किसी भी हिस्से पर हमला नहीं किया कि ब्रिटेन और फ्रांस उससे शांति वार्ता के लिए कहेंगे। पुनः इस अवधि में जर्मन सैन्य जनरलों को बहुत अधिक समय मिल गया जिससे वे आगे की तैयारी को एक मूर्त रूप दे सके। उन्हें लगा कि जर्मनी उस समय व्यापक स्तर पर युद्ध करने के लिए पर्याप्त रूप से शक्तिशाली नहीं था।

जब **फिनलैंड** पर 1939 में सोवियत संघ ने हमला किया तब राष्ट्र संघ ने रूस को निष्कासित कर दिया। फिनलैंड ने रूसी क्रांति (1917) और रूसी गृह युद्ध (1918-20) के दौरान रूस से स्वतंत्रता अर्जित की थी। रूस ने पूरे फिनलैंड पर कब्जा नहीं किया था, लेकिन इसे अपने क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा सौंपने के लिए मजबूर किया था। केवल उन्हीं क्षेत्रों को फ़िनलैंड से लिया गया था जिससे रूस को पश्चिम से होने

VISION IAS
Downloaded From
www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

वाले हमले से निबटने में मदद मिलती। 1940 में रूस ने **बाल्टिक राज्यों** (एस्टोनिया, लाटीविया और लिथुआनिया) पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया। उल्लेखनीय है कि ब्रेस्ट लिटोवस्क (1917) की संधि के तहत जर्मनी ने इन्हें रूस से प्राप्त किया था और उसके बाद वर्साय की संधि (1920) के तहत इन्हें स्वतंत्र राज्य बनाया गया था। स्टालिन उन्हें पुनः रूस के अधीन करना चाहता था।

डेनमार्क और नॉर्वे पर आक्रमण (1940)

- यह युद्ध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे द्वितीय विश्व युद्ध के कई महत्वपूर्ण घटनाक्रम संबद्ध हैं। नॉर्वे जर्मनी के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि नॉर्वे का फियोर्ड तट जर्मन नौसैनिक अड्डों के लिए अच्छे स्थलों के रूप में काम कर सकता था।
    - नार्वे को जीत कर जर्मनी अपनी कई आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ रहा। नार्वे के बंदरगाहों के माध्यम से अब जर्मनी स्वीडिश लौह अयस्क का आसानी से आयात करने में सक्षम हुआ। ये अयस्क जर्मन शस्त्र फैक्ट्रियों के लिए अति महत्वपूर्ण थे। इस प्रकार इस युद्ध को जीतने के बाद जर्मनी को जहां एक तरफ लोहे की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित हो सकी वहीं दूसरी ओर उसके नौसैनिक ठिकानों के लिए अच्छी सामरिक अवस्थिति भी मिली।
    - ब्रिटेन में चेम्बरलिन ने इस्तीफा दे दिया और उसके बाद विंस्टन चर्चिल प्रधान मंत्री बने। युद्ध के दौरान चर्चिल ब्रिटेन का नेतृत्व करने में सफल रहे।

हॉलैंड, बेल्जियम और फ्रांस पर जर्मनी का एक साथ आक्रमण

- जर्मनी ने हॉलैंड, बेल्जियम और उत्तरी फ्रांस पर कब्जा कर लिया। बेल्जियम और उत्तरी फ्रांस पर जर्मन जीत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इस क्षेत्र में ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैनिकों के आत्मसमर्पण के कारण वे अनाश्रित और सुभेद्य बन गए। ब्रिटेन और फ्रांस को बंदरगाह शहर डनक्रिक से इन सैनिकों को निकालने की चुनौती का सामना करना पड़ा। यह मित्र शक्तियों के अधीन उत्तरी फ्रांस का एकमात्र क्षेत्र था। जर्मन लुफ़्टवाफे (जर्मन वायुसेना) द्वारा गोलीबारी की घटना के दौरान ब्रिटिश नौसेना द्वारा मित्र देशों के 3,38,000 सैनिकों के डनक्रिक से इस सफल निकासी को **ऑपरेशन डायनमो या डनक्रिक की लड़ाई** के रूप में जाना जाता है। यह फ्रांस के आत्मसमर्पण के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हुआ। इन सैनिकों की निकासी और लुफ़्टवाफे की गोलीबारी के दबाव में ब्रिटेन फ्रांस की मदद नहीं कर सका। डनक्रिक के सैनिकों ने सभी हथियारों और साजो-समान से हाथ धो लिए। ऑपरेशन डायनमो के बाद जर्मनी ने पेरिस पर कब्जा कर लिया और फ्रांस ने आत्मसमर्पण कर दिया (इसे 1940 के फ्रांस के युद्ध के रूप में भी जाना जाता है)। जर्मनी ने फ्रांस को उसी रेल कोच में युद्धविराम पर हस्ताक्षर करने के लिए विविश किया, जिसका उपयोग प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1918 के युद्ध विराम के लिए किया गया था। फ्रांस की सेना को तोड़ दिया गया था यानी फ्रांस को निःशस्त्र बनाया गया था, ठीक वैसे ही जैसे वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

को निःशस्त्र किया गया था। जर्मनी ने उत्तरी फ्रांस और अटलांटिक तट पर कब्जा कर लिया, जिससे जर्मनी को पनडुब्बी हमलों के लिए महत्वपूर्ण आधार मिला।

- फ़्रांस का जो हिस्सा कब्जे में नहीं लिया गया था उसे एक कठपुतली सरकार के अधीन रखा गया और इसे विची फ्रांस (Vichy France) के रूप में जाना जाने लगा। यह 1940 से 1944 तक अस्तित्व में रहा, यानी मित्र राष्ट्रों द्वारा फ्रांस को मुक्त किये जाने तक। इस दौरान विची फ्रांस में अधिकारवादी शासन (authoritarian regime) देखने को मिला। विची फ्रांस के गठन के साथ ही तृतीय फ्रांसीसी गणराज्य (1870-1940) का अंत हुआ। जब फ़्रांस को मुक्त करा लिया गया तो उसके बाद चतुर्थ फ्रांसीसी गणराज्य (1946-58) की घोषणा की गई।

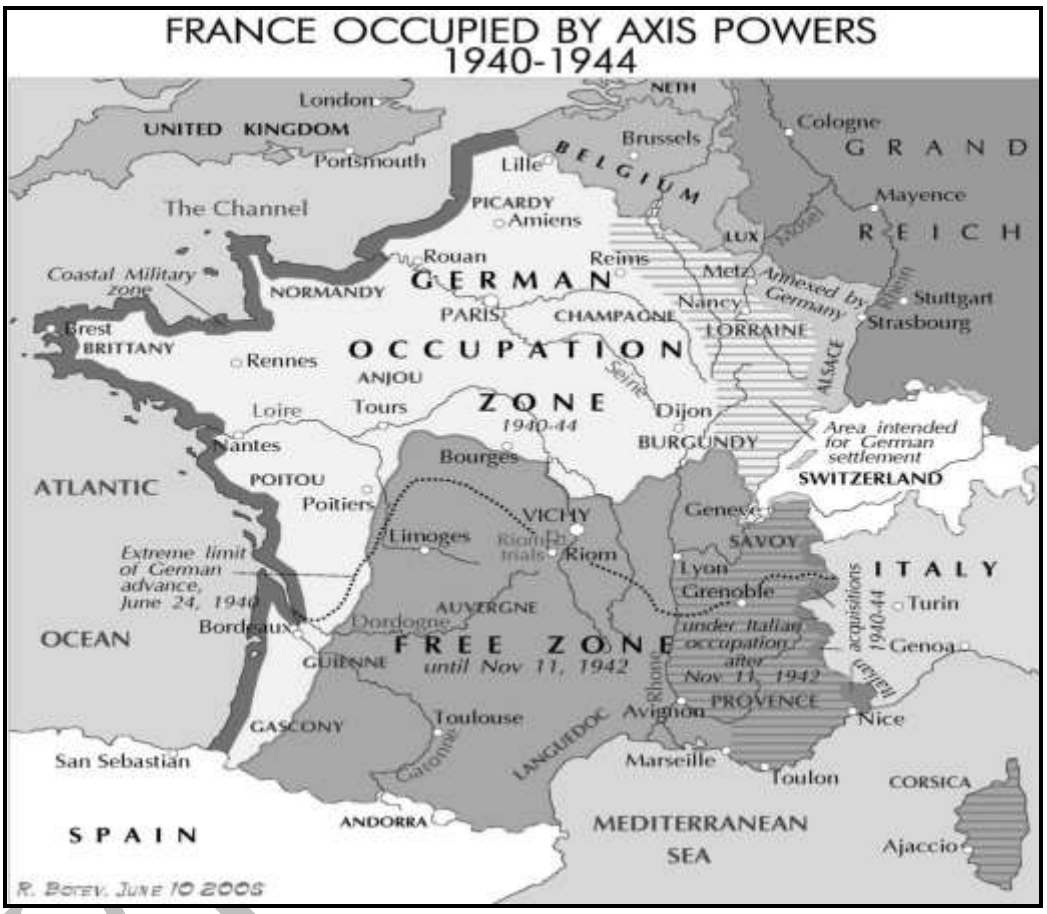

फ्रांस जर्मनी से इतनी जल्दी क्यों हार गया था, इसके कारणों पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है।

कारण

- हालांकि फ्रांसीसी जर्मन खतरे से अवगत थे फिर भी वे युद्ध के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। वामपंथ और दक्षिणपंथ के बीच टकराव के कारण न तो उनमें एकता थी और न ही सही तैयारी थी। परस्पर विरोधी होने के बावजूद वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों जर्मनी के साथ युद्ध के विरुद्ध थे। 1939 के रूस-जर्मन अनाक्रमण संधि के बाद वामपंथी युद्ध के पक्ष में नहीं थे, जबकि दक्षिणपंथियों ने हिटलर की उपलब्धियों की प्रशंसा करते थे और युद्धविराम चाहते थे। इन्होंने तर्क दिया कि चूंकि जब पोलैंड हार ही चुका है तो जर्मनी के विरुद्ध युद्ध लड़ने का कोई कारण नहीं बनता क्योंकि फ्रांस की युद्ध में कोई भी भूमिका केवल पोलिश सीमाओं की गारंटी के कारण ही थी।
- फौज की धीमी लामबंदी: इनफैन्ट्री द्वारा अपने साथ चल रहे यंत्रीकृत डिवीजनों को धीमा कर दिया गया। इसने जर्मनी को एक फायदा पहुंचाया क्योंकि जर्मनी की सैनिकों को लाने-ले जाने की गति फ्रांस की तुलना में तेज थी।

www.UPSCPDF.com

- फ्रांस ने अपने सैनिकों के लिए हवाई सहयोग की उपेक्षा की, जबकि जर्मन हवाई सहयोग बहुत प्रभावी था।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी एक साथ दो मोर्चों पर युद्ध लड़ रहा था अर्थात् पूर्व में रूस और पश्चिम में फ्रांस के विरुद्ध। 1939 में रूस के साथ किए गए अनाक्रमण संधि से हिटलर की प्रतिभा उभर कर सामने आई जिसके तहत अब उसने अपनी सारी सेनाओं को केवल फ्रांस के विरुद्ध एक ही मोर्चे पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति दी थी। इस प्रकार फ्रांस को रूस जैसा सहयोगी नहीं मिला जिसने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उसकी भली-भांति मदद की थी।

ब्रिटेन की लड़ाई (Battle of Britain: 1940)

- यह युद्ध जर्मन लुफ़्टवाफ़े (German Luftwaffe) और ब्रिटेन के रॉयल एयर फ़ोर्स के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में जर्मनी को पहली बार पराजय का सामना करना पड़ा। हालांकि लुफ़्टवाफे द्वारा बमबारी के कारण ब्रिटेन के शहरों में बुनियादी ढांचे को भारी क्षति पहुंची फिर भी जर्मनी ब्रिटिश एयरफोर्स को पराजित नहीं कर सका। जर्मनी ने 1400 हवाई जहाज खो दिए जबकि ब्रिटेन को केवल 700 जहाजों का ही नुकसान हुआ। ब्रिटिश रडार स्टेशनों द्वारा ब्रिटिश हवाई जहाजों को आरंभिक चेतावनी देने के कारण ब्रिटेन यह युद्ध जीत गया। इसके अतिरिक्त जर्मन हवाई जहाजों ने लंदन पर बमबारी करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया और इस दौरान ब्रिटिश एयरफोर्स को एकजुट होने का समय मिल गया।

मिस्र और ग्रीस (1940) पर मुसोलिनी का आक्रमण

- लीबिया इटली का उपनिवेश था। इटली ने मिस्र पर लीबिया की ओर से और ग्रीस पर अल्बानिया की ओर से हमला किया। अल्बानिया 1939 से इटली के कब्जे में था। यह घटना महत्वपूर्ण रही क्योंकि इससे इटली को हथियारों, जहाजों, टैंकों और सैनिकों का भारी नुकसान पहुंचा। ब्रिटेन ने मिस्र से इटली को खदेड़ दिया और ग्रीस अल्बानिया पर कब्जा करने में सफल रहा। यहाँ एक और महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि हिटलर को इटली की हार के बाद उसकी मदद के लिए अपनी सेना भेजनी पड़ी। हालांकि इन सैनिकों का जर्मन ऑपरेशन के लिए कहीं और उपयोग किया जा सकता था। इस प्रकार मुसोलिनी के कारण हिटलर शर्मिंदगी अनुभव करने लगा।

धुरी शक्तियों के आक्रमण में तेजी (1941-42)

- **उत्तरी अफ्रीका और ग्रीस:** हिटलर ने इटली में मदद के लिए सेना भेजी। जर्मन सेना ने ब्रिटेन को लीबिया से पूर्णरूपेण और मिस्र से आंशिक रूप से बाहर कर दिया। उन्होंने ग्रीस पर भी हमला किया और ब्रिटिश सैनिकों को भागने पर विवश किया। युगोस्लाविया और ग्रीस पर जर्मनी द्वारा एक साथ हमला किया गया। जर्मनी की जीत का निम्नलिखित प्रभाव पड़ा :
    - मित्र राष्ट्रों के मनोबल में कमी आई क्योंकि उन्हें सैनिकों की भारी क्षति हुई थी।
    - यह मित्र राष्ट्रों के लिए अप्रत्यक्ष कृपादान भी साबित हुआ क्योंकि इससे रूस पर जर्मन हमले में देरी हुई थी। इस समय हिटलर इटली की सहायता करने में व्यस्त था।
- **ऑपरेशन बारबोसा (1941):** यहाँ जर्मनी ने 10 वर्षों के लिए हस्ताक्षरित अनाक्रमण संधि (1939) को तोड़ते हुए रूस पर आक्रमण किया। जर्मनी ने रूस पर हमला क्यों किया? इसके कई कारण हो सकते हैं:
    - कुछ विद्वानों का तर्क है कि जर्मनी जब पश्चिम में युद्धरत था तो उसे रूस के हमले का डर था। वे रूस द्वारा इस तरह के अभियान को रोकना चाहते थे।
    - जर्मनी को आशा थी कि जापान सुदूर पूर्व से एक साथ रूसियों पर हमला करेगा, जिससे उनकी हार जल्दी और निश्चित हो जाएगी।
    - साम्यवाद से घृणा भी इसका एक कारण था।
    - कुछ लोग तर्क देते हैं कि हिटलर हमेशा रूस पर हमला करना चाहता था। यूराल पर्वत तक रूसी क्षेत्र पर कब्जा करना उसकी रणनीति का हिस्सा था ताकि जर्मनों के लिए रहने की जगह या लेबेन्स्रम (Lebensraum) का सृजन किया जा सके।
    - इसका एक अन्य कारण यह भी है कि जर्मन रूसी सैनिकों को पकड़ना चाहते थे।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

जर्मनी ने उत्तर, दक्षिण और मध्य से हमला किया और क्रमशः लेनिनग्राद, यूक्रेन और मॉस्को की ओर ब्लिट्जक्रिग रणनीति का उपयोग कर मार्च किया और हवाई जहाज, टैंक और सौनिकों द्वारा एक साथ तेजी से हमले किए।

जर्मन आरंभ में बेहद सफल रहे क्योंकि उन्होंने एक अनुभवहीन रूसी सेना का सामना किया। 1937 के स्टालिन पर्ज (Stalin purges) के बाद अनुभवी जनरलों की जगह अनुभवहीन युवा अधिकारी आ गए थे। धीमी लामबंदी प्रक्रिया भी एक कारण था। लेकिन जर्मनी 1941 में मॉस्को और लेनिनग्राद (अब सेंट पीटर्सबर्ग) पर कब्जा करने में असफल रहा। अक्टूबर में काफी अधिक बारिश होने के कारण रूसी सड़कें कीचड़ से पट गई थीं और फिर नवंबर-दिसंबर (तापमान शून्य से 38 डिग्री सेल्सियस नीचे था) में पाले (frost) ने भी जर्मनी को आगे मार्च करने से रोक दिया। जर्मन सेना के पास सर्दियों के कपड़े की भी कमी थी क्योंकि उन्हें नवंबर तक रूस को हराने की उम्मीद थी। 1942 में जर्मन स्टेलिनग्राद की लड़ाई हार गए।

- **अमेरिका का युद्ध में प्रवेश (दिसंबर 1941) :** जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला किया और इस हमले के साथ अमेरिका अलगाव की नीति को समाप्त कर मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। हालांकि लैंड-लीज एक्ट (अप्रैल 1941) के माध्यम से, संयुक्त राज्य अमेरिका पहले से ही ब्रिटेन को भारी वित्त और रूसियों को युद्ध सामग्री देकर सहायता कर रहा था। पर्ल हार्बर हवाई द्वीप में एक नौसेना बेस था। वाशिंगटन सम्मेलन में जापान ने ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ नौसैना को सीमित करने को लेकर एक समझौते किया था। 1930 में, उसने नौसेना की सीमा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई थी, लेकिन जल्द ही इसका उल्लंघन किया। इस प्रकार वाशिंगटन सम्मेलन की प्रतिज्ञा को तोड़ दिया गया। यह वाशिंगटन सम्मेलन (1921-22) के तहत चीन की तटस्थता को बनाए रखने पर भी सहमत था, लेकिन 1931 में इसने मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया।

VISION
www.UPSCPDF.com

चित्र: पर्ल हार्बर पर जापानी हमले का एक दृश्य

- 1937 तक जापान ने चीन पर पूर्ण रूप से आक्रमण आरंभ कर दिया और द्वितीय चीन-जापान युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध का हिस्सा बन गया। पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के निम्नलिखित कारण थे:
  - जापान 'ग्रेटर ईस्ट एशिया सह-समृद्धि क्षेत्र' (Greater East Asia Co-prosperity Sphere) का वर्चस्व चाहता था। यह जापान की साम्राज्यवादी नीति का एक परिचायक थी। इसका निहितार्थ यह था कि पूर्वी एशिया के सभी देशों पर से पश्चिमी शक्तियों का प्रभुत्व खत्म हो जाए और ये देश जापानी साम्राज्य के नियंत्रण में आ जाएं।
  - जापान अपने यहां कच्चे माल की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करना चाहता था। इस हेतु वह मलाया और बर्मा पर अधिकार चाहता था, जिनपर अंग्रेजों का नियंत्रण था। ये क्षेत्र रबर, तेल और टिन में समृद्ध थे। यह तेल में समृद्ध डच ईस्ट इंडीज को भी अपना उपनिवेश बनाना चाहता था।
  - जापान अमेरिका के साथ युद्ध नहीं चाहता था लेकिन अमेरिका जापानी योजनाओं के रास्ते में बाधा साबित हो रहा था। अमेरिका जापान के विरुद्ध युद्ध में चीन की मदद कर रहा था। अमेरिका ने जापान पर तेल प्रतिबंध भी लगाया था क्योंकि जापान फ्रेंच इंडो-चाइना (लाओस, वियतनाम और कंबोडिया के क्षेत्र) से वापस जाने की अमेरिकी मांग पर ध्यान नहीं दे रहा था। जापान ने विची फ्रांस से इंडो-चाइना प्राप्त किया था जो हिटलर द्वारा फ्रांस की लड़ाई (1940) के बाद स्थापित एक कठपुतली सरकार थी। जब अमेरिका ने इंडो-चीन और चीन से जापान की वापसी की मांग जारी रखी तो वार्ताएं गतिरोध पर पहुंच गई थीं ।
  - आक्रामक जनरल तोजो के जापान के प्रधान मंत्री बनने से युद्ध भी अनिवार्य हो गया था।

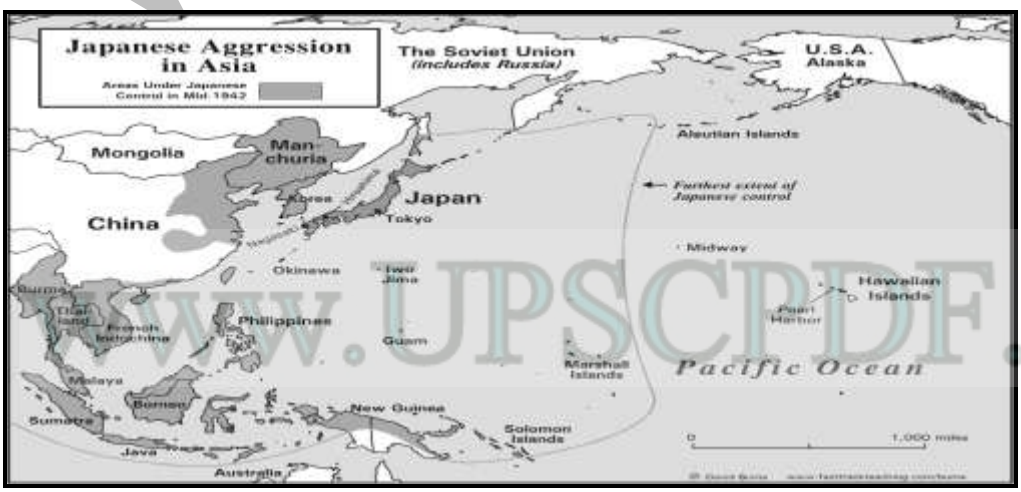

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

पर्ल हार्बर पर हमले के बाद:

- जापान को प्रशांत क्षेत्र का नियंत्रण मिला।
- इसने मलाया, सिंगापुर, बर्मा और हांगकांग के ब्रिटिश उपनिवेशों पर कब्जा कर लिया।
- इसने डच ईस्ट इंडीज, फिलीपींस, गुआम और वेक आइलैंड पर कब्जा कर लिया, ये तीनों अमेरिकी उपनिवेश थे।

- पर्ल हार्बर पर किये गए हमले के बाद हिटलर ने संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। USSR पर हमला करने की पहली गलती के बाद यह दूसरी गंभीर गलती थी। अगर हिटलर ने संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की होती तो संभवतः वह सुदूर पूर्व अर्थात जापान के साथ प्रशांत युद्ध पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकता था। हिटलर के इस कदम ने जर्मनी को USSR, अमेरिका और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के विशाल संसाधनों के विरुद्ध खड़ा कर दिया और इस घटना के बाद एक ऐसी स्थिति विद्यमान हो गई, जहां- जितना लंबा युद्ध चलता, धुरी शक्तियों के विजय की संभावना उतनी ही कम होती।
- एशिया और अन्य जगहों के मूल निवासियों से क्रमशः जापान और जर्मनी द्वारा बुरा व्यवहार किया गया। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो पूर्व-विद्यमान शक्तियों के उत्पीड़न से ऊबे मूल निवासी धुरी शक्तियों के साथ सहयोग कर सकते थे। उदाहरण के लिए, बाल्टिक राज्यों (एस्टोनिया, लाटिविया, लिथुआनिया और यूक्रेन) के मूल निवासी स्टालिन के शासन के समय उत्पीड़न के शिकार हुए थे। उपनिवेशों में मूल निवासियों के साथ जापानियों का दुर्व्यवहार बेवकूफी भरा था क्योंकि उपनिवेशों ने खुले बाहों के साथ पूर्व का स्वागत किया था क्योंकि उन्होंने जापान को मुक्तिदाता के रूप में देखा था। साम्यवादियों के नेतृत्व में प्रायः गरीबों के साथ व्यवहार के विरोध में प्रतिरोध आंदोलनों का आयोजन किया गया। हालांकि इंडोनेशिया में, जापान ने सुकर्णो को राष्ट्रवादी आंदोलन के नेता के रूप में मान्यता दी और जापानी युद्ध के प्रयासों में इंडोनेशियाई समर्थन पाने के लिए स्वतंत्रता का वादा किया।

धुरी देशों की तीन हार: मिडवे द्वीप में जापान पर अमेरिका की जीत, मिस्र (अल-अलामेन की लड़ाई के रूप में जाना जाता है) में ब्रिटेन और न्यूजीलैंड के हाथों जर्मनी की हार और रूस के हाथों स्टालिनग्राद की लड़ाई में जर्मनी की हार।

मिडवे की लड़ाई (1942) एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। इस लड़ाई में अमेरिका के बमवर्षकों ने जापानी विमान वाहक पोतों को नष्ट कर दिया। जापान के लिए विमान वाहक पोत के बिना समुद्री लड़ाइयों को जीतना लगभग असंभव था। इस युद्ध के बाद अमेरिका ने जो आरंभ किया उसे 'आइलैंड हॉपिंग' के रूप में जाना जाने लगा। 1942-44 के बीच इसने जापान से प्रशांत द्वीपों को एक-एक कर जीत लिया। इसके लिए उसने हवाई बमबारी के साथ-साथ जमीनी हमलों का भी सहारा लिया।

मिस्र [अल अलामेन की लड़ाई अक्तूबर 1942] में जर्मनी की हार एक निर्णायक मोड़ थी क्योंकि इसने स्वेज नहर को जर्मनी के नियंत्रण में जाने से बचाया था। इसने धुरी शक्तियों और मध्य-पूर्व के बीच गठबंधन की संभावना को भी समाप्त कर दिया। रेगिस्तान में हुए इस युद्ध ने जर्मनी के संसाधनों को समाप्त कर दिया, जिसका सोवियत संघ के विरुद्ध बेहतर उपयोग किया जा सकता था। इस प्रकार इटली के खराब प्रदर्शन ने जर्मनी को झटका दिया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अल अलामेन की लड़ाई ने उत्तरी अफ्रीका से धुरी शक्तियों को पूरी तरह से बाहर कर दिया। इसने मित्र देशों की सेनाओं को मोरक्को और अल्जीरिया में उतरने का मौका दिया जिससे पश्चिम से धुरी देशों की सेनाओं पर हमला किया जा सके। इसके बाद लीबिया और ट्यूनीशिया को पुनः जीत लिया गया और इटली पर आक्रमण किया गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

WWW.UPSCPDF.COM

स्टालिनग्राद का युद्ध (1942) दक्षिणी रूस में लड़ा गया था। जर्मनी अगस्त 1942 तक स्टालिनग्राद पहुंच गया और इसने यहां के बुनियादी ढांचे को नष्ट कर दिया। लेकिन रूसियों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और नवम्बर में आक्रामक प्रतिरोध करना प्रारम्भ किया। फरवरी 1943 तक जर्मन घिर चुके थे, उनकी आपूर्ति लाइनें काट दी गई थीं और उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। स्टालिनग्राद का युद्ध एक निर्णायक मोड़ था क्योंकि यदि जर्मनी इस युद्ध में जीत जाता तो वह रूस के तेल की आपूर्ति लाइनों को काटने में सक्षम हो जाता। रूस में काकेशस से तेल पहुंचता था। स्टालिनग्राद के जर्मनी के नियंत्रण में होने पर जर्मनी दक्षिण-पूर्व से मास्को पर हमला करने में सक्षम हो जाता। इस जीत ने रूसी सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और जल्द ही जर्मनी को लेनिनग्राद से और रूस से बाहर कर दिया गया।

4. द्वितीय विश्वयुद्ध में नौसेना की भूमिका

धुरी राष्ट्रों की पराजय में नौसेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जापान को पराजित करने में अमेरिकी नौसेना की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ब्रिटिश नौसेना ने भी मित्रराष्ट्रों को पूर्ण रूप से सहयोग दिया था:

- नौसेना ने मित्रराष्ट्रों के व्यापारिक जहाजों की सुरक्षा की। इससे भोजन की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित हो सकी। आर्कटिक के रास्ते रूस को हथियार, हवाई जहाज और मांस पहुंचाने वाले रक्षादलों को सुरक्षा प्रदान करने में विशेषकर ब्रिटिश नौसेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- जर्मनी की यू-बोट्स (U-boats) (पनडुब्बियों) को डुबाने और नौ सेना के जहाजों को परास्त करने में मित्र देशों की नौसेनाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- धुरी देशों को होने वाली आपूर्ति को अवरुद्ध करने में मित्र देशों की नौसेनाएँ सफल रहीं।
- सैनिकों को उत्तरी अफ्रीका और फिर इटली तक पहुंचाकर मित्र राष्ट्रों की नौसेना ने सैनिकों के आवागमन को संभव बनाया।
- 1944 में विची फ्रांस के आक्रमण के दौरान नौसेना और वायुसेना की ताकत महत्वपूर्ण साबित हुई।
- ब्रिटिश नौसेना को **अटलांटिक की लड़ाई (1939-45)** में ब्रिटिश जीत सुनिश्चित करने के लिए सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली। अटलांटिक की लड़ाई वस्तुतः ब्रिटिश नौसेना और जर्मन यू-बोट्स के बीच का एक संघर्ष था। उल्लेखनीय है कि जर्मन यू-बोट्स ब्रिटिश व्यापारिक जहाजों को डुबाकर ब्रिटेन को खाद्य सामग्री और कच्चे माल की आपूर्ति से वंचित कर रही थीं। अटलांटिक की लड़ाई में मित्र देशों के विजयी होने के विभिन्न कारण थे:
    - जिस तेजी से जर्मन यू-बोट्स जहाजों को डुबा रही थीं, 1943 तक मित्र देश उससे भी अधिक तेजी से जहाजों का निर्माण करने लग गए थे।
    - राशन की आपूर्ति करने वाले व्यापारिक जहाजों को सुरक्षा प्रदान कर रहे मित्र देशों के रक्षादलों को वायु संरक्षण मिलने से जर्मनी को पराजित करना आसान हो सका।
    - ब्रिटेन द्वारा हवाई जहाजों में एक ऐसी नई रडार तकनीक लगाई गई जिसकी सहायता से रात्रि के दौरान या कम दृश्यता की स्थिति में भी यू-बोट्स का पता चल जाता था।

5. द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र देशों की विजय में वायुसेना की भूमिका

- **ब्रिटेन की लड़ाई (1940) -** रॉयल एयरफोर्स ने जर्मन एयरफोर्स को पराजित कर दिया। जर्मन एयरफोर्स की पराजय ब्रिटेन के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए अति आवश्यक थी।
- कम दृश्यता की स्थिति में यू-नौकाओं का पता लगाने के लिए हवाई जहाज में नई तकनीक के उपयोग से अटलांटिक की लड़ाई (1939-45) जीतने में सहायता मिली।
- अमेरिकी वायुसेना ने प्रशांत युद्ध (1941-45) जीतने में अमेरिकी नौसेना को सहायता प्रदान की थी। मिडवे की लड़ाई में इसका एक महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके अतिरिक्त, अमेरिकी हवाई जहाजों ने बर्मा को दोबारा जीतने के लिए मित्र शक्तियों हेतु आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण प्रवाह सुनिश्चित किया था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.COM

- उत्तरी अफ्रीका में युद्ध के दौरान रॉयल एयरफोर्स ने भूमध्य सागर में आपूर्ति जहाजों पर बमबारी की थी।
- विमानों के कारण पैराट्रूपरों को युद्ध क्षेत्र में उतारना संभव हो सका और नॉर्मैंडी (1944) व इटली (1943) में विमानों ने उन्हें हवाई सुरक्षा भी प्रदान की।
- **मित्र देशों के सामरिक हवाई हमले:** यह धुरी शक्तियों के शहरों, विशेष रूप से उनके सैन्य और औद्योगिक केन्द्रों को लक्ष्य बनाकर की गई बमबारी थी। लेकिन इस हमले का 1944 तक जर्मन औद्योगिक उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। परंतु अंततः इसका परिणाम यह हुआ कि 1944 के बाद जर्मनी में तेल का अभाव उत्पन्न हो गया।

6. धुरी राष्ट्रों की पराजय (Axis Defeated) (जुलाई 1943-45)

इसमें चार घटनाएं सम्मिलित हैं- इटली का पतन (1943), फ्रांस की स्वतंत्रता के लिए 'ऑपरेशन ओवरलॉर्ड' (1944), जर्मनी पर आक्रमण (1944-45) और जापान की पराजय (1945)।

- **इटली का पतन (1943):** अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिकों को सिसली में हवाई जहाजों के माध्यम से उतारा गया। इटली के राजा ने मुसोलिनी को बर्खास्त कर दिया और इटली मित्र देशों की ओर से युद्ध में सम्मिलित हो गया। जर्मनी ने अपने सैनिकों को इटली भेजा, लेकिन वे हार गए। इटली के पतन ने हिटलर को अपने सैनिक इटली भेजने के लिए बाध्य कर दिया, जिनका कि रूस के विरुद्ध अपेक्षाकृत अधिक अच्छा उपयोग किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त मित्र देशों को मध्य यूरोप और बाल्कन में जर्मन सैनिकों पर बमबारी करने के लिए उपयुक्त हवाई ठिकाने भी उपलब्ध हुए। **ऑपरेशन ओवरलॉर्ड (1944):** यह फ्रांस को नाजी जर्मनी से मुक्त कराने के लिए फ्रांस पर किया गया हमला था जो कि तथाकथित 'डी-डे' (कारवाई शुरू करने के लिए निर्धारित किया गया दिन) वाले दिन ही आरंभ हुआ था। इस हमले के विभिन्न कारण थे। 1941 से ही रूस दूसरा मोर्चा खोलने की मांग कर रहा था। जर्मन यू-बोट्स अब अनुपयोगी हो चुकी थीं और उनके दिन लद गए थे। इसके अतिरिक्त मित्र देशों की हवाई श्रेष्ठता स्थापित हो चुकी थी और इटली को मित्र देशों के खेमे में सम्मिलित किया जा चुका था। ऐसे में, मित्र देशों की सेनाएँ फ्रांस, बेल्जियम और हॉलैंड को मुक्त कराने पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकती थीं।
- **जर्मनी पर आक्रमण (1944-45):** अमेरिका और ब्रिटेन के बीच इस पर असहमति थी। जहां ब्रिटेन रूस से पहले बर्लिन पहुंचना चाहता था, वहीं अमेरिका 1944 में जर्मनी पर आक्रमण के अपने विफल प्रयासों के कारण सावधानी बरतने की सलाह दे रहा था। **बल्ज की लड़ाई** (Battle of Bulge) 1944 में लड़ी गई थी। इस युद्ध को यह नाम दिए जाने के पीछे तथ्य यह था कि जर्मन सेना अमेरिकी रक्षा पंक्ति को पार करते हुए 60 मील आगे बढ़ गई और दोनों सेनाओं के मध्य की रेखा पर बने विशाल उभार (बल्ज) के सामने पहुंच गई थी। अमेरिकी और ब्रिटिश सेनाओं ने उन्हें वापस धकेल दिया था। परिणाम यह हुआ कि हिटलर ने इस युद्ध में अपने सभी संसाधन उपयोग कर डाले थे, जिनकी दोबारा भरपाई नहीं हो सकी। जर्मनी का पतन अब निश्चित हो चुका था। 1945 में रूस ने जर्मनी पर कब्जा कर लिया और हिटलर ने आत्महत्या कर ली।
- **जापान की पराजय (1945):** जापान में परमाणु बम का प्रयोग किया गया था। इसका कारण यह था कि अमेरिका जल्दी से जल्दी युद्ध समाप्त करना चाहता था ताकि प्रशांत क्षेत्र में रूस और अधिक क्षेत्रीय लाभ न ले सके। USSR ने जापान पर किये जाने वाले आक्रमण में मित्र राष्ट्रों का साथ देने का वचन दिया था, लेकिन अमेरिका नहीं चाहता था कि रूस को जापान का कोई भी क्षेत्र मिले। एक विचार यह भी है कि अमेरिका नए बम की शक्ति का प्रदर्शन करके USSR को डराना और स्वयं को एक ताकतवर सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

7. द्वितीय विश्वयुद्ध में धुरी राष्ट्रों की पराजय क्यों हुई?

इसे निम्न बिंदुओं से समझाया जा सकता है:

- **कच्चे माल की कमी:** इटली और जापान आयात पर निर्भर थे। यहां तक कि जर्मनी में भी रबड़, कपास और तेल की कमी थी।
- धुरी राष्ट्रों की सफलता उनकी त्वरित जीत पर निर्भर करती थी, जो उन्हें कभी नहीं मिल पाई। इस प्रयोजन के लिए तैयार की गई तड़ित युद्ध या ब्लिट्जक्रिग की रणनीति (Blitzkrieg strategy) आरंभ में सफल रही थी, लेकिन बाद में ब्रिटिश हवाई ताकत के कारण यह विफल हो गई थी।
- मित्र देशों ने जल्दी ही समुद्र में हवाई शक्ति और विमानवाहक पोत के महत्व को समझ लिया और उनके उत्पादन व युद्ध के मैदान में उनके उपयोग पर ध्यान केंद्रित कर लिया।
- अमेरिका, USSR और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में सम्मिलित देशों के पास संसाधनों का अपार भंडार था। USSR ने अपनी फैक्ट्रियों को युद्ध से परे यूराल पर्वत श्रृंखला के पूर्व में स्थानांतरित कर दिया, जिससे निरंतर उत्पादन सुनिश्चित हो गया। साथ ही धुरी राष्ट्र हथियारों के उत्पादन में अमेरिका से कोई साम्यता नहीं रखते थे।
- धुरी राष्ट्रों ने एक ही समय में कई मोर्चे खोल दिए थे।
- मुसोलिनी एक अक्षम जनरल साबित हो चुका था क्योंकि वह जीत प्रदान करने में असमर्थ रहा था। हिटलर को दो बार उसके बचाव में आना पड़ा था - एक बार उत्तर अफ्रीका में और फिर इटली में।
- साथ ही, कुछ सामरिक गलतियाँ भी हुईं। जापान विमान वाहक पोतों के महत्व को समझने में विफल रहा और युद्धपोतों का उत्पादन ही करता रहा। इसी प्रकार, हिटलर ने रूस में पड़ने वाली भीषण सर्दी को ध्यान में रखकर कोई योजना नहीं बनाई थी और न ही उपयुक्त समय पर जर्मन सेना स्टालिनग्राद से पीछे हटी।

8. द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव

- **विनाश:** इस युद्ध में 4 करोड़ से अधिक लोग मारे गए, जिनमें से आधे रूसी थे। भारी संख्या में लोग विस्थापित हो गए थे। जर्मनी के अधिकांश औद्योगिक क्षेत्र और शहर तबाह हो गए थे। इसी प्रकार फ्रांस और पश्चिमी रूस के शहर भी हवाई हमलों से तबाह हो गए थे। सर्वनाश या विध्वंस युद्ध का एक अन्य परिणाम था। यातना शिविरों (concentration camps) में हिटलर ने सुनियोजित तरीके से छह लाख यहूदियों का वध करवाया। हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए गए, जिसमें असंख्य जापानी विकलांग और अक्षम हो गए। उनकी कई पीढ़ियों के स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव रहा।
- **शांति समझौता:** कई अलग-अलग संधियों पर हस्ताक्षर किए गए थे। अल्बानिया और इथियोपिया समेत अपने सभी अफ्रीकी उपनिवेशों को इटली हार चुका था। USSR ने पूर्व चेकोस्लोवाकिया और फिनलैंड के कुछ हिस्से ले लिए और 1939 में कब्जा कर लिए गए एस्टोनिया, लाटीविया और लिथुआनिया के बाल्टिक राज्यों को मुक्त नहीं किया। त्रिएस्ते (Trieste) संयुक्त राष्ट्र प्रशासन के अंतर्गत आ गया था। जापान (1951) ने पिछले 90 वर्षों के दौरान अधिग्रहीत सभी प्रदेशों पर से अपना अधिकार हटा लिया और पूरी तरह से चीन से वापस चला गया। USSR ने जर्मनी और ऑस्ट्रिया पर कोई समझौता करने से इनकार कर दिया था, सिवाय इसके कि वे मित्र देशों की सेना के कब्जे में रहेंगे, जबकि पूर्वी प्रशा को पोलैंड और रूस के बीच विभाजित किया जाएगा।
- **प्रवसन/स्थानांतरण:** जर्मनी के बाहर मित्र देशों के कब्जे वाले क्षेत्रों में रह रहे जर्मनवासियों को जर्मनी स्थानांतरित किया गया। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया गया था कि भविष्य में जर्मन सरकार इन क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य न जमाने पाए।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **नाभिकीयकरणः** द्वितीय विश्व युद्ध ने नाभिकीय हथियारों के उत्पादन को आरंभ किया।
- **शक्ति संतुलनः** द्वितीय विश्वयुद्ध के साथ विश्व पर यूरोप का वर्चस्व समाप्त हो गया और शक्ति संतुलन USSR और अमेरिका के पक्ष में स्थानांतरित हो गया। युद्ध में हुए भारी खर्चे के कारण इटली, जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस दिवालिएपन की कगार पर आ गए थे। ब्रिटेन पर अमेरिका का भारी ऋण हो गया था। ब्रिटेन को यह ऋण उधार अधिनियम (लेंड-लीज ऐक्ट- 1941) के अंतर्गत अमेरिका द्वारा दी जाने वाली सहायताराशि के रूप में प्राप्त हुआ था। युद्ध के बाद ब्रिटेन ऐसा ही दूसरा अमेरिकी ऋण लेने के लिए बाध्य हो गया था। इसके अतिरिक्त यूरोपीय निर्यात में भारी गिरावट आ गई थी। अमेरिका आर्थिक रूप से मजबूत था जबकि USSR के पास विशाल सेना थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का विश्व एक द्विध्रुवीय विश्व बन गया, जो दो महाशक्तियों के बीच के शीतयुद्ध (प्रतिद्वंद्विता) में घिरी हुई थी।
- **तीसरी दुनिया की संकल्पना का प्रादुर्भावः** तीसरी दुनिया में गुटनिरपेक्ष देश सम्मिलित थे। अर्थात इसमें वे देश सम्मिलित थे जिनका दोनों वैश्विक शक्तियों में से किसी के साथ कोई गठबंधन नही था। युद्ध के बाद उभरे स्वतंत्र राज्यों के सभी नेता 1973 में अल्जीयर्स में एकत्र हुए और उन्होंने स्वयं को तीसरी दुनिया के रूप में घोषित किया। तीसरी दुनिया के देशों को साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों पर संदेह था।
- **उपनिवेशवाद का अंतः** जापान से परास्त होने के कारण यूरोपीय ताकतों की प्रतिष्ठा कम हो गई थी। अपनी प्रतिष्ठा के बल पर ही वे औपनिवेशिक शासन कर रहे थे। कहा जाता था कि ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य का आधार सेना नहीं थी बल्कि यह उनकी प्रतिष्ठा पर टिका हुआ था। यह युद्ध उत्पीड़न के विरुद्ध और फासीवादी शासन से स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया था। इसके अतिरिक्त उपनिवेशों के भी बहुत सारे सैनिकों ने यूरोप में हुए युद्धों में भाग लिया था, जहां इन्हें पश्चिमी देशों के विचारों और समृद्धि के संपर्क में आने का अवसर मिला। यहां की परिस्थितियां गरीबी भरी उनकी अपनी परिस्थितियों के ठीक विपरीत थीं। इन सबके कारण उपनिवेशों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ। इसके अतिरिक्त यूरोपीय शक्तियाँ सैन्य रूप से और आर्थिक रूप से कमजोर थीं। USSR अब एक विश्व शक्ति बन चुका था। साम्यवादी विचारधारा उपनिवेशवाद के विरुद्ध थी। कई पूर्व यूरोपीय उपनिवेश युद्ध के दौरान जापानी शासन के अधीन आ गए थे। साम्यवादी नेताओं के नेतृत्व में राष्ट्रवादी संघर्षों के उदय के वे साक्षी बने। युद्ध के बाद स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला भारत पहला उपनिवेश था। इस प्रकार उपनिवेशवाद का अंत पहले एशिया में आरंभ हुआ, जिसके बाद अफ्रीका और मध्यपूर्व में भी स्वतंत्रता की मांग उठी। 1960 के दशक में उपनिवेशवाद के अंत की प्रक्रिया कई नए राष्ट्रों के उदय का कारण बनी।
- 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की स्थापना विश्व शांति बनाए रखने, व्यक्तिगत अधिकारों के संरक्षण और सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए की गई थी।

9. विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रणालियां

- पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद जैसे शब्दों का प्रयोग सामान्य भाषा में प्रायः किया जाता है, लेकिन इन शब्दों के मूलभूत अर्थ और इनके पीछे के दर्शन को समझना महत्वपूर्ण है। ये शब्द सामूहिक रूप से पूरे विश्व में उपयोग हो रहे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों को दर्शाते हैं। अधिक स्पष्टता के लिए इन राजनीतिक दर्शनों के सामान्य सिद्धांतों को नीचे समझाया गया है।

9.1. पूंजीवाद

- राज्य और समाज के संचालन की पूँजीवादी व्यवस्था देश की संपत्ति के निजी स्वामित्व और अहस्तक्षेप की नीति (लेसेज़ फेयर) पर आधारित अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि बाजार की शक्तियां आर्थिक नीतियों का निर्धारण करती हैं और कोई निर्देशित अर्थव्यवस्था नहीं होती। इस प्रकार राज्य उद्योगों को यह नहीं बताता कि क्या उत्पादित करना है, कब करना है या किस प्रकार उत्पादन करना है। साथ ही, पूँजीवादी व्यवस्था

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

के अंतर्गत, श्रमजीवी वर्ग को कोई विशेष सुरक्षा प्राप्त नहीं होती। श्रमिक भी पूंजी और भूमि की तरह उत्पादन का मात्र एक कारक माना जाता है (तैयार माल के उत्पादन के लिए आवश्यक सभी निवेश उत्पादन के कारक होते हैं)। निजी उद्यम (उद्यमशीलता), निजी धन की सुरक्षा और लाभ के उद्देश्य से उत्पादन करना ही पूँजीवादी व्यवस्था की प्रेरक शक्तियाँ हैं।

9.2. साम्यवाद

- साम्यवादी आर्थिक प्रणाली की विशेषता समुदाय द्वारा संपत्ति का सामूहिक स्वामित्व है, जिसका अंतिम लक्ष्य पूर्ण सामाजिक समानता है। राज्य और समाज का संचालन करने वाली साम्यवादी प्रणाली कार्ल मार्क्स के विचारों पर आधारित है। इसमें तीन चीजें महत्वपूर्ण हैं- संपत्ति का स्वामित्व, आर्थिक योजना और श्रमिक वर्ग की सुरक्षा। देश की संपत्ति का सामूहिक रूप से स्वामित्व होना चाहिए। अर्थव्यवस्था केंद्रीय रूप से नियोजित की जानी चाहिए (निर्देशित अर्थव्यवस्था) और राज्य को श्रमिक वर्ग के हितों की सुरक्षा के लिए सकारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए। समानता, सामूहिक स्वामित्व और समाज कल्याण के लिए उत्पादन साम्यवादी प्रणाली की प्रेरक शक्तियाँ हैं। साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों ही अलग-अलग देशों द्वारा आवश्यकतानुसार अलग-अलग तरीके से अपनाए गए हैं।

9.3. समाजवाद

- समाजवाद के उदय और विकास के बारे में चर्चा करने से पहले इस शब्द के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझना महत्वपूर्ण है। साधारणतः, समाजवाद सार्वजनिक संपत्ति पर राज्य के स्वामित्व को संदर्भित करता है या उत्पादन के साधनों पर राज्य के स्वामित्व को दर्शाता है। वैकल्पिक रूप से, समाजवाद सामाजिक संगठन की ऐसी प्रणाली है, जिसमें वस्तुओं के उत्पादन और वितरण के साधन निजी या सामूहिक स्वामित्व वाले हो सकते हैं या फिर एक केंद्रीकृत सरकार द्वारा निर्देशित हो सकता है जो प्रायः अर्थव्यवस्था का नियोजन और नियंत्रण करती हो। हालांकि ऐसा नहीं है कि समाजवाद केवल साम्यवादी या फासीवादी सरकारों के ही समकालीन होता है। कई देशों में समाजवाद के कार्यान्वयन के लिए अधिकतर यह आवश्यक होता है कि इस दर्शन को कार्यान्वित करने के लिए एक मजबूत केंद्रीय सरकार विद्यमान हो।
- समाजवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:
    - **एक समतावादी समाजः** इसका अर्थ है कि जाति, वर्ग या रंग के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। 'समानता के बिना कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं हो सकती।'
    - **बुनियादी आवश्यकताओं की संतुष्टिः** 'लाभ का उद्देश्य' के बदले 'सेवा का उद्देश्य' होना चाहिए। संसाधनों के वितरण में राज्य का ध्यान इस पर नहीं होना चाहिए कि कहां इसे सबसे अच्छे मूल्य मिलेंगे, बल्कि इस पर होना चाहिए कि कहां उसकी आवश्यकता सबसे अधिक है।
    - **सार्वजनिक स्वामित्वः** उत्पादन के सभी साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व। समाजवाद के अनुसार, सामूहिक स्वामित्व वाला उद्योग अधिक दक्षतापूर्ण और नैतिक दृष्टि से अधिक संतोषजनक होता है।
    - **सेवा का आदर्शः** समाजवाद सामान्य कल्याण या सार्वजनिक हित की वकालत करता है। यह पारंपरिक उदारवादियों के व्यक्तिवाद और कठोर भौतिकवाद का विरोध करता है।
- एक विशुद्ध समाजवादी राज्य वह होगा जिसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व और संचालन राज्य करेगा। हालांकि, लगभग सभी आधुनिक पूँजीवाद देश समाजवाद और पूंजीवाद का सम्मिश्रण हैं। कुछ अर्थव्यवस्थाएँ बहुत केंद्रीकृत हैं, जबकि कुछ पूरी तरह विकेंद्रीकृत हैं। वे सभी समानता के पक्ष में ही खड़े हैं लेकिन उनके दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

10. समाजवाद के विभिन्न प्रकार

- समाजवाद एक सीधी-सरल अवधारणा नहीं है और अस्तित्व में आने के बाद से इसके कई रूप उभर चुके हैं। साम्यवाद समाजवाद से घनिष्ठता से संबद्ध एक अवधारणा है, जिसकी हम पहले ही संक्षेप में चर्चा कर चुके हैं। रूस विश्व का पहला साम्यवादी देश था।
- शीघ्र ही साम्यवाद (मार्क्सवाद) यूरोप के बाहर एशिया, दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में भी फैल गया, जहां प्रत्येक देश ने अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं, स्थितियों और इतिहास के अनुसार मार्क्सवाद की अपनी स्वयं की शैली को अपनाया। उदाहरण के लिए, चीन ने 1958 तक रूसी प्रतिमान अपनाए रखा, लेकिन उसके बाद माओ ने पहले के प्रतिमानों की दुर्बलताओं से मुक्ति पाने और साम्यवाद / समाजवाद का ऐसा प्रतिमान लाने के लिए जो चीनी स्थितियों के लिए अधिक प्रासंगिक और विशिष्ट चीनी समस्याओं को हल करने में अधिक प्रभावी होता **ग्रेट लीप फॉरवर्ड** (1958) का शुभारंभ किया।
- इस प्रकार, यह समझा जाना चाहिए कि साम्यवाद का कोई एक आदर्श प्रतिमान नहीं है और किन विशेषताओं को मूलरूप में आयात करना है, किन विशेषताओं को पूरी तरह से अपवर्जित करना है और किन विशेषताओं को संशोधित करके अपनाना है - इन प्रश्नों का उत्तर विभिन्न देशों के लिए और विभिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न होता है। साम्यवादी चीन ने डेंग जियाओपिंग (1978-1992 तक नेता) के अधीन बाजार समाजवाद को अपनाया। बाजार समाजवाद अधिक उदारवादी और पूंजीवाद का अपेक्षाकृत कम विरोधी था और इसे दक्षिणपंथी साम्यवाद कहा गया। इस प्रकार डेंग के अधीन, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना समय की आवश्यकता के अनुसार बाजार अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ। बाजार समाजवाद, समाजवाद का एक ऐसा स्वरुप है जिसमें समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था होती है और इसे खुली आर्थिक नीतियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था निवेश और व्यापार अवरोधों में कमी के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था से अधिक एकीकृत हो जाती है। बाजार समाजवाद के अंतर्गत आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण (क्योंकि यह साम्यवादी दल के लिए अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में निर्णय लेने से पीछे हटना आवश्यक बनाता है), भूमि का अधिक निजी स्वामित्व और पूंजीवाद की अन्य विशेषताएँ शामिल होती हैं। लेकिन, यह समता की उस दृष्टि को ओझल नहीं होने देता है, जो साम्यवादी राज्य का प्राथमिक लक्ष्य है।

समाजवाद और साम्यवाद की अवधारणा स्पष्ट रूप से समझने के लिए दोनों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है।

- **मार्क्सवाद बनाम समाजवाद:** मार्क्सवाद को वैज्ञानिक समाजवाद या मार्क्सवादी समाजवाद के नाम से भी जाना जाता है। यह कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848) में यथा प्रतिपादित मार्क्स और एंगल्स का दर्शन है। इस संबंध की रूपरेखा को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:
  - मार्क्सवाद समाज में समाजवाद लाने के संबंध में चर्चा करता है।
  - समाजवाद एक व्यापक शब्द है और समाजवाद लाने के लिए अन्य विचारकों द्वारा सुझाए गए अन्य तरीकों की भांति ही मार्क्सवाद भी इसका एक अवयव मात्र है।
  - एक अवधारणा के रूप में समाजवाद मार्क्सवाद से पुराना है। मार्क्स से पहले समाजवाद का अपना संस्करण प्रस्तुत करते हुए रॉबर्ट ओवन जैसे युटोपियन समाजवादी और अन्य समाजवादी काम कर चुके थे।
  - मार्क्सवाद मार्क्स द्वारा यथा वांछित समाजवाद है।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- मार्क्सवाद औद्योगिकीकृत सेटिंग, अर्थात् औद्योगिकीकृत अर्थव्यवस्था में समाजवाद है।
- मार्क्सवाद सर्वहारा (अर्थात श्रमिक वर्ग) की तानाशाही के संबंध में चर्चा करता है। मार्क्सवाद संकीर्ण है क्योंकि यह केवल श्रमिकों पर ही ध्यान केंद्रित करता है। लेकिन समाजवाद का दृष्टि-क्षेत्र अधिक व्यापक है क्योंकि यह स्वयं को केवल श्रमिकों के साथ नहीं बांधता। यह श्रमिकों सहित किसानों और समस्त आबादी का भी समावेश करता है। वे अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्रक में कार्यरत हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, समाजवाद गैर-औद्योगीकृत देशों अर्थात रूस, चीन, भारत, वियतनाम, क्यूबा और अंगोला जैसे अफ्रीकी देशों द्वारा अपनाया गया है।
- मार्क्सवाद राज्य विरोधी है और राज्यहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जबकि समाजवाद के लिए ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं है। समाजवाद अपेक्षाकृत अधिक सामान्य अवधारणा है और यह राज्य के परित्याग की मांग नहीं करता है। समाजवाद राज्य विरोधी नहीं है बल्कि केवल सभी की समानता पर ध्यान केंद्रित करता है। वहीं भारतीय समाजवाद ने तो समाज में अधिक समानता लाने के लिए राज्य नामक संस्था का उपयोग किया है।
- **विधि (Method):** मार्क्स का तर्क था कि मार्क्सवाद लाने के लिए हिंसक क्रांति एकमात्र उपाय है लेकिन समाजवाद के लिए ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं है। उदाहरण के लिए, अलेन्डे के अधीन चिली जैसे देश समाजवाद के लिए शांतिपूर्ण क्रांति के साक्षी बने और वो भी लोकतांत्रिक राजनीति के अंतर्गत।
- **अंतिम उद्देश्य:** समाजवाद के उद्देश्य प्रकृति में व्यापक हैं। जहाँ समाजवाद का एक संस्करण पूँजीवादी व्यवस्था के वर्चस्व में कमी मात्र का लक्ष्य रख सकता है वहीं मार्क्सवाद पूंजीवाद का पूर्ण विनाश चाहता है।
- समानता इस तथ्य में निहित है कि मार्क्सवाद का उद्देश्य ऐसा समाजवाद है जिसका निहितार्थ समानता आधारित गैर-शोषणात्मक समाज है। दोनों अवधारणाएँ मात्र दर्शन हैं और वास्तव में समाज को संगठित करने के तरीके के संबंध में कार्यात्मक विवरणों की कमी से ग्रस्त हैं। इस प्रकार दोनों अवधारणाओं में उनके परिचालन के स्तर पर अभी भी सुधार करने की संभावनाएं उपस्थित हैं।

- **फेबियन समाजवाद** समाजवाद का एक अन्य रूप है और इसके संबंध में नीचे संक्षेप में चर्चा की गई है: फेबियन समाजवाद शब्द की उत्पत्ति ब्रिटेन में फेबियन सोसाइटी (1883) के गठन में देखी जा सकती है। फेबियन सोसाइटी ने ब्रिटेन में लेबर पार्टी के आधारभूत सिद्धांतों की स्थापना की थी। फेबियनवाद ने समाजवाद लाने के लिए क्रांति की बजाय विकास को अनिवार्य तत्व बनाया। यहां दो बातें महत्वपूर्ण हैं: एक, समाजवाद लाना और दूसरा, विकास। फेबियन समाजवादी लोकतंत्र को उखाड़ फेंकने और एक-दलीय साम्यवादी राज्य की स्थापना की वकालत नहीं करते हैं। उनका मानना था कि प्रतिनिधि मूलक लोकतंत्र सबसे अच्छी राजनीतिक व्यवस्था है। इसके साथ ही, वे क्रांति लाने के लिए हिंसा का उपयोग अस्वीकार करते थे और समाजवादी व्यवस्था की दिशा में समाज को अग्रसर करने के लिए वार्ता, याचिकाओं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त क्रमिक सुधारों में विश्वास करते थे। समानता का उनका लक्ष्य साम्यवादी राज्यों के समर्थकों के समान था लेकिन उनके साधन भिन्न थे। सामान्यत: फेबियन समाजवादी के रूप में संदर्भित किए जाने वाले प्रमुख नामों में एनी बेसेंट और जवाहरलाल नेहरू के नाम सम्मिलित हैं।
- **लोकतांत्रिक समाजवादी और सामाजिक लोकतंत्र** वस्तुत: समाजवाद से जुड़े दो अत्यंत महत्वपूर्ण पद हैं। इन दोनों शब्दों की उत्पत्ति द्वितीय अंतर्राष्ट्र (2nd International) के समय में सुधारवादियों और क्रांतिकारी समाजवादियों के बीच विभाजन में खोजी जा सकती है। द्वितीय अंतर्राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय को विश्व भर के समाजवादी और श्रमिक दलों का संगठन समझा जा सकता है।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

सुधारवादियों को सामाजिक लोकतंत्रवादी भी कहा जाता है। लोकतांत्रिक समाजवाद में बहस का मुख्य मुद्दा लोकतांत्रिक बनाम सर्व सत्तावादी समाजवाद है, जबकि सामाजिक लोकतंत्र में मुख्य बल समाजवादी व्यवस्था प्राप्त करने के लिए क्रांतिकारी हिंसक साधनों के विरूद्ध सुधारवादी अहिंसक साधनों पर दिया गया है।

- **लोकतांत्रिक समाजवाद:** लोकतांत्रिक समाजवाद के समर्थक ऐसी समाजवादी व्यवस्था के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं जो वास्तव में लोकतांत्रिक हो। उनके विचार में, सच्चे समाजवादी समाज में अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के संबंध में निर्णय लेने की शक्ति जनता के पास होगी। इसलिए उनका बल "सोशलिज्म फ्रॉम बिलो" (नीचे से समाजवाद) पर है, जिस पर आगे और प्रकाश डाला गया है:
  - यह अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में संपूर्ण आबादी और विशेषकर श्रमिकों की सक्रिय भागीदारी का पक्षधर है। यह लोकतांत्रिक समाजवाद या नीचे से समाजवाद की मूलभूत विशेषता है। इसके साधन प्रकृति में द्वितीयक हैं और सुधारवादी या क्रांतिकारी साधनों के माध्यम से ऐसी समाजवादी व्यवस्था प्राप्त की जा सकती है। लोकतांत्रिक समाजवादियों के भीतर कई उप-समूह हैं जो साधनों के एक समुच्चय की तुलना में दूसरे का समर्थन करते हैं, हालांकि क्रांतिकारी साधनों के पक्षधर सबसे अधिक हैं, फिर भी उनका वास्तविक बल साधनों की बजाय अंतिम उद्देश्य पर है।
  - नीचे से समाजवाद वस्तुतः स्टालिनवाद और सामाजिक लोकतंत्र के विपरीत समाजवाद का एक गैर-तानाशाही दृष्टिकोण है। जबकि स्टालिनवाद और सामाजिक लोकतंत्र दोनों ही तानाशाही राज्य समाजवाद के रूप हैं। तानाशाही से यहां तात्पर्य सत्ता के विकेंद्रीकरण के विपरीत सत्ता के केंद्रीकरण से है। अन्य बातों के साथ-साथ, स्टालिनवाद का निहितार्थ सर्वोच्च नेता के हाथों में सत्ता का संकेंद्रण है जो राज्य पर शासन करता है। अर्थव्यवस्था केंद्रीय रूप से नियोजित होती है जहां अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में ऊपर से नीचे निर्णय लिया जाता है। सामाजिक लोकतंत्र में भी, आर्थिक निर्णयन राज्य और पूंजीपतियों में संकेंद्रित होता है। यहां भी संपत्ति के वास्तविक उत्पादकों, अर्थात श्रमिकों की निर्णयन में भागीदारी नहीं होती है। इस प्रकार लोकतांत्रिक समाजवादियों के अनुसार, सामाजिक लोकतंत्र और स्टालिनवाद दोनों ही जनता के हाथों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण की भावना के विरूद्ध हैं।
  - लोकतांत्रिक समाजवाद राज्य समाजवाद के विपरीत है। राज्य समाजवाद में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण और निर्देशित अर्थव्यवस्था (केंद्रीय रूप से नियोजित अर्थव्यवस्था, जहां राज्य उद्योगों को आदेश देता है कि क्या, कब, कितना और कैसे उत्पादन करना है) सम्मिलित होती है। पूंजीवाद में आर्थिक उत्पादन के प्रश्नों पर निर्णय लेने की शक्ति पूंजीपतियों के हाथों में होती है। लोकतांत्रिक समाजवादियों का तर्क है कि राष्ट्रीयकरण के माध्यम से पूंजीपतियों को राज्य द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है और श्रमिकों को पुनः बाहर छोड़ दिया जाता है।
- **सामाजिक लोकतंत्र:** यह ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जिसमें सामाजिक लोकतंत्रवादियों का मुख्य बल अपने अंतिम उद्देश्य अर्थात् समाजवादी समाज को प्राप्त करने के साधन पर होता है। वे हिंसक साधनों के विरोधी होते हैं और मानते हैं कि समतापूर्ण समाजवादी व्यवस्था अहिंसात्मक तरीके से क्रमिक सुधारों के माध्यम से प्राप्त की जानी चाहिए। सामाजिक लोकतंत्र की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं को नीचे सूचीबद्ध किया गया है:
  - इसके लक्ष्य लोकतांत्रिक सामाजवाद के लक्ष्यों की भांति ही होते हैं अर्थात, समाजवादी समाज की प्राप्ति जहां धन का कम संकेद्रण और अधिक समानता हो।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- इनके साधन सुधारवादी हैं - अर्थात् हिंसक साधनों के बजाय क्रमिक सुधारात्मक विधियाँ। वे पूँजीवाद अर्थव्यवस्था से समाजवादी अर्थव्यवस्था की दिशा में शांतिपूर्ण और विकासवादी परिवर्तन का समर्थन करते हैं।
- सामाजिक लोकतंत्र को ऐसी राजनीतिक विचारधारा के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जिसका लक्ष्य समाजवादी नीतियों वाला कल्याणकारी राज्य हो और जहां श्रमिकों के पास पूँजीवाद अर्थव्यवस्था और लोकतांत्रिक ढांचे के अंतर्गत सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति हो।
- राजव्यवस्था का वरीय रूप कानून के शासन के साथ लोकतंत्र होता है। यहां पर उल्लिखित लोकतंत्र राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही पक्षों में है।
- ये मिश्रित अर्थव्यवस्था के पक्षधर होते हैं लेकिन राज्य द्वारा अतिहस्तक्षेप के विरूद्ध हैं। इतना ही नहीं ये 100 प्रतिशत मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और 100 प्रतिशत नियोजित अर्थव्यवस्था के भी विरूद्ध होते हैं।

दो राजनीतिक विचारधाराएं	**लोकतांत्रिक समाजवाद**	**सामाजिक लोकतंत्र**
वोट बैंक	श्रमिक और गरीब किसान	मध्यम वर्ग
अतिवाद की मात्रा	काफी अधिक अतिवादी	कम अतिवादी
वरीय अर्थव्यवस्था की प्रणाली	पूर्णतः समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था। पूर्णतः समाजवादी अर्थव्यवस्था नहीं बल्कि सामूहिक सौदेबाजी और कल्याणकारी राज्य जैसी समाजवादी विशेषताओं वाली पूँजीवाद अर्थव्यवस्था।
साधन	दो समूह- 1. सुधारवादी लोकतांत्रिक समाजवादी - शांतिपूर्ण क्रमिक सुधारों को वरीयता देते हैं। 2. क्रांतिकारी लोकतांत्रिक समाजवादी – तत्काल हिंसक क्रांति को वरीयता देते हैं। वे "ऊपर से समाजवाद" का समर्थन करने वाले सुधारवादी लोकतांत्रिक समाजवादियों की आलोचना करते हैं क्योंकि लोकतांत्रिक समाजवाद पूंजीवाद का तात्कालिक अंत नहीं चाहता है।	क्रमिक; सुधारवादी; शांतिपूर्ण; क्रांति के बजाय विकास
राज्य की भूमिका	राज्य की न्यूनतम भूमिका। यहां तक कि कल्याणकारी राज्य भी अस्थायी उपाय ही होना चाहिए।	राज्य की कुछ भूमिका। 100 प्रतिशत मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के साथ-साथ 100 प्रतिशत राज्य नियोजित अर्थव्यवस्था के विरूद्ध।
राजव्यवस्था	सत्ता का विकेंद्रीकरण मुख्य मुद्दा है, चाहे यह लोकतंत्र के अधीन हो या साम्यवादी राज्य के।	कानून के शासन के साथ लोकतंत्र।

VISION IAS

अभी तक हमने विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक प्रणालियों और समाजवाद के विभिन्न रूपों के संबंध में जाना। अब, हम विश्व इतिहास में विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से समाजवाद का विकास समझने का प्रयास करेंगे।

11. एक राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था के रूप में समाजवाद का विकास

- समाजवाद के उदय की जड़ सामंतवाद और पूंजीवाद की नकारात्मकताओं में खोजी जा सकती है। इन दोनों अवधारणाओं द्वारा निर्देशित समाज असमानता और व्यापक विषमता से ग्रस्त थे। फ्रांसीसी क्रांति से पहले ही विचारकों ने एक ऐसे समाज की कल्पना करना आरंभ कर दिया था, जहां सामाजिक संबंधों और अमीर-गरीब विभाजन के रूप में कम असमानता होती। समाजवादी विचारकों ने सामंतवाद की प्रणाली पर आक्रमण किया, जिसमें समाज कठोर श्रेणीबद्ध संरचना में विभाजित था जहां सामंत और पादरी वर्ग का किसानों पर प्रभुत्व था। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति मुख्यतः समानता पर केंद्रित थी और फ्रांसीसी क्रांति की सफलता ने भ्रातृत्व और समानता के विचारों को बहुत बढ़ावा दिया। इसके साथ ही औद्योगिक क्रांति (1750 से आगे) के पश्चात इंग्लैंड में भी श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। शीघ्र ही श्रमिकों ने स्वयं को संगठित करना आरंभ कर दिया और श्रमिकों के कल्याण के लिए आंदोलनों का शुभारंभ हुआ। इस प्रकार यूरोप में सामंतवाद और पूंजीवाद के विरूद्ध समाजवाद का उदय हुआ जिसमें मुख्य रूप से समानता पर बल दिया गया।
- फ्रांस में सामंती सरंचना पर आक्रमण किया गया जबकि इंग्लैंड में श्रमिकों के पूँजीवादी उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज उठाई गई। जैसे-जैसे 19वीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगीकरण हो रहा था, समाजवादी और पूँजीवाद विचारों के मध्य संघर्ष बढ़ता जा रहा था। 1750 के बाद इंग्लैंड में औद्योगीकरण आरंभ होने के कारण इसकी स्पष्टता इंग्लैंड में अधिक थी। 19वीं सदी में समाजवाद ने सुदृढ़ आकार लेना आरंभ किया और यहीं समाजवादी विचारकों द्वारा पूँजीवाद व्यवस्था के विकल्प के रूप में समाजवाद को आगे बढ़ाया गया। इसी सदी के दौरान कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने पूंजीवाद की व्यापक आलोचना की। इस प्रकार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि समाज में असमानता के कारण और मुख्य रूप से औद्योगिक क्रांति के उपरांत यूरोप (18वीं और 19वीं शताब्दी) में औद्योगिक पूंजीवाद की नकारात्मकताओं के कारण समाजवाद का उदय हुआ। हालांकि समाजवादी विचारों ने 18वीं शताब्दी में सामंती समाज वाले फ्रांस में भी आकार लेना आरंभ कर दिया था।

आइए अब हम विशेष रूप से पूंजीपतियों के विरूद्ध श्रमिकों के उठ खड़े होने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसने यूरोप में समाजवाद के उदय की गति तेज कर दी।

श्रमिक आन्दोलनों का शुभारंभ:

- औद्योगिक क्रांति के बाद कारखानों वाले कस्बों में श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई। कारखाना स्वामियों और प्रबंधन द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जाता था। उनकी काम की दशाएँ असुरक्षित होती थीं, काम के घंटे सोलह घंटे जितने लंबे होते थे, बाल श्रम का व्यापक प्रचलन था, सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों का अभाव था और उनकी मजदूरी भी बहुत कम थी। इसके परिणाम-स्वरुप व्यापार संघ (श्रमिकों के संगठन) उभरने लगे थे, लेकिन लंबे समय तक ये अवैध थे क्योंकि पूंजीवादियों का राज्य की कानून बनाने वाली संस्थाओं पर प्रभाव था। फ्रांसीसी क्रांति (1789) में, श्रमिक एक प्रमुख तत्व थे और उन्होंने सामंतवाद को उखाड़ फेंकने के लिए स्वयं को गुप्त समाजों में संगठित किया था। इंग्लैंड और अन्य देशों में श्रमिक वर्ग के दबाव के कारण सरकारों को पूँजीवाद

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

की सबसे निकृष्ट विशेषताओं के विरूद्ध कानून पारित करने के लिए विवश होना पड़ा। उदाहरण के लिए, कई देशों में काम की असुरक्षित दशाओं के विरूद्ध कानून पारित किए गए और काम के अधिकतम घंटों पर सीमाएँ आरोपित की गईं।

यूरोप में समाजवाद के उदय से जुड़े कुछ आंदोलन और प्रमुख समाजवादी विचारक:

- **ल्युडिट्स (1811-17):** यह लुड की अगुवाई में इंग्लैंड के श्रमिकों का समूह था। लुड यह मानता था कि मशीनें ही श्रमिकों के दुःख दैन्य का कारण हैं। उन्होंने कारखानों में मशीनें तोड़ने के लिए आंदोलन आरंभ किया। यह एक सीधा-सरल विचार था और शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया कि उनका आंदोलन व्यर्थ था।
- **चार्टिस्ट आंदोलन (1830 - 40):** श्रमिकों के लिए मताधिकार की मांग को लेकर इंग्लैंड में यह आंदोलन आरंभ हुआ। 1850 के दशक तक इस आंदोलन का अंत हो गया, लेकिन इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा और इसने अपने अधिकारों की मांग करने के लिए श्रमिकों को उत्साहित किया और उन्हें और अधिक जागरूक बनाया। संसद द्वारा पारित चार अधिनियमों के माध्यम से ब्रिटेन मताधिकार के प्रश्न पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा और 1929 तक सभी वयस्कों को मताधिकार प्राप्त हो गया।
- **यूरोप में 1848 के विद्रोह:** 1848 में अधिकांश यूरोप में विरोध-प्रदर्शन और विद्रोह हो रहे थे। कम्युनिस्ट लीग (आगे चर्चा की गई है) ने मार्क्स और एंजेल्स द्वारा लिखित कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848) प्रकाशित करते हुए श्रमिकों को प्रेरित किया। श्रमिकों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की और उनकी मांगों में न सिर्फ स्वेच्छाचारी शासन का, बल्कि पूंजीवाद का अंत भी सम्मिलित था। मध्यवर्ग ने श्रमिकों द्वारा राज्य के अधिग्रहण से डरकर अंतिम क्षणों में निरंकुश शासकों के साथ समझौता कर लिया और ये विद्रोह लोकतंत्र की स्थापना करने में विफल रहे।
- **प्रारंभिक समाजवादी:** सामान्यत: हम कार्ल मार्क्स के साथ समाजवादी आंदोलन का तादात्म्य स्थापित करते हैं लेकिन सेंट साइमन, चार्ल्स फ़ोरियर (Charles Fourier), रॉबर्ट ओवन, ऑगस्टे ब्लांकी (Auguste Blanqui), और लीग ऑफ जस्ट जैसे यूटोपियन समाजवादियों; बाबूफ जैसे प्रारंभिक विचारकों, क्रांतिकारियों और उनके संगठनों द्वारा समाजवादी विचारों के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया गया था। श्रमिकों, उनके नेताओं और कई विचारकों ने श्रमिक वर्ग की दशा में सुधार लाने का प्रयास किया। धीरे-धीरे, यह विश्वास जड़ पकड़ने लगा कि पूंजीवाद अपने आप में ही बुरा है। इसलिए एक नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की वकालत की गयी, जहां उत्पादन के साधन सामूहिक रूप से समाज के स्वामित्व में हों न कि मुट्ठीभर पूंजीपतियों के हाथ में।
- **फ्रांसीसी क्रांति और श्रमिक आंदोलन:** फ्रांसीसी क्रांति (1789) से पहले ही कई विचारक ऐसे समाज के संबंध में लिख रहे थे जिसमें समानता होती। लेकिन फ्रांसीसी क्रांति होने तक यह एक अव्यवहारिक स्वप्न प्रतीत होता था। फ्रांसीसी क्रांति ने समानता पर बहुत बल दिया और सामंतवाद को समाप्त करने में इसकी सफलता ने समानता के विचार को बढ़ावा दिया। हालांकि हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि फ्रांसीसी क्रांति पूंजीवाद के विरूद्ध नहीं थी बल्कि इसने मुक्त व्यापार और पूंजीवाद का पक्ष ही लिया था। फिर भी सामंतवाद के विरुद्ध रही फ्रांसीसी क्रांति में समानता का विचार केंद्रीय तत्व था। (अमेरिकी क्रांति के समय स्वतंत्रता की घोषणा ने संपत्ति के अधिकार का अलंघनीय अधिकार के रूप में वर्णन किया, जबकि फ्रांसीसी क्रांति के समय मनुष्य और नागरिक अधिकारों के घोषणापत्र ने तर्क प्रस्तुत किया कि व्यक्ति को संपत्ति का अधिकार है लेकिन सार्वजनिक कल्याण के पक्ष में इसका उल्लंघन किया जा सकता है)। लेकिन फ्रांसीसी क्रांति स्थिर गणराज्य प्रदान करने में विफल रही। यह केवल लुई 16वें का निरंकुश शासन समाप्त कर पाई और इसका परिणाम अधिक न्यायसंगत समाज के रूप में सामने नहीं आया। श्रमिकों को क्रांति का लाभ नहीं मिला। क्रांति का लाभ केवल किसानों को मिला क्योंकि उन्हें सामंतों और पादरी वर्ग से जब्त की गई भूमि मिली। फ्रांसीसी क्रांति के तुरंत बाद सत्ता बुर्जुआ वर्ग (मध्यम वर्ग) के हाथ में

VISION IAS
www.visionias.com

आ गई। संविधान में न्यूनतम आय मानदंडों के कारण श्रमिकों को मताधिकार नहीं मिला। इस असंतोष के परिणामस्वरूप जैकोबिन सत्ता में आए, लेकिन वे कानून का शासन प्रदान करने में विफल रहे और फ्रांस आतंक के शासन में चला गया। इस शासन में प्रत्येक असहमतिपूर्ण आवाज को दबाने के लिए गिलोटिन का उपयोग किया गया। इसके बाद, बुर्जुआ वर्ग पुनः सत्ता में आया। इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति के वास्तविक परिणामों और उसके विचारों में व्यापक अंतर था। इस असंतोष ने बाबूफ के षड्यंत्र (1796) को जन्म दिया।

- **बाबूफ का षडयंत्र और बाबूफ की घोषणा (Babeuf's conspiracy and Babeuf's Manifesto):** बाबूफ का षडयंत्र फ्रांसीसी सरकार को उखाड़ फेंकने और समाजवाद के सिद्धांतों के आधार पर समाज का निर्माण करने का एक प्रयास था। बाबूफ ने फ्रांसीसी क्रांति में भाग लिया था और "सोसाइटी ऑफ इक्वल्स" नामक गुप्त समाज का गठन किया था। सरकार द्वारा आंदोलन दबा देने के कारण बाबूफ असफल रहा और 1797 में उसे मार दिया गया। बाबूफ की घोषणा ने समाज में समानता के विचार पर बल दिया। इसमें तर्क दिया गया था कि अर्थव्यवस्था की सभी वस्तुओं का उपभोग करने के लिए हर कोई समान अधिकार के साथ पैदा होता है। सच्चे समाज में अमीर और गरीब के लिए कोई स्थान नहीं होता है। इसलिए अमीर-गरीब का विभाजन समाप्त करने के लिए एक और क्रांति आवश्यक है।'
- **यूटोपियन समाजवादी:** इसमें सेंट साइमन, चार्ल्स फ़ोरियर और रॉबर्ट ओवन जैसे विचारक सम्मिलित हैं। ये एक नया सामूहिक समाज चाहते थे। सेंट साइमन ने "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार और प्रत्येक को उसके काम के अनुसार" नारा दिया। इन्हें यूटोपियन समाजवादी के नाम से इसलिए जाना जाता है क्योंकि इस प्रकार का समाज स्थापित करने के लिए उन्होंने जो उपाय सुझाए थे वे अव्यवहारिक और प्रभावहीन थे।
- **ऑगस्टे (1805-81):** वह समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के लिए एक उपकरण के रूप में हिंसक क्रांति के विचार का प्रतिपादक था। ऑगस्टे 1830 के दशक से लेकर 1871 तक तृतीय फ्रांसीसी गणराज्य की स्थापना होने तक पेरिस में होने वाले विद्रोहों में बहुत सक्रिय रहा था। उसने समाजवाद की स्थापना के लिए क्रांतिकारी षडयंत्र के विचार का समर्थन किया। वह बहुत लोकप्रिय था और 1881 में उसके अंतिम संस्कार के दौरान लगभग दो लाख श्रमिक अपना सम्मान प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए थे।
- **लीग ऑफ द जस्ट:** यह कई समाजवादी संगठनों में से एक था। इसका प्रमुख योगदान अंतर्राष्ट्रीयतावाद का विचार था। अंतर्राष्ट्रीयतावाद का निहितार्थ सभी देशों के सभी श्रमिकों की एकता और श्रमिकों के बीच अनेकता के स्रोत के रूप में सीमाओं को अस्वीकार करना था। सम्पूर्ण यूरोप से इसके सदस्य थे। इसने नारा दिया "सभी लोग भाई हैं" (all men are brothers)।
- **कम्युनिस्ट लीग:** लीग ऑफ द जस्ट ने 1847 में एक नया नाम कम्युनिस्ट लीग अपनाया। इसने "सर्वहारा का शासन" (Rule of Proletariat) का नारा दिया और इसे ही अपना लक्ष्य बनाया। इस लक्ष्य का निहितार्थ बुर्जुआ वर्ग का पतन और श्रमिकों के शासन की स्थापना थी। इसका उद्देश्य वर्ग भेद की विशेषता रखने वाले मध्य वर्ग के वर्चस्व वाले समाज को उखाड़ फेंकना था। यह वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहता था, जिसमें निजी संपत्ति के लिए कोई स्थान नहीं होता। इसने अंतर्राष्ट्रीयतावाद की भावना को आगे बढ़ाया और नारा दिया "सभी देशों के सर्वहारा एक हो जाओ!"।

समाजवाद और साम्यवाद शब्द का प्राय: एक दूसरे के लिए उपयोग किया जाता है। इसका प्रमुख कारण कार्ल मार्क्स का प्रभाव है। इसलिए इन शब्दों की बेहतर समझ विकसित करने के लिए अलग से कार्ल मार्क्स के विचारों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

12. कार्ल मार्क्स के विचार

- कार्ल मार्क्स (1818-83) ने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848) में मार्क्सवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया था। कार्ल मार्क्स ने इंग्लैंड में अपने प्रवास के दौरान अपने चारों ओर के समाज का अध्ययन करके अपने विचारों का निरूपण किया था। उल्लेखनीय है कि मार्क्स ने अपने विचारों का विश्लेषण तात्कालिक औद्योगिक परिस्थितियों से जनित समस्याओं को देखते हुए किया था। इस प्रकार मार्क्स का कार्य औद्योगिक समाज के लिए अधिक प्रासंगिक है। जब उसने औद्योगिक क्रांति के उपरांत इंग्लैंड में इसका विश्लेषण किया तो उसने पूँजीवाद प्रणाली की नकारात्मकताओं पर ध्यान केंद्रित किया और एक वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान करने का प्रयास किया जो आम जनता (जो श्रमिक थे) का कल्याण सुनिश्चित करती। उसकी महत्वपूर्ण रचनाओं में **कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848)** और **दास कैपिटल (1867)** सम्मिलित हैं। कार्ल मार्क्स के विचारों का प्रकाशन 19वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था जो यूरोप में सामंतवादी और पूँजीवाद व्यवस्था के विरूद्ध विरोध का भी समय था।

- मार्क्सवाद को **वैज्ञानिक समाजवाद** भी कहा जाता है क्योंकि मार्क्स ने अपने सिद्धांत पर पहुंचने से पहले इसका अनुभवजन्य वैज्ञानिक विश्लेषण भी किया था। उसने दर्शाया कि श्रमिकों द्वारा सृजित मूल्य में से पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों को दी गई मजदूरी को घटाने के उपरांत जो शेष बचता है वही पूंजीपतियों का लाभ है और यही समाज में संघर्ष का प्राथमिक स्रोत है।
- **कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848):** कम्युनिस्ट लीग के निर्देश पर मार्क्स और एंजेल्स ने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो तैयार किया था। इसने "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार और प्रत्येक को उसके काम के अनुसार" के नारे को बदलकर "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार" कर दिया। ऐसा अधिक समावेशी समाज प्राप्त करने के लिए किया गया था, जो उन लोगों की देखभाल करता जो वृद्धावस्था, विकलांगता आदि के कारण पर्याप्त योगदान नहीं दे सकते हैं।
- **दास कैपिटल (1867):** यह मार्क्स द्वारा पूंजीवाद पर किया गया अध्ययन है और अपने इस प्रकाशन में उन्होंने पूंजीवाद की विशेषताओं को उद्धृत किया है, जो अपने ही विनाश का कारण बनती है।
- **पूँजीवाद समाज का मूल संघर्ष क्या है?**- पूँजीवाद समाज की मूल समस्या यह है कि श्रमिक समाज में मजदूरी के रूप में जो वापस पाते हैं, उसकी तुलना में वे अधिक मूल्य सृजित करते हैं। मजदूरी और उत्पादित मूल्य के बीच का अंतर पूंजीपतियों का लाभ होता है। पूंजीपति मजदूरी की कीमत पर लाभ को बढ़ाने का प्रयास करते हैं और इसलिए श्रमिकों और पूंजीपतियों के बीच न मिट सकने वाला संघर्ष होता है।

VISION
www.UPSCPDF.com

- **पूँजीवाद समाज में आर्थिक संकट अपरिहार्य क्यों है?-** ऐसा इसलिए है क्योंकि मजदूरी उत्पादित वस्तुओं के मूल्य से काफी कम होती है। अधिकांश आबादी (अर्थात श्रमिकों) की क्रय शक्ति और बाजार से खरीदी जाने वाली वस्तुओं के कुल मूल्य के बीच विसंगति होती है। इस प्रकार आर्थिक संकट अवश्यम्भावी है। उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व समाप्त करना और केवल लाभ के उद्देश्य का अंत करना ही इस समस्या का समाधान है। इससे कुछ लोगों के लाभ की बजाय सामाजिक कल्याण के लिए उत्पादन होगा। जहां व्यक्ति के लिए जो अच्छा है और समाज के लिए जो अच्छा है, के बीच कोई अंतर नहीं होगा; जिससे वर्गहीन समाज अस्तित्व में आएगा। निजी स्वामित्व के अंत से पूँजीवाद शोषण का भी अंत हो जाएगा। हालांकि इस संदर्भ में मार्क्स का तर्क यह है कि ऐसा केवल श्रमिक वर्ग द्वारा किया जा सकता है क्योंकि यही वर्ग औद्योगिक समाज में सबसे क्रांतिकारी वर्ग है।

निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत मार्क्स के विचारों पर आगे चर्चा की जा सकती है:

- **पूंजीवाद, संघर्ष और वर्ग (Capitalism, conflict and classes):** कार्ल मार्क्स ने इस बात का विश्लेषण करने का प्रयास किया कि समाज में संघर्ष क्यों है। उसने यह निष्कर्ष निकाला कि समाज का वर्गों में विभाजन का परिणाम संघर्ष है। इसके अतिरिक्त उसने समाज का वर्गों में विभाजन के लिए पूंजीवाद को दोषी ठहराया। इस प्रकार पूंजीवाद वर्गों में समाज के स्तरीकरण के लिए होने वाले संघर्ष हेतु उत्तरदायी है। कार्ल मार्क्स के अनुसार वस्तुओं के उत्पादन के लिए लोगों का एक साथ आना स्वाभाविक है। इस प्रकार संयुक्त उत्पादन के लिए लोगों के बीच मूल रूप से सामंजस्य होता है, लेकिन पूंजीवाद इस सामंजस्य को नष्ट कर देता है और इसका परिणाम समाज में संघर्ष के रूप में सामने आता है। दूसरे शब्दों में संघर्ष का कारण वर्ग नहीं होता है बल्कि यह संघर्ष ही है जो लोगों को "हम" बनाम "उन्हें" की श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए वर्गों में स्वयं को संगठित करने हेतु बाध्य करता है। इस प्रकार एक वर्गहीन समाज वर्ग आधारित समाज में परिवर्तित हो जाता है। कार्ल मार्क्स ने संघर्षरहित, पूंजीवादरहित और वर्गहीन समाज की आकांक्षा की [पूंजीवाद नहीं --> संघर्ष नहीं --> वर्गहीन समाज]।
- **श्रमिकों का शोषण (Exploitation of Workers):** कार्ल मार्क्स का तर्क है कि श्रमिक (अर्थात सर्वहारा वर्ग) अर्थव्यवस्था में मूल्य के वास्तविक उत्पादक हैं और पूंजीपतियों (यानी मध्यम वर्ग या बुर्जुआ वर्ग) द्वारा सर्वत्र उनका शोषण किया जाता है। इस प्रकार अंततः वे इस शोषण के विरूद्ध उठ खड़े होंगे और सर्वहारा की तानाशाही स्थापित हो जाएगी। इससे मार्क्स का आशय यह है कि जब कोई समाज "पूर्ण रूप से औद्योगिकीकृत" हो जाएगा तो श्रमिक अंततः इस व्यवस्था पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए विद्रोह कर देंगे और अपने हित में सरकार अथवा समाज का संचालन करेंगे। इसी को मार्क्स ने **"सर्वहारा की तानाशाही"** कहा है।
- **औद्योगिकीकरण (Industrialization):** हमें यहां यह ध्यान रखना है कि मार्क्स औद्योगिकीकरण के विरूद्ध नहीं था बल्कि केवल औद्योगिक समाज पर प्रभुत्व रखने वाले औद्योगिक पूंजीवाद के विरूद्ध था।
- **साध्य हेतु साधन (Means for Ends):** मार्क्स का मानना था कि चूंकि राज्य सभी शक्तियों को नियंत्रित करता है और यह (राज्य) स्वयं बुर्जुआ वर्ग का एक उपकरण है, इसलिए पूंजीवाद नष्ट करने के लिए हिंसक क्रांति एकमात्र उपाय है।
- **साम्यवादी समाज (Communist Society):** मार्क्स ने राज्यविहीन समाज का तर्क दिया। वह सभी विद्यमान संस्थाओं अर्थात; सेना, सरकार और नौकरशाही के विरूद्ध था क्योंकि वह उन्हें ऐसे संस्थानों के रूप में देखता था जिस पर राज्य अपने अस्तित्व के लिए निर्भर था। मार्क्स का मानना था कि राज्य केवल बुर्जुआ वर्ग के हितों की रक्षा करता है। पुनः मार्क्स के अनुसार नौकरशाही तटस्थ नहीं होती है और धीरे-धीरे यह अपना वर्गीय हित विकसित करने लगती है। गोपनीयता में इसका हित होता है और जानकारी छिपाकर यह अपनी शक्ति प्राप्त करती है।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

पूँजीवाद समाज के स्थान पर मार्क्स ने साम्यवादी समाज की आकांक्षा की। कम्यून का अर्थ है- एक साथ सद्भाव से रहने वाले और सब कुछ साझा करने वाले लोगों का समूह। मार्क्स ने तर्क दिया कि साम्यवादी समाज में "*प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान करेगा और अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेगा।*"लेकिन मार्क्स ने इस बात पर विस्तृत चर्चा नहीं की कि साम्यवादी समाज कैसे संगठित होगा। उसका प्रस्ताव काफी हद तक वैचारिक था जिसमें इस साम्यवादी विचार को व्यवहार में लाने के लिए एक व्यापक कार्यान्वयन योजना का अभाव था।

- **विधि के शासन का विरोधी (Anti-Rule of Law):** लोकतंत्र विधि के शासन के सिद्धांत पर फलते-फूलते हैं और इसका समर्थन करते हैं। मार्क्स का मानना था कि कानून सदैव मानव इच्छा और विशेषकर सत्ताधारी सामाजिक वर्ग की मनमानीपूर्ण इच्छा के उत्पाद होते हैं। इसलिए वह विधि के शासन के आदर्श को विस्थापित करना चाहता है। कार्ल मार्क्स ने कहा कि *"कानून, धर्म, कला, नैतिकता और साहित्य जनता के लिए अफ़ीम के समान हैं, जो मात्र सर्वहारा वर्ग को अधीन करने के लिए बुर्जुआ वर्ग द्वारा गढ़ी गई रचनाएँ हैं"।* मार्क्स राज्य और कानून को निचले वर्ग का दमन करने के लिए अभिजात्य वर्ग के एक साधन के रूप में देखता है और कहता है कि ये (राज्य और कानून) मानव विकास की क्षमता को उसके चरमोत्कर्ष पर पहुँचने में बाधा पैदा करते हैं। इस प्रकार मार्क्स विधि का शासन समाप्त करना चाहता है और इसके स्थान पर एक सेक्युलर यूटोपिया स्थापित करना चाहता है जहां धन और शक्ति के मामले में समानता होगी। इस प्रकार जहां उदारवाद दृढ़तापूर्वक कहता है कि कानून तटस्थ और गैर-पक्षपाती होता है, वहीं मार्क्स कानून को लोगों का दमन करने के लिए अभिजात्य वर्गों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक छद्मावरण कहते हुए इसका विरोध करता है।
- **अंतर्राष्ट्रीयतावाद (Internationalism):** मार्क्स ने यह जोर देते हुए कहा कि सभी देशों के सभी श्रमिकों का उद्देश्य पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना है। उसका तर्क था कि प्रत्येक का मुक्त विकास सभी के मुक्त विकास की पूर्व शर्त है। इस प्रकार प्रत्येक श्रमिक को कॉमरेड या भाई के रूप में देखा जाना चाहिए।
- **समाजवाद की अपरिहार्यता (Inevitability of Socialism):** मार्क्स समाजवाद की अपरिहार्यता में विश्वास करता था क्योंकि पूंजीवाद मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता है, अतः सामंतवाद की भांति पूंजीवाद भी समाप्त हो जाएगा।
- **अधिशेष उत्पादन (Surplus Production):** मार्क्स अधिशेष उत्पादन के विरूद्ध था क्योंकि उसके लिए यह उपनिवेशवाद और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का कारण था।

कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो का प्रभाव (1848)

इसने 1848 में यूरोप में हुए विद्रोहों में मध्यमवर्गीय लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लेने वाले श्रमिकों का मनोबल बढ़ाया। इन विद्रोहों का उद्देश्य था-

- कुलीन वर्ग का वर्चस्व समाप्त करना।
- निरंकुश सरकारों का शासन समाप्त करना और लोकतंत्र की स्थापना करना।
- इटली और जर्मनी के प्रकरण में प्रदर्शनकारी अपने संबंधित देशों का एकीकरण चाहते थे।
- विशेष रूप से, इन विद्रोहों के माध्यम से श्रमिक स्वयं पूंजीवाद को समाप्त करना चाहते थे।

मार्क्स के सभी विचारों में अंतर्राष्ट्रीयतावाद का प्रधान महत्व है। इसलिए हमें आगे बढ़ने से पहले इस विचार की समझ प्राप्त कर लेनी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीयतावाद (Internationalism)

- अंतर्राष्ट्रीयतावाद वस्तुतः एक मार्क्सवादी सामाजिक वर्ग (a Marxist social class concept) अवधारणा है, जो इस विचार पर आधारित है कि पूंजीवाद अब एक वैश्विक प्रणाली है और इसलिए यदि इसे हराना (अर्थात् यदि इसे ख़त्म करना) है तो श्रमिक वर्ग को एक वैश्विक वर्ग के रूप में संगटित होकर कार्य करना चाहिए। राष्ट्रीयता से निरपेक्ष सभी श्रमिकों के बीच एकता,

समाजवादी आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। 1846 में ब्रिटेन में *द सोसाइटी ऑफ़ फ्रटर्नल डेमोक्रेट्स* (Society of Fraternal Democrats) का गठन किया गया। अन्य यूरोपीय देशों में भी इसी तरह की अन्य सोसाइटियाँ विद्यमान थीं। उनमें से सभी का एक दूसरे से संपर्क था। ये सभी श्रमिकों की वैश्विक एकता पर बल देती थीं। यहां तक कि वे श्रमिकों और किसानों की एकजुटता पर भी बल देती थीं।

- प्रथम अन्तर्राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय (1st International), द्वितीय अन्तर्राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय (2nd International) आदि जैसे संगठनों का अध्ययन कर हम अंतर्राष्ट्रीयतावाद की अवधारणा को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।
- **प्रथम अन्तर्राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय (1864):** अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ (International Workingmen's Association: IWA) जिसे कभी-कभी प्रथम अन्तर्राष्ट्र भी कहा जाता है, का गठन करने वाले ट्रेड यूनियनवादियों ने माना कि श्रमिक वर्ग एक अंतर्राष्ट्रीय वर्ग है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने संघर्षों को जोड़ना है। प्रथम अन्तर्राष्ट्र का उद्देश्य 'वर्ग शासन' का पूर्ण उन्मूलन करना था। इसने श्रमिक वर्ग और समाजवादी नेताओं की अंतर्राष्ट्रीय एकता पर भी बल दिया। प्रथम अन्तर्राष्ट्र ने यूरोप और उत्तरी अमेरिका में श्रमिकों के आंदोलन को प्रभावित किया और साथ ही उन्हें सहायता भी प्रदान की। इसने एक देश के श्रमिकों की दूसरे देशों के श्रमिकों से धन एकत्र करके सहायता करने की व्यवस्था भी की। इसने युद्ध का विरोध किया। प्रशा और फ्रांस के श्रमिकों ने फ्रांस-प्रशा युद्ध (1870) और तत्पश्चात जर्मनी द्वारा फ्रांस से अल्सेस लॉरेन छीने जाने का विरोध किया।
- **पेरिस कम्यून (1871):** फ्रांस-प्रशा युद्ध (1870) के दौरान ही फ्रांस में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था समाप्त हो गई और तृतीय फ्रांसीसी गणराज्य की स्थापना हो गई। नई सरकार में संपत्तिशाली वर्ग का प्रभुत्व था और इसने सम्राट के पदत्याग के बाद भी प्रशा से युद्ध जारी रखा। श्रमिकों ने प्रशा पर फ्रांसीसी आक्रमण के कारण आरम्भ हुए युद्ध का विरोध किया था। लेकिन युद्ध आरंभ हो जाने के बाद वे साम्राज्यवादी प्रशा के समक्ष फ्रांस द्वारा आत्मसमर्पण किए जाने का विरोध करने लगे जो फ्रांसीसी प्रदेशों पर आधिपत्य जमाना चाहता था। नवगठित फ्रांसीसी सरकार द्वारा बिस्मार्क की युद्धविराम की शर्तें स्वीकार कर लेने पर श्रमिकों ने पेरिस पर कब्ज़ा कर लिया। उल्लेखनीय है कि बिस्मार्क की युद्धविराम की शर्तों में प्रशा को अल्सेस-लॉरेन का क्षेत्र सौंपना और विशाल युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करना सम्मिलित था। इसके उपरांत श्रमिकों ने एक निर्वाचित परिषद का गठन किया जिसे पेरिस कम्यून (1871) के नाम से भी जाना जाता है। **पेरिस कम्यून के अंतर्गत:**
  - सभी सार्वजनिक पदों के अधिकारियों को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से चुना जाता था,
  - लोगों के पास सभी सरकारी सेवकों को वापस बुलाने का अधिकार था,
  - निर्वाचित परिषद या पेरिस कम्यून में श्रमिकों और पेरिस के निम्न मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व था।

पेरिस कम्यून का उद्देश्य शेयर बाजार की सट्टेबाजी, एकाधिकार और उन सभी विशेषाधिकारों को समाप्त करना था जो श्रमिकों के उत्पीड़न हेतु उत्तरदायी थे। इसके बाद पेरिस के अतिरिक्त शेष फ्रांस पर नियंत्रण रखने वाली फ्रांसीसी सरकार ने पेरिस कम्यून (1871) को कुचलने के लिए प्रशा की सहायता मांगी। फ्रांसीसी सेना ने प्रशा की सेना के साथ पेरिस पर धावा बोल दिया और पेरिस कम्यून का पतन हो गया। इस संघर्ष में 30,000 से भी अधिक श्रमिक मारे गए। प्रथम अन्तर्राष्ट्र ने पेरिस कम्यून का समर्थन किया और कम्यून के पतन के बाद बचकर भागने वाले शरणार्थियों को सहायता प्रदान की। इसके फलस्वरूप सम्पूर्ण यूरोप की सरकारें प्रथम अन्तर्राष्ट्र के विरूद्ध हो गईं और इसकी गतिविधियों पर अँकुश लगाने का प्रयत्न करने लगीं।

प्रथम अन्तर्राष्ट्र का पतन क्यों हुआ?

- संगठन की पद्धति और उद्देश्य को लेकर प्रथम अन्तर्राष्ट्र में 1872 में विभाजन हो गया। अंततः 1876 में इसका विघटन ही हो गया। लेकिन 1876 तक श्रमिकों के बीच जागरूकता फैलाने में

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

प्रथम अन्तर्राष्ट्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अब वे राजनीतिक रूप से अधिक मुखर हो गए थे। 1876 तक कई देशों में मजबूत समाजवादी दल अस्तित्व में आ चुके थे और उनकी सदस्यता भी बढ़ गई थी।

द्वितीय अन्तर्राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय (1889-1916) - लक्ष्य, कार्य और पतन: निम्नलिखित कारणों से द्वितीय अन्तर्राष्ट्र प्रथम अन्तर्राष्ट्र से अधिक सुदृढ़ था:

- प्रथम अन्तर्राष्ट्र (1864) के समय यूरोप में सुसंगठित समाजवादी दल नहीं थे। लेकिन 1870 और 1880 के दशक के दौरान सभी यूरोपीय देशों में समाजवादी दल अस्तित्व में आ चुके थे। इनमें से कुछ समाजवादी दल बहुत शक्तिशाली थे। उनके लाखों सदस्य थे। कुछ समाजवादी दल अपने देश के संसद में कुछ सीटें भी जीतने में सफल रहे थे। उदाहरण के लिए, जर्मन समाजवादी दल (German Socialist Party) को 1887 के चुनावों में लगभग 7 लाख वोट मिले थे और यह दल यूरोप का सबसे बड़ा समाजवादी दल बन गया था। इसी तरह ब्रिटेन में भी श्रमिकों के कई संगठन मौजूद थे जैसे कि फेबियन सोसाइटी और सोशलिस्ट लीग। फेबियन सोसाइटी की स्थापना 1883 में की गई थी (जिस वर्ष मार्क्स की मृत्यु हुई थी)।
    - द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के अस्तित्व में आने तक विभिन्न ट्रेड यूनियनों की सदस्यता कई गुना बढ़ चुकी थी और उन्होंने अपने देशों में कई हड़तालों का आयोजन भी किया था।
    - समाजवादी आंदोलन यूरोप के बाहर भी फैल रहा था। जापान में समाजवादी आंदोलन 1890 के दशक में आरंभ हुआ। भारत में 1899 में श्रमिकों द्वारा पहली बार संगठित तौर पर हड़ताल (जी. आई. पी. रेलवे सिग्नल पर कार्य करने वाले मजदूरों की हड़ताल) का आयोजन किया गया था।
- इस प्रकार द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के गठन तक समाजवादी आंदोलन यूरोप और यूरोप के बाहर अपने विस्तार के साथ-साथ एक जन आंदोलन बन चुका था। द्वितीय अन्तर्राष्ट्र का उद्देश्य सभी देशों के सभी समाजवादी दलों को एकजुट करना था। यह साम्राज्यवाद के विरूद्ध था और उपनिवेशों के मूल निवासियों और उपनिवेशवादियों के बीच समानता लाना चाहता था। यह युद्ध और प्रथम विश्व युद्ध से पहले हो रहे यूरोप के सैन्यीकरण के विरूद्ध भी था।

इसके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित हैं:

- मई दिवस (1890): द्वितीय अन्तर्राष्ट्र ने सभी श्रमिकों की ओर से काम के अधिकतम घंटों को प्रति दिन 8 घंटों तक सीमित करने की मांग को आगे बढ़ाया। इस संदर्भ में इसने सभी श्रमिकों की एकता और एकजुटता के प्रतीक के रूप में 1 मई (1890) को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस घोषित किया।
- द्वितीय अन्तर्राष्ट्र ने श्रमिकों को अपने आंदोलन में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित किया। शीघ्र ही अधिकांश देशों में ट्रेड यूनियन और समाजवादी दलों की सदस्यता बढ़ गई।
- द्वितीय अन्तर्राष्ट्र उपनिवेशों की स्वतंत्रता का पक्षधर था और साथ ही उनके राष्ट्रवादी संघर्षों का समर्थन भी करता था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रख्यात नेता दादाभाई नौरोजी ने 1904 के द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के सम्मेलन को संबोधित किया था। इस संगठन ने 19वीं और प्रारंभिक 20वीं शताब्दी के दौरान अफ्रीका और अन्य उपनिवेशों की बंदरबांट का भी विरोध किया और इस बंदरबांट के परिणामस्वरूप होने वाले सैन्यीकरण की निंदा की। साम्राज्य निर्माण की अभिलाषा में यूरोपीय राष्ट्र अपने सैन्य व्यय में वृद्धि कर रहे थे। यह संगठन यूरोप के इस सैन्यीकरण के विरूद्ध था, जिसका परिणाम आगे चलकर प्रथम विश्वयुद्ध के रूप में सामने आया।
- युद्ध छिड़ जाने पर उसका त्वरित अंत करने के साथ-साथ युद्ध की रोकथाम द्वितीय अन्तर्राष्ट्र का एक प्रमुख उद्देश्य बन गया था। 1904-05 के रूस-जापान युद्ध के दौरान युद्ध के विरूद्ध प्रतीकात्मक संकेत के रूप में जापान और रूस के समाजवादी समूहों के नेताओं को 1904 में होने वाले द्वितीय अन्तर्राष्ट्र सम्मेलन का संयुक्त अध्यक्ष बनाया गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- इसने पूंजीवाद को युद्ध, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का मूल कारण ठहराया।
- द्वितीय अन्तर्राष्ट्र ने प्रथम विश्व युद्ध को रोकने का भी प्रयास किया। इसने युद्ध में भाग लेने से संबंधित देशों को रोकने के लिए सामान्य हड़ताल का अह्वान किया। इसने इस युद्ध के कारण सामने आए आर्थिक और राजनीतिक संकट को हथियार बनाते हुए श्रमिकों, समाजवादी दलों और उनके नेताओं से पूंजीवाद और उसे समर्थन देने वाली सरकारों को उखाड़ फेंकने का अह्वान किया। इस प्रकार कई सरकारें द्वितीय अन्तर्राष्ट्र का समर्थन करने वाले समाजवादी नेताओं के विरूद्ध हो गईं। युद्ध का विरोध करने के लिए प्रथम विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर फ्रांसीसी समाजवादी नेता जीन जारेस की हत्या कर दी गई।

द्वितीय अन्तर्राष्ट्र की दुर्बलताएं: द्वितीय अन्तर्राष्ट्र की दुर्बलताओं को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है:

- प्रथम अन्तर्राष्ट्र के विपरीत द्वितीय अन्तर्राष्ट्र वस्तुतः विभिन्न देशों के समाजवादी दलों का एक ढीला-ढाला संघ था। इसके विपरीत प्रथम अन्तर्राष्ट्र सुगठित, अधिक एकजुट और छोटा समूह था तथा इस प्रकार उसका समन्वय और प्रबंधन करना आसान था।
- इसके अतिरिक्त कुछ आंतरिक मतभेद भी थे, जिन्होंने द्वितीय अन्तर्राष्ट्र को दुर्बल बनाया।
    - यह समाजवाद लाने के लिए किये जाने वाले संघर्ष की विधि के प्रश्न पर विभाजित था। कुछ हिंसक क्रांति की विधि को वरीयता देते थे, जबकि अन्य सरकारों पर दबाव डालकर और पैरवी करके धीरे-धीरे किये जाने वाले सुधारों के पक्षधर थे। जो लोग धीरे-धीरे सुधारों का समर्थन करते थे, वे अपनी सरकारों का भी समर्थन करते थे।
    - द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के कुछ वर्ग उपनिवेशवाद के पक्षधर थे, जिसमें उनके देश लगे हुए थे।
    - युद्ध के मुद्दे पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के भीतर विभिन्न समूहों के बीच युद्ध के विरोध के मूल सिद्धांत पर तो मतैक्य था लेकिन क्या कार्रवाई की जानी चाहिए, इसके संबंध में मतभेद था। उदाहरण के लिए कुछ समाजवादी दलों को इस बात का डर था कि यदि वे युद्ध का विरोध करते हैं तो उनकी सरकारें उनका दमन कर देंगी। इसके साथ ही कुछ समाजवादी दल अपनी क्रांति आगे बढ़ाने के लिए युद्ध जनित संकट का उपयोग करने के लिए तैयार नहीं थे।
    - जब प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हुआ तो अधिकांश समाजवादी दलों ने अपनी सरकारों का समर्थन किया। इससे द्वितीय अन्तर्राष्ट्र का अंत हो गया। इस प्रकार यह तर्क दिया जा सकता है कि राष्ट्रवाद द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के पतन का एक प्रमुख कारण था। अंतर्राष्ट्रीयतावाद और राष्ट्रवाद (Internationalism and Nationalism) के बीच की खाई द्वितीय अन्तर्राष्ट्र के अंतिम वर्षों में और चौड़ी हो गई जिसने इसके पतन का मार्ग सुनिश्चित किया।

13. रूस में समाजवाद: सामाजिक क्रान्तिकारी, बोल्शेविक और मेंशेविक

- **सोशलिस्ट रेवोल्युशनरी पार्टी:** यह एक ऐसा दल था जिसका मतदाता आधार किसान थे। यह दल किसानों को संगठित कर क्रांति लाना चाहता था। यह विशुद्ध मार्क्सवाद का विरोधी था। इसने विशुद्ध प्रोलिटरियेट (श्रमिक वर्ग) क्रांति का विरोध किया क्योंकि इस प्रकार की क्रांति से किसानों के हितों की उपेक्षा होती और इसका सम्पूर्ण ध्यान तीव्र औद्योगीकरण पर ही केन्द्रित होता। दूसरी ओर यह दल किसानों की सहकारी समितियों (अर्थात खेतों के सामूहिकीकरण) के आधार पर एक कृषि अर्थव्यवस्था चाहता था। वे औद्योगिकीकरण को आगे बढ़ाने के विरुद्ध थे। क्योंकि रूसी जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषक था। 1917 की क्रांति के पश्चात हुए चुनावों में सोशलिस्ट रेवोल्युशनरी पार्टी ने बोल्शेविकों से दोगुने से अधिक सीटें प्राप्त की। परन्तु (बोल्शेविकों के) रेड गार्ड्स ने संविधान सभा को भंग कर दिया, जिसके कारण गृह युद्ध छिड़ गया (1918-20)।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **बोल्शेविक बनाम मेंशेविक:** रूस में सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के विघटन से बोल्शेविक और मेंशेविक का उदय हुआ। यह दोनों ही गुट सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के झंडे तले ही विकसित हुए थे, जिसका दृष्टिकोण मार्क्सवादी था। पार्टी द्वारा चलाए जा रहे एक समाचार पत्र के सम्पादकीय बोर्ड के चुनाव के समय बोल्शेविक और मेंशेविक के बीच दरार पड़ गई। रूसी भाषा में बोल्शेविक का अर्थ है "बहुसंख्यक" और मेंशेविक का अर्थ है "अल्पसंख्यक" और इस प्रकार से बहुसंख्यक समूह बोल्शेविक कहलाया और अल्पसंख्यक समूह को मेंशेविक कहा जाने लगा। बोल्शेविकों का नेता लेनिन था।

बोल्शेविक	**मेंशेविक**
बोल्शेविकों का तर्क था कि पार्टी को केवल औद्योगिक श्रमिकों के लिए ही कार्य नहीं करना चाहिए अपितु किसानों को भी क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित करना चाहिए।	मेंशेविकों को क्रान्तिकारी गतिविधियों में किसानों के सहयोग का बहुत कम विश्वास था क्योंकि रूसी समाज में किसान वर्ग सर्वाधिक रूढ़िवादी था। इसलिए मेंशेविक श्रमिक विद्रोह के अर्थों में मार्क्सवाद के कट्टर अनुयायी थे।
बोल्शेविकों का मानना था कि पार्टी को पेशेवर क्रांतिकारियों का एक छोटा अनुशासित समूह होना चाहिए, जो पूर्णकालिक रूप में क्रांति लाने का कार्य करेंगे। सदस्यता के लिए प्रमुख मापदंड यही होना चाहिए, भले ही आवेदक श्रमिक हो या किसान।	मेंशेविक एक ऐसी बड़ी पार्टी चाहते थे जिसकी सदस्यता सभी के लिए खुली होती। पुनः उनका मानना था कि जो इसमें सम्मिलित होना चाहते हैं उनके लिए संगठन के प्रति प्रतिबद्धता और संगठन की गतिविधियों के लिए दिए जाने वाले समय को सदस्यता का प्रमुख मानदंड नहीं बनाना चाहिए।
वे क्रांति का अविलम्ब आरम्भ चाहते थे।	उनका विश्वास था कि क्रांति तब तक नहीं हो सकती, जब तक रूस का सम्पूर्ण औद्योगिकीकरण न हो जाए और श्रमिकों की संख्या किसानों से अधिक न हो जाए। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें किसानों से समर्थन की आशा नहीं थी।

रूसी क्रांति :

- त्सार या ज़ार (Tsar or Czar) का अर्थ है रोमानोव राजवंश का सम्राट (स्लाव वंश)।
- **20वीं सदी के प्रथम दो दशकों की स्थिति:** रूस पर ज़ार निकोलस द्वितीय का शासन था जो एक निरंकुश शासक था। यह एक प्रकार से एक व्यक्ति का शासन था, जहां ज़ार को संसद के प्रति बिना किसी उत्तरदायित्व के उच्च विवेकाधीन शक्तियाँ प्राप्त थीं (दूसरे शब्दों में कहें तो रूस में संसद ही नहीं थी)।
- **जनसामान्य की शिकायतें:** ज़ार निकोलस द्वितीय के शासनकाल में विभिन्न कारणों से जनसामान्य अप्रसन्न था और सार्वजनिक असंतोष व्याप्त था। कारखानों में काम की स्थितियां बहुत ही खराब थीं इसलिए श्रमिकों का जीवन कष्टमय था। इसी प्रकार से किसानों की भी स्थिति अत्यधिक खराब थी। यद्यपि सर्फडम (कृषि दासता) की प्रथा 1861 में एलेक्जेंडर द्वारा समाप्त कर दी गई थी परन्तु दासता से मुक्त होने के पश्चात सर्फ (कृषि दास) भारी ऋण से दबे हुए थे और नितांत निर्धनता में जी रहे थे। यह इसलिए था क्योंकि उन्हें प्रतिदान (redemptions) का भुगतान करना पड़ता था। यह एक प्रकार का वार्षिक भुगतान था, जिसे किसानों को सर्फ़डम की समाप्ति (1861) के उपरांत प्राप्त हुई स्वतंत्रता और भूमि के एवज में सरकार को देना पड़ता था। प्रेस, वाक् एवं अभिव्यक्ति की कोई स्वतंत्रता नहीं थी। आर्थिक विकास के मामले में रूस पिछड़ रहा था। इसलिए लोग एक प्रतिनिधित्व स्वरूप वाली सरकार, अर्थात प्रजातंत्र के रूप में परिवर्तन चाहते थे।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **1905 की क्रांति:** 1905 में सार्वजनिक अशांति अपने चरम पर पहुंच गई थी। 1904-05 का रूस-जापान युद्ध इसका प्रमुख कारण था क्योंकि इससे रूसी अर्थव्यवस्था का और अधिक पतन हुआ। युद्ध में रूस की पराजय ने ज़ार शासन के प्रति सार्वजनिक विश्वास को और भी कम कर दिया। इसका प्रत्युत्तर जनता ने एक सामान्य हड़ताल के रूप में दिया और ज़ार के शासन को उखाड़ कर प्रजातंत्र की स्थापना का प्रयास किया। 1905 की यह क्रांति निम्नलिखित कारणों से असफल रही:
  - सेना ज़ार के प्रति निष्ठावान रही।
  - ज़ार ने अक्टूबर घोषणापत्र (October Manifesto-1905) के रूप में सुविधाएँ प्रदान कीं।
  - विरोधियों के बीच एकता का अभाव था।
  - क्रांतिकारियों के बीच केन्द्रीय नेतृत्व का अभाव था, क्योंकि क्रांति बिना किसी योजना और नेता के अनायास ही प्रस्फुटित हो गई थी।
- **अक्टूबर घोषणापत्र (1905):** 1905 की क्रांति के समय ज़ार द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं को अक्टूबर घोषणापत्र (1905) के रूप में जाना जाता है। इसमें सम्राट द्वारा भविष्य में प्रदान की जाने वाली घोषणा शामिल थी।
  - ज़ार ने एक निर्वाचित संसद (जिसे रूसी भाषा में ड्यूमा कहा जाता है) की स्थापना का वचन दिया।
  - उसने श्रमिकों के वेतन में वृद्धि और कारखानों में काम की स्थितियों में सुधार का वचन दिया।
  - उसने भूतपूर्व सर्फ द्वारा किए जाने वाले करों के भुगतान को रद्द करने का वचन दिया।
  - उसने प्रेस को और अधिक स्वतंत्रता देने का वचन दिया।
  - उसने एक वास्तविक लोकतंत्र का वचन दिया, जहां देश के शासन को चलाने में ड्यूमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी थी।
- **अक्टूबर घोषणापत्र का कार्यान्वयन:** यद्यपि ज़ार ने ड्यूमा की स्थापना कर दी थी और प्रतिदान भुगतान को रद्द कर दिया था परन्तु उसने अक्टूबर घोषणापत्र में किए गए कई अन्य वचनों को पूरा नहीं किया। सुधार के संदर्भ में ड्यूमा के विचारों और मांगों की उपेक्षा की गयी। पहली दो निर्वाचित ड्यूमाओं को ज़ार की सेना ने छिन्न-भिन्न कर दिया था। तीसरी और चौथी ड्यूमा ने अपना पांच वर्ष का कार्यकाल केवल इसलिए पूरा किया क्योंकि इसका गठन ज़ार-समर्थक सदस्यों द्वारा किया गया था। यह इसलिए हुआ क्योंकि द्वितीय ड्यूमा को भंग करने के पश्चात उसके मतदान व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया गया था। नई मतदान व्यवस्था में किसानों और शहरी श्रमिकों को मतदान के अधिकार से वंचित कर दिया गया था, जिसके परिणामस्वरूप अभिजात्य वर्ग के वे ही रुढ़िवादी सदस्य चुने गये, जो ज़ार समर्थक थे।

1917 की क्रांतियाँ

वर्ष 1917 में रूस में दो क्रांतियाँ हुईं – फरवरी क्रांति और अक्टूबर क्रांति। फरवरी क्रांति के उपरांत ज़ार के शासन का अंत हो गया और एक अंतरिम सरकार की स्थापना हुई। अक्टूबर क्रांति के परिणामस्वरूप बोल्शेविकों ने तख्तापलट की एक कार्यवाही में अंतरिम सरकार को अपदस्थ कर रूस में समाजवादी राज्य की स्थापना की।

फरवरी क्रांति (1917): अक्टूबर घोषणापत्र (1905) का कार्यान्वयन न किया जाना इस क्रांति का एक प्रमुख कारण था। इसके अतिरिक्त यहाँ दो प्रश्नों को सम्बोधित किया जाना महत्त्वपूर्ण है, पहला – ज़ार के विरुद्ध क्रांति किसानों और श्रमिकों की क्रांति क्यों थी? और दूसरा – 1905 की क्रांति के तुरंत पश्चात ज़ार ने अक्टूबर घोषणापत्र (1905) में किये गये वादों को पूरा क्यों नही किया?

ज़ार के विरुद्ध क्रांति किसानों और श्रमिकों की क्रांति क्यों थी?

प्रथम ड्यूमा का गठन 1906 में हुआ था। प्रथम ड्यूमा के लिए हुए चुनावों में सभी वर्गों को मतदान का अधिकार था। परन्तु इन चुनावों में धांधली हुई थी जिसके कारण जमींदारों और मध्यवर्ग के लोगों को

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

बहुमत प्राप्त हुआ। प्रथम ड्यूमा ने जनता की मांगों को आगे बढाने का प्रयास किया। ज़ार से की गई इसकी मांगों में ये सम्मिलित थे:

- भूमि का पुनर्वितरण
- एक वास्तविक लोकतंत्र
- श्रमिकों को हड़ताल का अधिकार
- मृत्युदंड का उन्मूलन
- ड्यूमा को ज़ार के मंत्रियों के अनुमोदन का अधिकार।

जल्द ही प्रथम ड्यूमा को भंग कर दिया गया। द्वितीय ड्यूमा का भी यही हाल हुआ।

तृतीय (1907-12) और चतुर्थ ड्यूमा (1912-17) के पास कोई भी शक्ति नहीं थी और ये रुढ़िवादी थीं। मतदान का अधिकार न होने के कारण श्रमिकों और किसानों के हितों की उपेक्षा हुई। यही कारण है कि आन्दोलन मध्यवर्गीय लोगों के नेतृत्व में नहीं हुआ था अपितु किसानों और श्रमिकों द्वारा किया गया था। इसके अतिरिक्त गुप्तचर, पुलिस और मंत्रियों की नियुक्तियां ज़ार द्वारा ही नियंत्रित होती थीं और वह शक्तिशाली बना रहा।

अक्टूबर घोषणापत्र के कार्यान्वयन न होने के तुरंत पश्चात कोई आन्दोलन क्यों नहीं हुआ?

इसकी व्याख्या निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत की जा सकती है:

- 1906 के पश्चात हुए आर्थिक सुधारों ने किसानों और श्रमिकों को शांत कर दिया था।
- जो नेता ज़ार का विरोध करते थे और आन्दोलन करना चाहते थे, उनके पास धन की कमी थी। उनमें से कई या तो जेल में थे या निर्वासन का शिकार थे। उदाहरण के लिए, लेनिन निर्वासन में गया और फिर 1917 में जर्मन विदेश मंत्री ज़िम्मरमैन की सहायता से वापस आया। (जर्मनी यह चाहता था कि रूस प्रथम विश्व युद्ध से अलग हो जाए अथवा आंतरिक अशांति से यह कमजोर हो जाए)।
- ज़ार के प्रधानमन्त्री स्टोलीपिन ने कुछ सुधार प्रस्तुत किये:
  - किसानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उसने प्रतिदान का भुगतान समाप्त कर दिया।
  - भूमि सुधार आरंभ किये गये: किसानों को अपनी भूमि खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उदाहरण के लिए, किसानों को साइबेरिया में स्थानांतरित होने के लिए प्रोत्साहित किया गया जहाँ वे बीहड़ भूमि को सस्ते मूल्यों पर खरीद सकते थे। परन्तु इससे अमीर किसानों या कूलक जैसे नए वर्ग का उदय हुआ, जो सरकार के समर्थक थे।
  - उसने श्रमिकों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। निरीक्षकों को यह सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया गया कि कारखानों में काम करने की स्थितियों में सुधार हो। 1906 के पश्चात अत्यधिक औद्योगिक विकास के कारण पूंजीपति श्रमिकों के वेतन को बढ़ाने में सक्षम हो गये। 1912 में बीमारी और दुर्घटना बीमा योजना का आरम्भ किया गया।
- विरोधी नेताओं के बीच मतभेद: बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच विभिन्न मुद्दों पर मतभेद थे। मेंशेविक तत्काल क्रांति नहीं चाहते थे। उनका मानना था कि जब तक रूसी अर्थव्यवस्था पूरी तरह से औद्योगिकीकृत न हो जाये और जनसंख्या में श्रमिक बहुमत न हो जाए, तब तक क्रांति नहीं होनी चाहिए। दूसरी ओर लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक; श्रमिकों और किसानों के समर्थन से तत्काल क्रांति चाहते थे।

फरवरी क्रांति के कारण (1917): क्रांति के कारणों को निम्नलिखित प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है:

- **दीर्घकालीन शिकायतें:**
  - अक्टूबर घोषणापत्र (1905) का कार्यान्वयन सही से नहीं किया गया। पुनः वास्तविक प्रजातंत्र के वादे को भी पूरा नहीं किया गया था।
  - 1911 तक भूमि सुधार विफल हो गये थे। उल्लेखनीय है कि किसानों को भू-स्वामी बना कर और गरीबों को सबसे अधिक आहत करने वाली खाद्य मुद्रास्फीति में कमी के द्वारा किसानों के जीवन में

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

सुधार लाने के उद्देश्य से भूमि सुधार किये गये थे। हालांकि ये भूमि सुधार विफल हो गये क्योंकि किसानों की जनसंख्या में कृषि क्षेत्र के विकास की तुलना में अधिक वृद्धि हुई। यह अक्षम कृषि पद्धतियों के कारण खाद्य मुद्रास्फीति को रोकने में विफल रही। प्रधानमन्त्री स्टोलीपिन के द्वारा प्रारम्भ किए गए सुधारों के परिणामस्वरूप जनसंख्या में तीव्रता से वृद्धि हुई।

- श्रमिकों के लिए चलाया गया कल्याण कार्यक्रम उनकी सभी शिकायतों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं था। प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ से पहले के तीन वर्षों (1912-14) के दौरान औद्योगिक अशांति और हड़तालें हुईं। यह अशांति 1912 में सोने की एक खदान में खनिकों पर गोलीबारी की घटना से प्रारम्भ हुई।
- गुप्त पुलिस के उपयोग द्वारा सरकारी दमन का प्रयास किया गया। इसने समाज के तीन महत्त्वपूर्ण वर्गों अर्थात – किसान, श्रमिक और बुद्धिजीवी वर्ग (शिक्षित वर्ग) को आहत किया। ये क्रान्तिकारी छात्र, अध्यापक आदि थे जिन्हें या तो बंदी बना लिया गया था या गुप्त पुलिस ने मार दिया था। नृशंसता के एक और उदाहरण में यहूदियों का सामूहिक निर्वासन शामिल था। 1917 तक समाज के कई वर्ग ज़ार विरोधी हो गये थे।
- 1912 के पश्चात विभिन्न क्रान्तिकारी दलों ने आपस में हाथ मिला लिए जिसके परिणामस्वरूप विरोधी दलों के मध्य रहने वाले विवाद समाप्त हो गए। उदाहरण के लिए बोल्शेविक, मेंशेविक और सोशलिस्ट रेवोल्युशनरी पार्टी – तीन प्रमुख दलों ने अपने मतभेद कम से कम अस्थाई रूप से समाप्त कर दिए और ज़ार के विरोध में एकजुट होने का निर्णय कर लिया।
- शाही परिवार में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण उसकी विश्वसनीयता समाप्त हो गयी थी। उदाहरण के लिए, इस बात को लेकर भी वाद-विवाद हुआ कि क्या सुधारवादी प्रधानमन्त्री स्टोलीपिन की हत्या के पीछे ज़ार का हाथ था। कथित रूप से यह आरोप भी लगाया गया था कि जो पादरी ज़ार के बीमार बालक की सहायता किया करता था, ज़ार के सभी निर्णयों में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी थी।

- **तात्कालिक कारण:**

- प्रथम विश्व युद्ध में भागीदारी ने ज़ार को सत्ता से उखाड़ फेंकने की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया, क्योंकि युद्ध में हुए भारी व्यय ने जनता की आर्थिक स्थिति को और बिगाड़ दिया था। उदाहरण के लिए युद्ध के वर्षों में खाद्य मुद्रास्फीति में तीव्रता से वृद्धि हुई। सेंट पीटर्सबर्ग (तब पेत्रोग्राद) में ब्रेड के लिए दंगे प्रारम्भ हो गए थे। प्रथम विश्व युद्ध में विफलता और युद्ध संचालन में ज़ार के अक्षम नेतृत्व (उदाहरण के लिए युद्धरत सैनिक इकाईयों के लिए शस्त्र आपूर्ति का धीमी गति से परिवहन) के कारण सेना और पुलिस में भी विद्रोह हो गया। इस प्रकार 1905 की क्रांति के विपरीत, वर्ष 1917 की फरवरी क्रांति के समय सेना और पुलिस ज़ार के प्रति निष्ठावान नहीं थी।
- फरवरी की क्रांति एक सहज विस्फोट थी। क्रांति को दबाने के लिए जार निकोलस द्वितीय ने अपने सैनिकों को भेजा, जिन्होंने शीघ्र ही गोली चलाने से मना कर दिया। इस प्रकार पेत्रोग्राद की पूरी सेना ने विद्रोह कर दिया। जल्द ही भीड़ ने सार्वजनिक भवनों पर अधिकार कर लिया। चतुर्थ ड्यूमा ने ज़ार को एक संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना का परामर्श दिया परन्तु उसने मना कर दिया और पहले से अधिक सेना को भेजा, जो भीड़ को हटाने में विफल रही। सेना के वरिष्ठ जनरलों ने राजतंत्र को बचाने के लिए निकोलस द्वितीय को सिंहासन छोड़ने के लिए मनाने का प्रयास किया। निकोलस द्वितीय सहमत हो गया परन्तु उसके अगले उत्तराधिकारी (ज़ार का भाई) ने सिंहासन को अस्वीकार कर दिया और इस प्रकार रोमानोव राजवंश का शासन एक घटिया राज्यारोहण योजना के कारण समाप्त हो गया।
    - फरवरी क्रांति के सहज विस्फोट के समय विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग (ड्यूमा के सदस्य, उद्योगपति, अभिजात्य वर्ग और सेना के वरिष्ठ जनरल) केवल अपनी जान बचाने के लिए ज़ार के विरुद्ध हो गये थे।

VISION IAS

अक्टूबर क्रांति (1917)

अस्थाई सरकार की असफलता ने अक्टूबर क्रांति को जन्म दिया, जिसमें बोल्शेविकों ने एक तख्तापलट कार्यवाही में करेंनस्की सरकार को उखाड़ फेंका। करेंनस्की के अधीन बनाई गयी अंतरिम सरकार की असफलता के निम्नलिखित कारण थे:

- इसने प्रथम विश्व युद्ध से अपनी सेनाओं को वापस नहीं बुलाया। विभिन्न लड़ाईयों में हुई क्षति के कारण सेना के मनोबल में भी बहुत गिरावट आई थी।
- इसने भूमि का पुनर्वितरण और नया संविधान तैयार करने के लिए एक संविधान सभा हेतु तुरंत चुनाव कराने के वादे को पूरा नहीं किया था। इस स्थिति का लाभ उठाने और अपना जनाधार बढ़ाने के लिए बोल्शेविकों ने कुलकों से जबरन भूमि खाली कराने और किसानों को भूमि का पुनर्वितरण करने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। नया संविधान तैयार करने के लिए एक संविधान सभा हेतु तुरंत चुनाव कराने के संदर्भ में सरकार ने यह तर्क दिया कि चूंकि राष्ट्र युद्ध में व्यस्त है इसलिए चुनाव आयोजित नहीं किये जा सकते। इससे असंतोष में और अधिक वृद्धि हुयी।
- सोवियत (Soviets) के उदय ने सरकार के अधिकारों को कम कर दिया था। सभी नगरों में सोवियत छाये हुए थे। नगर का प्रशासन चलाने के लिए सैनिकों और श्रमिकों की एक निर्वाचित समिति को सोवियत नाम दिया गया था। पेत्रोग्राद सोवियत फरवरी 1917 के पश्चात पेत्रोग्राद का शासन चला रही थी। इसने सैनिकों को सरकार के बजाए सोवियत के आदेशों का पालन करने के लिए कहा। इस प्रकार अंतरिम सरकार ने सेना का समर्थन खोना प्रारम्भ कर दिया।
- अप्रैल 1917 में जर्मनी ने लेनिन की स्विटजरलैंड निर्वासन से लौटने में सहायता की। लेनिन ने **अप्रैल थीसिस** में मांग की कि सभी शक्तियाँ सोवियत में निहित होनी चाहिए। अंतरिम सरकार को कोई समर्थन नहीं मिलना चाहिए और रूस को तुरंत प्रभाव से प्रथम विश्व युद्ध से अलग हो जाना चाहिए।
- कोर्निलोव मामला (Kornilov affair): कोर्निलोव सेना का एक जनरल था। उसने सोवियत के विरुद्ध अपने सैनिक भेजने का निर्णय किया। तत्पश्चात कोर्निलोव के ही बहुत से सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। इसके पश्चात जनमत प्रथम विश्व युद्ध में भागीदारी के विरुद्ध और सोवियत के पक्ष में हो गया।
- लेनिन ने जन सामान्य को अपने पक्ष में लाने के लिए बहुत ही आकर्षक सुधारों का प्रस्ताव दिया। उदाहरण के लिए भूमि का पुनर्वितरण, अत्यल्प खाद्य मुद्रास्फीति और यदि जनता इस क्रांति का समर्थन करती है तो प्रथम विश्व युद्ध से वापसी।

1917-24: बोल्शेविकों द्वारा शक्तियों का एकीकरण

- अंतरिम सरकार के हटने और संविधान सभा के गठन के पश्चात चुनावों का आयोजन किया गया था। यद्यपि लेनिन को पता था कि बोल्शेविक चुनावों में बहुमत प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं परन्तु उसने चुनावों को अक्टूबर क्रांति (1917) का एक महत्वपूर्ण एजेंडा बना लिया था। लेनिन ने चुनावों से पहले किसानों को प्रसन्न करने के लिए भूमि का पुनर्वितरण प्रारम्भ कर दिया था, परन्तु बोल्शेविक केवल दूसरा स्थान ही प्राप्त कर सके। सोशल रिवोल्युशनरी पार्टी बोल्शेविकों द्वारा जीती गयी सीटों से दुगुनी सीटें पाने में सफल रही। इस पार्टी का प्रमुख मतदाता आधार किसान थे और इसने कृषि अर्थव्यवस्था को लक्षित करके एक आर्थिक कार्यक्रम का वायदा किया था। संविधान सभा की बहसों में जब बोल्शेविकों को निशाना बनाया गया और राज्य के प्रशासन के उनके दृष्टिकोण की आलोचना की गयी तो लेनिन ने रेड गार्ड्स को संविधान सभा को भंग करने का आदेश दे दिया। उसका तर्क था कि "हमें ऐसी संसद की आवश्यकता नहीं है जो हमें बताये कि क्या करना है। हमें पता है हमें क्या करना है।" **इसके कारण गृह युद्ध (1918-20) प्रारम्भ हो गया,** जो बोल्शेविकों और व्हाइट्स (Whites) (मेंशेविक, सोशल रेवोल्युशनरी पार्टी और कैडेट्स जो वास्तविक लोकतंत्र चाहते थे) के बीच लड़ा गया।
- ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और जापान ने अपने सैनिकों को व्हाइट्स की सहायता के लिए भेजा, क्योंकि उन्हें डर था कि यदि बोल्शेविक विजयी हुए तो साम्यवाद रूस के बाहर भी

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

फ़ैल जाएगा। इसके अतिरिक्त वे यह भी चाहते थे कि रूस प्रथम विश्व युद्ध में पुन: प्रवेश करे {रूस ने अक्टूबर क्रांति के पश्चात बोल्शेविकों द्वारा हस्ताक्षरित ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि (Treaty of Brest Litovsk- 1917) के माध्यम से स्वयं को प्रथम विश्व युद्ध से अलग कर लिया था)।

- अक्टूबर क्रांति के पश्चात कुछ सैनिक और श्रमिक बोल्शेविकों द्वारा सोवियत के साथ क्रूर व्यवहार किए जाने के कारण बोल्शेविकों के विरुद्ध थे। बोल्शेविकों ने रेड गार्ड्स की सहायता से सोशल रिवोल्युशनरियों और मेंशेविकों को सोवियत से बाहर का रास्ता दिखा दिया और एक कॉमिसार (Commissar- केंद्र द्वारा नियुक्त) को सोवियत का प्रमुख बना दिया। इस प्रकार सभी सोवियत बोल्शेविकों के सम्पूर्ण नियन्त्रण में आ गए। अगस्त 1918 में लेनिन की हत्या का प्रयास किया गया। इसके पश्चात बोल्शेविक के रेड गार्ड्स ने जो कुछ किया उसे रेड टेरर (लाल आंतकवाद) के नाम से जाना गया, जिसमें कई व्हाइट्स की हत्या की गयी थी। गृह युद्ध के समय यूक्रेन और जार्जिया को फिर से रूस के साथ जुड़ने के लिए विवश किया गया। रूस ने इन क्षेत्रों को जर्मनी के साथ हुए ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि (1917) में गंवा दिया था। गृह युद्ध के दौरान ही अर्मेनिया और अजरबैजान में चल रहे स्वाधीनता संघर्ष को कुचल दिया गया था। इन दोनों ने प्रचलित संकट से प्राप्त अवसरों का लाभ उठाते हुए स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया था।

बोल्शेविकों की विजय के कारण

- व्हाइट्स भलीभांति संगठित नहीं थे और उनका कोई एकल केन्द्रीय नेतृत्व भी नहीं था।
- रेड आर्मी के पास अधिक सैनिक थे और इनके पास ट्रॉट्स्की के रूप में एक सक्षम नेता भी था।
- गृह युद्ध के दौरान व्हाइट्स द्वारा की गयी क्रूरताओं के कारण उन्होंने किसानों का समर्थन भी खो दिया था।
- लेनिन बोल्शेविकों को विदेशी सेना से लड़ रहे राष्ट्रवादियों के रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहा।
- युद्ध साम्यवाद (war communism) ने बोल्शेविकों को युद्ध के दौरान संसाधनों की बचत में सहायता की। युद्ध साम्यवाद के अंतर्गत सभी कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया और सभी प्रकार के निजी व्यापार को प्रतिबंधित कर दिया गया ताकि सभी संसाधन सीधे पार्टी को प्राप्त हों। इसके अतिरिक्त किसानों से सभी खाद्यान्नों को सेनाओं और उन श्रमिकों को खिलाने के लिए जब्त किया गया जो बोल्शेविकों के समर्थन का आधार थे।

इस प्रकार रूस में साम्यवादी क्रांति सफल रही और 1920 तक अपनी स्थिरता तक पहुंच गई थी।

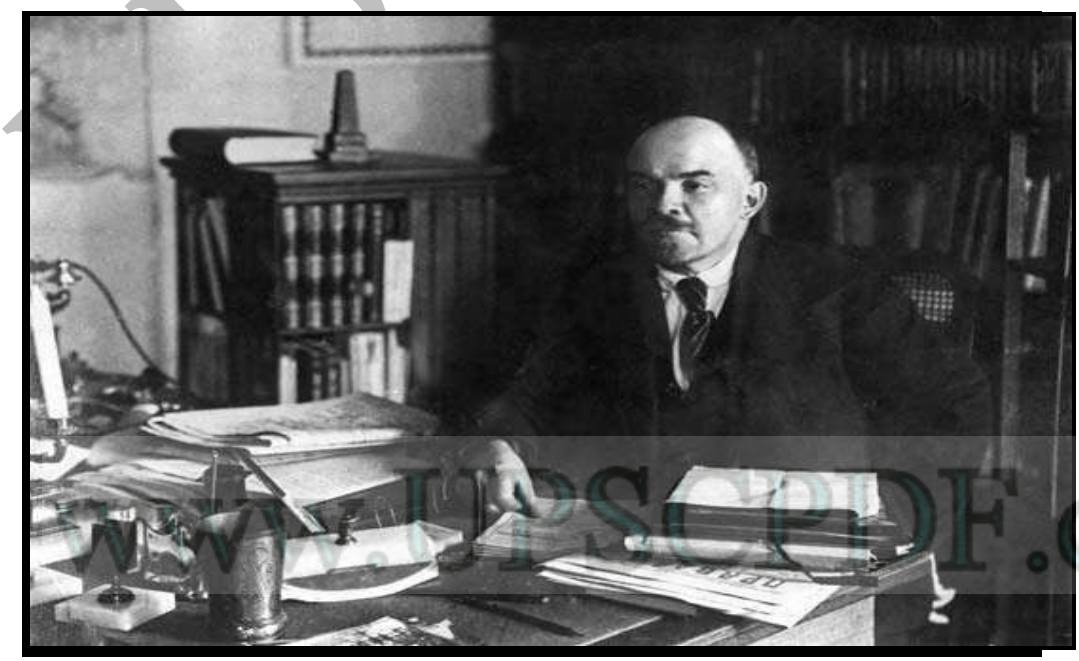

चित्र: लेनिन

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

14. लेनिन और मार्क्सवाद

लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने 1917 में रूस की कम्युनिस्ट क्रांति का नेतृत्व किया था। इस क्रांति का रूसी व्यवस्था पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। लेनिन द्वारा अनुसरण की गई नीतियों और मार्क्सवादी विचारधारा के अंतर्गत प्रतिपादित किये गए सिद्धांतों की तुलना हम निम्नलिखित बिन्दुओं से कर सकते हैं:

- **कम्युनिस्ट क्रांति कब प्रारम्भ किया जाए, इससे संबंधित प्रश्न:** मार्क्स ने तर्क दिया कि किसी देश के श्रमिक (कामगार) कम्युनिस्ट क्रांति तभी आरम्भ करेंगे जब उक्त देश पूर्ण रूप से औद्योगीकृत हो जाएगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि मार्क्स ने क्रांति के लिए श्रमिक वर्ग को सबसे अधिक क्रान्तिकारी वर्ग माना था और दूसरा जब समाज का पूर्ण औद्योगिकीकरण हो जाएगा तो वहाँ की जनसंख्या में श्रमिकों का ही बहुमत होगा। इस प्रकार कट्टर मार्क्सवादियों (मेंशेविकों) ने क्रांति में तब तक विलम्ब करने को कहा जब तक समाज का सम्पूर्ण औद्योगिकीकरण न हो जाए। दूसरी ओर लेनिन को 1917 में बहुत जल्दी थी। वह इस कठोर धारणा के विरुद्ध था कि साम्यवादी क्रांति होने के लिए सम्पूर्ण औद्योगीकरण एक पूर्व-आवश्यकता है। कम्युनिस्ट क्रांति के क्षेत्र में श्रमिकों के बहुमत की कमी को पूरा करने के लिए किसानों को सम्मिलित करके वह तुरंत क्रांति करना चाहता था। इस प्रकार लेनिन ने 1917 की क्रांति के समय भूमि के पुनर्वितरण के लिए भूमि सुधारों पर बल दिया। उसने अपनी नई आर्थिक नीति (1921) में भूमि और कृषि उत्पाद के निजी स्वामित्व का समर्थन किया।
- इस प्रकार मार्क्स ने प्रोलिटेरियट (श्रमिक वर्ग) क्रांति के लिए तर्क दिया, जबकि लेनिन ने किसानों और श्रमिक वर्ग दोनों के सहयोग से क्रांति की बात की।
- **व्यवहारिकता (Pragmatism):** मार्क्स राज्य और उसकी संस्थाओं के विरुद्ध था। उदाहरण के लिए, मार्क्स सेना, न्यायपालिका और नौकरशाही का विरोधी था, क्योंकि ये संस्थाएँ पूंजीवाद का सरंक्षण करती थीं। दूसरी ओर लेनिन ने राज्य की मशीनरी का उपयोग साम्यवाद के सरंक्षण के लिए किया।
- **युद्ध साम्यवाद (War Communism):** लेनिन द्वारा इसका आरम्भ गृहयुद्ध (1918-20) के दौरान संसाधनों को जुटाने और उनके संरक्षण के लिए किया गया था। सभी कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया और सभी प्रकार के निजी व्यापार को प्रतिबंधित किया गया, जिससे संसाधन सीधे पार्टी को प्राप्त हो सकें। इसके अतिरिक्त किसानों से सम्पूर्ण खाद्यान्न को सेना और उन श्रमिकों को खिलाने के लिए जब्त किया गया जो बोल्शेविकों के समर्थन का आधार थे। युद्ध साम्यवाद के कारण गृह युद्ध के पश्चात खाद्यान्नों की कमी हो गयी। पुनः किसानों को उत्पादन के लिए कोई प्रोत्साहन भी नहीं दिया गया। उनके उत्पाद को बिना किसी मुआवजे के उनसे ले लिया जाता था। इस प्रकार से किसानों ने केवल अपने उपभोग के लिए उत्पादन करना आरम्भ कर दिया।
- लेनिन और मार्क्स दोनों का ही यह तर्क था कि युद्ध का वास्तविक कारण पूँजीवाद, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद था।

लेनिन की नई आर्थिक नीति, उसके द्वारा लाया गया राजनीतिक परिवर्तन और उसके विचारों और नीतियों की समालोचनात्मक व्याख्या:

लेनिन की नई आर्थिक नीति (New Economic Policy or NEP: 1921)

- प्रथम विश्व युद्ध से खुद को अलग करने के लिए रूस ने जर्मनी के साथ जो ब्रेस्ट लिटोवस्क (1917) की संधि की थी, उसके परिणामस्वरूप रूस को अत्यधिक आर्थिक क्षति पहुंची थी। इस संधि के कारण रूस ने अपनी एक तिहाई कृषि योग्य भूमि, एक तिहाई जनसंख्या, एक तिहाई कोयला खदानें और आधे भारी उद्योग गंवा दिए थे। यह इसलिए हुआ कि संधि के उपरांत यह यूक्रेन, जार्जिया, लाटीविया, लिथुआनिया, फिनलैंड और पोलैंड के क्षेत्रों से वंचित हो गया था। (गृहयुद्ध के दौरान कमजोर जर्मनी से यह जार्जिया और यूक्रेन वापस लेने में सफल रहा और आगे चलकर यह द्वितीय विश्व युद्ध में बाल्टिक देशों और पोलैंड के कुछ भाग प्राप्त करने में भी सफल रहा)।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- गृहयुद्ध (1918-20) की समाप्ति के पश्चात लेनिन अपनी दो इच्छाएं पूरी करना चाहता था। पहली, आर्थिक सुधार की और दूसरी, कृषकों और श्रमिकों के बीच सामंजस्य जोकि युद्ध साम्यवाद से आहत हुए थे। कम्युनिस्टों के प्रमुख समर्थक श्रमिक थे, वहीं गृह-युद्ध में कृषक बोल्शेविकों के विरुद्ध लड़े थे, क्योंकि लेनिन ने 1917 के लोकतान्त्रिक चुनावों के पश्चात संविधान बनाने के लिए गठित संविधान सभा को भंग कर दिया था। इन चुनावों में सोशल रिवोल्युशनरी पार्टी (कृषकों के समर्थन पर आधारित) ने अधिकतम सीटों पर विजय प्राप्त की थी। साथ ही सदन की चर्चाओं में उन्होंने बोल्शेविकों को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया। इसका कारण था कि जनसंख्या में बहुमत कृषकों का था, श्रमिकों का नहीं। पुनः इसका कारण यह भी था कि रूसी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित थी। युद्ध साम्यवाद ने किसानों को बोल्शेविकों से और दूर कर दिया था। इन दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लेनिन ने निम्नलिखित कदम उठाये:
    - लेनिन ने ब्रिटिश निवेश (FDI) प्राप्त करने के लिए ब्रिटेन के साथ 1921 में एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य रूस के औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करना था।
    - लेनिन ने **नई आर्थिक नीति (NEP: 1921-27)** आरम्भ की जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं थीं:
        - मुख्य रूप से यह नीति किसान कल्याण और विकास को बढ़ावा देने के लिए थी।
        - विकास को प्रोत्साहित करने के लिए NEP एक अस्थाई उपाय था।
        - भूमि के निजी स्वामित्व की अनुमति प्रदान की गयी और खाद्यान्न के उत्पादन के लिए पूँजीवाद प्रोत्साहन का उपयोग करना। कर भुगतान (जो अतिरिक्त उपज पर देय था) के पश्चात किसानों को अतिरिक्त उत्पादन अपने पास रखने की अनुमति थी।
        - लघु उद्योगों के लिए निजी स्वामित्व प्रदान किया गया। जबकि कोयला, लोहा और इस्पात तथा रसायन जैसे उद्योग राज्य के स्वामित्व में थे। इसी प्रकार से ऊर्जा, परिवहन, बैंकिंग भी राज्य के नियन्त्रण में थे।
        - लघु कारखानों द्वारा उत्पादित माल के व्यापार में निजी स्वामित्व।
        - लेनिन ने बोनस, प्रति नग वेतन दर (piece wage rates) आदि जैसे पूंजीपति उपायों को प्रारम्भ करने की अनुमति दी।
        - जिन प्रबंधकों को 1917 की क्रांति के पश्चात हटा दिया गया था उन पुराने प्रबंधकों को लेनिन ने वापस बुलाया। यह कारखानों के उत्पादन में सुधार लाने के लिए किया गया था।
        - पार्टी के वामपंथी सदस्यों ने NEP का विरोध किया क्योंकि उन्हें लगता था कि इसके कारण कुलकों (समृद्ध कृषक जमींदार) की संख्या में वृद्धि होगी।
        - लेनिन के दीर्घकालीन समाधानों में शामिल थे- अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियन्त्रण, कृषि उत्पादन में बड़े स्तर के लाभ प्राप्त करने के लिए खेतों का सामूहिकीकरण (collectivization)। सामूहिकीकरण को 1924 में लेनिन की मृत्यु के पश्चात ही प्राप्त किया जा सका था।
        - NEP बहुत अधिक सफल नहीं हुई। सामान्य लोगों की स्थिति यद्यपि बेहतर थी परन्तु भोजन की कमी लगातार बनी रही।

लेनिन द्वारा प्रारम्भ किए गए राजनीतिक परिवर्तन

- 1921 में गुटबंदी पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। यह पार्टी के अंदर असहमति को रोकने के लिए किया गया था। जब तक निर्णय न हो जाये स्वतंत्र चर्चा की अनुमति थी। परन्तु निर्णय हो जाने के पश्चात सभी पार्टी के सदस्यों को उस निर्णय का समर्थन करना था और उसके कार्यान्वयन के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य करना था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- **शुद्धिकरण (Purging) (पार्टी से बलात निष्कासन):** 1921 के दौरान गुप्त पुलिस के सहयोग से लगभग एक तिहाई पार्टी सदस्यों को या तो देश से निष्कासित कर दिया गया या फिर उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। कई सदस्यों ने NEP के विरोध में त्यागपत्र दे दिया।
- लेनिन के शासन के अंतर्गत ट्रेड यूनियन 100 प्रतिशत स्वतंत्र नहीं थे: लेनिन ने ट्रेड यूनियनों की इस मांग को निरस्त कर दिया था कि उन्हें कारखाने चलाने देने चाहिए (क्योंकि NEP के अंतर्गत पुराने प्रबंधकों को वापस लाया गया था)। लेनिन के अनुसार ट्रेड यूनियन का कार्य केवल उत्पादन वृद्धि में सहायता करना और सरकार के आदेशों का कठोरता से पालन करना था।

लेनिन की आलोचना

- जब 1917 की क्रांति के पश्चात उसने संविधान सभा को भंग किया तो उसने प्रजातंत्र की स्थापना में व्यवधान डाला था।
- गृह युद्ध के दौरान **रेड टेरर** में कई विरोधियों को मौत के घाट उतारा गया था।
- उसकी कई ऐसी नीतियां थीं, जिनका कालान्तर में स्टालिन द्वारा दुरूपयोग किया गया था जैसे:
  - एकल पार्टी राज्य,
  - गुटबंदी पर प्रतिबन्ध, जिसका अर्थ था पार्टी के अंदर असहमति को रोकना।
  - अपने विरोधियों के विरुद्ध गुप्त पुलिस का उपयोग और
  - ट्रेड यूनियनों की शक्ति और आवाज को कम करना।

1924 में लेनिन की मृत्यु के पश्चात भविष्य में कार्य करने के उपायों और समाज में समानता लाने हेतु कुछ अन्य दृष्टिकोणों पर चर्चा हुई। इसके तहत समाजवाद के मुख्य लक्ष्य का सुझाव दिया गया:

- **त्वरित औद्योगिकीकरण:** चर्चा के दौरान एक दृष्टिकोण यह था कि किसान समर्थक NEP को छोड़ कर त्वरित औद्योगिकीकरण पर ध्यान देना चाहिए। इस दृष्टिकोण के समर्थकों का तर्क था कि एक साम्यवादी राज्य श्रमिकों के समर्थन पर आधारित होता है, कृषक समर्थन पर नहीं। उन्हें डर था कि NEP से कुलकों (समृद्ध किसान जमींदार) की संख्या में वृद्धि होगी, जो न केवल समानता के लक्ष्य बल्कि कम्युनिस्ट क्रांति के लिए भी संकट बन जायेंगे। यह विचार मेंशेविकों द्वारा प्रस्तावित विचार जैसा ही था अर्थात् श्रमिकों और औद्योगिकीकरण पर ध्यान दो।
- **सम्पूर्ण देश में समाजवाद (Socialism in One Country):** यह दक्षिणपंथी कम्युनिस्ट नेताओं का दृष्टिकोण था जो किसान समर्थक और NEP समर्थक थे। वे संपत्ति के सीमित निजी स्वामित्व और विकास में वृद्धि के लिए पूंजीवाद की विशेषताओं का उपयोग भी करना चाहते थे। इस दृष्टिकोण के तहत निम्नलिखित बातों पर बल दिया गया:
  - **किसानों की समृद्धि (Prosperity of Peasants):** इसके तहत किसानों की समृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करके उन्हें निजी संपत्ति के स्वामित्व का अधिकार प्रदान करके रूस में सोवियत की शक्ति को संगठित करने की संकल्पना प्रस्तुत की गयी। क्योंकि इस दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना था कि किसान ही जनसंख्या के बहुसंख्यक भाग हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को सशक्त बनाने के लिए उनका समर्थन आवश्यक है। {**सोवियत;** परिषद के लिए रूसी भाषा का शब्द है। स्थानीय स्तर पर प्रशासन के लिए सोवियतों की स्थापना हुई थी। उनमें श्रमिकों एवं कृषकों दोनों की सदस्यता थी (कृषकों को सम्मिलित किया जाना आवश्यक था क्योंकि वे जनसंख्या का अधिकतम भाग थे)। मार्क्सवादी विचारकों और लेनिन के अनुसार सोवियत वह संस्थाएं हैं जो श्रमिकों की प्रजातांत्रिक इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसलिए ये (सोवियत) प्रोलीटेरियट की तानाशाही लाने के लिए आवश्यक हैं}।
  - **क्रमिक औद्योगिकीकरण (Gradual Industrialization):** तीव्र गति से प्राप्त किए जाने वाले औद्योगिकीकरण के बजाए क्रमिक (धीमे) औद्योगिकीकरण का सुझाव दिया गया। कुछ इसी प्रकार का दृष्टिकोण माओ ने अपने ग्रेट लीप फॉरवर्ड (1958) में भी अपनाया था जिसकी चर्चा आगे की जाएगी।

VISION IAS

- **स्थाई क्रांति (Permanent Revolution):** लेनिन के विश्वासपात्र ट्रॉट्स्की ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया था। इसका आशय यह था कि रूस से बाहर भी कम्युनिस्ट क्रांति लायी जाए और एक बार जब इसे प्राप्त कर लिया जाएगा तो रूस की कम्युनिस्ट क्रांति को कोई संकट नहीं होगा। इसलिए यह क्रांति 'स्थाई' होगी क्योंकि सम्पूर्ण विश्व या कम से कम रूस के निकटतम पड़ोसी तो कम्युनिस्ट होंगे। यदि इसे एक बार प्राप्त कर लिया जाता है तो पश्चिमी यूरोप के वे देश जो पहले ही से औद्योगिकीकृत हैं, रूस के औद्योगिकीकरण में सहायक होंगे।

15. भारत में समाजवाद

- समाजवाद के भारतीय मॉडल को संविधान में परिभाषित नहीं किया गया है लेकिन 42वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा प्रतिस्थापित अनुच्छेद 43A से यह स्पष्ट है कि प्रस्तावना द्वारा यथा परिकल्पित समाजवाद में उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी और परिणामस्वरूप लाभ में श्रमिकों की साझेदारी सम्मिलित है।
- डी.एस.नकारा बनाम भारतीय संघ (1982) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया था कि भारतीय समाजवाद का लक्ष्य गांधीवादी समाजवाद की ओर अधिक झुकाव के साथ मार्क्सवाद और गांधीवाद का मिश्रण प्राप्त करना है।
- 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से भारत उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व की अवधारणा से दूर हट गया। लेकिन फिर भी, समाजवाद राष्ट्रीय बहस को प्रभावित करता रहा। निम्नलिखित को भारतीय समाजवाद के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है:
  - सभी के लिए समान अवसर।
  - राज्य द्वारा कानून निर्माण के माध्यम से और राज्य द्वारा कार्यान्वित कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से असमानताओं में कमी। भारतीय संविधान ने पूंजीवाद के प्रमुख नकारात्मक लक्षणों पर अंकुश लगाने के लिए सुरक्षात्मक उपायों को समाविष्ट करने का प्रयास किया है। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों का कारखानों, खदानों और अन्य खतरनाक रोजगारों में नियोजन (बाल श्रम) संविधान के अनुच्छेद 24 द्वारा प्रतिबंधित है तथा श्रमिकों की आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948 विद्यमान है।
  - राज्य विनियमन और कानूनों के माध्यम से समाज में धन-संपत्ति के संकेंद्रण की रोकथाम।
  - अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर सार्वजनिक नियंत्रण। विशेष रूप से भारी उद्योग और अन्य पूंजी गहन क्षेत्रों में एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र।
  - भारी उद्योगों और यंत्रीकरण पर बल।
  - भारत ने जमींदारी पर प्रतिबंध लगाने के बाद भूमि के पुनर्वितरण के लिए कार्यक्रम कार्यान्वित करने का प्रयास किया था। इसके साथ ही सहकारी कृषि के माध्यम से हमने कृषि का सामूहिकीकरण करने का प्रयास किया था। सहकारी कृषि के अंतर्गत किसान सहकारी कृषि के लिए अपनी भूमि देकर सहकारी समितियों में स्वयं को स्वेच्छा से संगठित करते हैं। वे भूमि पर कानूनी अधिकार बनाए रखते हैं लेकिन भूमि पर कृषि संयुक्त रूप से करते हैं। सहकारी निकाय किसानों को ऋण, बेहतर बीज और उर्वरक प्रदान करते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से कृषि करने वाले किसानों के लिए वहनीय नहीं होते हैं। सोवियत संघ के विपरीत भारत में सहकारी कृषि स्वैच्छिक पहल थी, जिसने किसानों को सामूहिक कृषि के पक्ष में अपनी भूमि देने के लिए बाध्य किया था। भारत इसमें केवल आंशिक रूप से सफल रहा क्योंकि कुछ वर्गों को संदेह था कि समय गुजरने के साथ किसान अपना भू-स्वामित्व खो देंगे। इसके साथ ही, चूँकि कृषि राज्य का विषय है, इसलिए अलग-अलग राज्यों ने अलग-अलग सफलता दर के साथ सहकारी कृषि का अलग-अलग संस्करण कार्यान्वित किया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- भारतीय समाजवाद को विकासवादी और सुधारवादी कहा जा सकता है।
- यह व्यक्तिगत हित और सामूहिक हित के बीच सामंजस्य पर केंद्रित है। हमने मिश्रित अर्थव्यवस्था अर्थात धनसंपत्ति के सार्वजनिक और निजी स्वामित्व की विशेषताओं वाली अर्थव्यवस्था को अपनाया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत में ऐसा समाजवाद है जो पूंजीवाद और लोकतंत्र के साथ सह-अस्तित्व रखता है।
- भारतीय समाजवाद को प्राय: लोकतांत्रिक समाजवाद कहा जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यूरोप में जिसे सामाजिक लोकतंत्र कहा जाता है, वह समाजवाद के भारतीय स्वरूप के के अधिक निकट है।
- भारतीय समाजवाद फ्रांसीसी क्रांति के स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विचारों से प्रेरित है।
- मार्क्सवाद, सामाजिक लोकतंत्र, लोकतांत्रिक समाजवाद, अराजकतावाद से लेकर गांधीवाद तक भारतीय समाजवादी आंदोलन के कई रंग थे।
- स्टालिन के शुद्धिकरण से पहले मार्क्सवाद एक प्रमुख धारा थी। मेरठ सम्मेलन में भारतीय समाजवादियों ने अपने पंथ के रूप में मार्क्सवाद को अपनाया था। लेकिन स्टालिन के शुद्धिकरण के बाद भारतीय समाजवादियों ने मार्क्सवाद से मुँह फेर लिया क्योंकि मार्क्सवाद हिंसक क्रांति की मांग करता था। हिंसक उपायों से हुए इस मोहभंग ने भारतीय समाजवादियों को अहिंसा पर बल देने के साथ लोकतांत्रिक समाजवाद की ओर मोड़ दिया और उन्होंने तर्क दिया कि "लोकतंत्र के बिना समाजवाद असंभव है"।
- 1931 के कराची सत्र में राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम में अमीर-गरीब की खाई पाटने के लिए 'प्रमुख उद्योगों के राष्ट्रीयकरण' और अन्य उपायों का उल्लेख किया गया था। इसके साथ ही इस सत्र में विकास के समाजवादी ढांचे को भारत का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।
- हमने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से निर्देशित अर्थव्यवस्था अपनाई। हरिपुरा सत्र (1938) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना की थी जिसके अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू थे।
- प्रधानमंत्री नेहरू ने "समाज का समाजवादी ढांचा" (socialist pattern of society) शब्द का प्रयोग किया था। यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाजवाद को वर्गीकृत करना मुश्किल है और यह अद्वितीय है:

- इसका उद्देश्य न केवल वर्गहीन समाज का निर्माण करना है बल्कि जाति-रहित समाज का भी निर्माण करना है। इस प्रकार हमने समाज में असमानता कम करने के लिए आरक्षण की नीति अपनाई। यह कहा जा सकता है कि हमारे समाज की विशिष्ट विशेषताओं के कारण हमने दोनों प्रकार की असमानताओं को लक्षित किया है, चाहे यह वर्ग आधारित (जमींदारी पर प्रतिबंध) हो या जाति आधारित (अस्पृश्यता पर प्रतिबंध और सार्वजनिक नियोजन में आरक्षण)।
- इसका लक्ष्य गरीबी कम करना, सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ाना और न्यायसंगत आर्थिक विकास करना है।
- गांधीवाद के अहिंसा, सत्ता के विकेन्द्रीकरण और विशेष रूप से ट्रस्टीशिप और मध्यस्थता के विचार का भारतीय समाजवाद पर गहरा प्रभाव पड़ा है। ट्रस्टीशिप की अवधारणा यह प्रतिपादित करती है कि पूंजीपति ट्रस्टी है और वह केवल श्रमिकों की ओर से धन-संपत्ति रखता है। ये श्रमिक ही अर्थव्यवस्था में मूल्य के वास्तविक उत्पादक हैं। चूंकि पूंजीपति ट्रस्टी है, इसलिए उसे श्रमिकों के हितों का ध्यान रखना चाहिए और उनके कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। मध्यस्थता की

VISION IAS

अवधारणा को औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 के माध्यम से कार्यान्वित किया गया है जिसका उद्देश्य पूंजीपतियों और श्रमिकों के बीच मतभेदों को सुलझाने के लिए मध्यस्थता की पद्धति का उपयोग करना है।

भारतीय समाजवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण

- स्वतंत्रता के बाद भारत ने समाजवाद को अंगीकृत किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अधिकांश नेता जैसे कि जवाहरलाल नेहरू, जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया समाजवाद के प्रबल पक्षधर थे। इसलिए समाज का समाजवादी ढांचा नियोजित अर्थव्यवस्था के लक्ष्यों में से एक लक्ष्य के रूप में घोषित किया गया। उस समय भारत ने फेबियन प्रकार के सामूहिक नियंत्रण के साथ लोकतंत्र को संयोजित करने का प्रयास किया; जिसने आयात और निर्यात के विनियमन, उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन पर अंकुश और औद्योगिक *सेट-अप* (ढांचे) की लाइसेंसिंग का मार्ग प्रशस्त किया। गरीबी निवारण और आत्मनिर्भरता की प्राप्ति को दो प्रमुख लक्ष्यों के रूप में स्वीकार किया गया। नेहरू ने संसाधन जुटाने और रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के लिए आर्थिक जीवन में राज्य के अधिक से अधिक हस्तक्षेप द्वारा सामूहिक क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास किया। हालांकि, 1991 के बाद भूमंडलीकरण की बाध्यताओं के चलते भारत को अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण करना पड़ा।
- स्वतंत्रता के बाद कोयला, इस्पात, बैंक और बिजली जैसे आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने के लिए भी कदम उठाए गए। सरकार ने आवास, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि के लिए कार्यक्रम आरंभ किए। लेकिन इस प्रकार के समाजवाद को केवल इस अर्थ में हम समाजवादी राज्य कह सकते हैं कि यहां राज्य ने कुछ संसाधनों का पुनर्वितरण किया लेकिन समाजवाद की आदर्श परिभाषा के अनुसार हम इसे समाजवादी राज्य नहीं कह सकते।
- इसमें कोई संदेह नहीं है कि समाजवाद आवश्यक है, लेकिन मात्र सेवाओं के प्रबंधन और अर्थव्यवस्था पर सरकारी नियंत्रण से समाजवाद नहीं आता है। भारत में अपनाया गया केन्द्रीकृत नियोजन एक समान आर्थिक विकास की प्रणाली का निर्माण करता है, जो व्यक्तिगत आकांक्षाओं की स्थानीय विविधता का पूरी तरह से ध्यान नहीं रखता है। इसलिए देश में समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राजनीतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण महत्वपूर्ण है। यह भी अनुभव किया गया कि सार्वजनिक स्वामित्व और आर्थिक अनुदान अपना मुनाफा बढ़ाने में केवल बड़े-बड़े निगमों की सहायता करते हैं। इनसे व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा का जोखिम कम हो जाता है। यहां तक कि प्रगतिशील कराधान प्रणाली पर भी मजदूरी अर्जन करने वाले की तुलना में अति-समृद्ध लोगों का पक्ष लेने का आरोप लगाया जाता है। इस प्रकार की व्यवस्था ने जनता के बीच अति-समृद्ध लोगों की संपत्ति के पुनर्वितरण में बहुत कम योगदान दिया है।
- इसलिए भारत में यदि समाजवाद वास्तविकता में अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है तो इसे सबसे पहले स्वयं को रूपांतरित करना होगा। संभवतः समाजवाद को एक ओर उदारवाद और दूसरी ओर मार्क्सवाद के बीच संतुलन बनाना चाहिए।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

मुख्य विषय वस्तु 1: स्टालिनवाद आधिकारिक रूप से मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पालन करते हुए साम्यवादी समाज विकसित करने की नीति थी, जिसकी कल्पना और कार्यान्वयन जोसफ स्टालिन ने की था। सोवियत संघ की स्टालिनवादी नीतियों में सम्मिलित थीं: भारी उद्योगों पर ध्यान देने के साथ तेजी से औद्योगिकीकरण, राज्य का केंद्रीकरण और कृषि का सामूहिकीकरण। स्टालिन द्वारा की गई दमनकारी राजनीतिक कार्रवाइयों के कारण, "स्टालिनवाद" का प्रयोग प्राय: नकारात्मक या अपमानजनक रूप में किया जाता है।

16. स्टालिनवाद

- 1922 में जोसफ स्टालिन को पार्टी की केंद्रीय समिति का महासचिव नियुक्त किया गया। लेकिन स्टालिनवाद का आरंभ 1929 से हुआ। जब 1924 में स्टालिन ने ट्रॉट्स्की और अन्य नेताओं को लेनिन की मृत्यु के बाद होने वाले सत्ता संघर्ष में पराजित कर अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर लिया।

चित्र: जोसफ स्टालिन

16.1. स्टालिन के समक्ष चुनौतियाँ और उसका समाधान

जिस समय स्टालिन सत्ता में आया, रूस चार प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहा था। ये चुनौतियाँ थीं- खाद्यान्नों की कमी, निकृष्ट सेना, घटिया उद्योग और पूँजीवादी पश्चिमी देशों का बढ़ता प्रभाव। स्टालिन ने इन चुनौतियों से निपटने का इस प्रकार प्रयास किया:

- उसने भारी उद्योगों पर बल देने के साथ पंचवर्षीय योजनाएं आरंभ कीं।
- उद्योगों का राष्ट्रीयकरण।
- 1929 में नई आर्थिक नीति का परित्याग।
- कुलकों (बड़े और समृद्ध किसान) की हिंसक बेदखली द्वारा कृषि का सामूहिकीकरण।
- अधिनायकवादी शासन का प्रारंभ, जिसकी विशेषता गुप्त पुलिस का अधिक से अधिक उपयोग और असंतोष प्रकट करने वाली किसी भी आवाज का गला घोंटना था। लेनिन के महत्वपूर्ण सहयोगी ट्रॉट्स्की को रूस से निर्वासित कर दिया गया।
- पुनर्सैन्यीकरण।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास पर बल।
- आक्रामक विदेश नीति जो पश्चिमी शक्तियों विशेषकर अमेरिका को शत्रु के रूप में देखती थी।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

16.2. स्टालिन ने भारी उद्योगों पर बल क्यों दिया?

- स्टालिन ने भारी उद्योगों पर बल देने की नीति अपनाई। सोवियत संघ ने कोयला, इस्पात, तेल, लोहा आदि जैसे भारी उद्योगों में अधिक पूँजी निवेश किया और हल्के उद्योगों की उपेक्षा की। हल्के उद्योग भारी उद्योगों की तुलना में कम पूँजी गहन और अधिक उपभोक्ता उन्मुख और व्यापार उन्मुख होते हैं। इस प्रकार टिकाऊ और गैर-टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं की सोवियत संघ में कमी थीं और इससे दैनिक आवश्यकताओं और सामान्य लोगों के जीवन को हानि पहुँची। वहीं दूसरी ओर भारी उद्योगों ने अर्थव्यवस्था में आधारभूत संरचना का निर्माण किया और आर्थिक विकास के लिए आधार प्रदान किया।
- सोवियत संघ ने भारी उद्योगों पर बल देने की यह नीति इसलिए अपनाई क्योंकि:
    - स्टालिन का मानना था कि पूँजीवादी पश्चिम के साथ साम्यवादी रूस का युद्ध अपरिहार्य था। जब 1941 में जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया तो यह सही सिद्ध हुआ।
    - अत्यधिक औद्योगिकीकरण से कार्यबल में श्रमिकों की संख्या, किसानों की संख्या से ज्यादा होती है। ये औद्योगिक श्रमिक ही थे जो साम्यवाद का समर्थन करते थे। स्टालिन किसानों, विशेषकर कुलकों (समृद्ध किसान) को समाजवाद के शत्रु के रूप में देखता था (माओवाद इसी बिंदु पर रूसी मॉडल से दूर हो जाता है)। इस प्रकार स्टालिन का मानना था कि भारी औद्योगिकीकरण से साम्यवादी राज्य की स्थिरता का मार्ग प्रशस्त होगा।

16.3. पंचवर्षीय योजनाओं का शुभारंभ

- पहली (1928-32) और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं (1933-37) ने निर्धारित समय से एक वर्ष पहले अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। पहली योजना के दौरान, विदेशी निवेश अनुपलब्ध था क्योंकि रूस ने ज़ार शासन द्वारा उठाए गए युद्ध ऋणों को लौटाने से मना कर दिया था। यह इसलिए भी था क्योंकि औद्योगिक देश स्वयं भी 1930 के दशक के दौरान महामंदी का सामना कर रहे थे। इस प्रकार स्टालिन ने आंतरिक बचतों और निवेश पर निर्भर रहने का विकल्प चुना। उसने कृषि क्षेत्र का उपयोग पूँजी के स्रोत के रूप में करने का निर्णय लिया। दूसरे शब्दों में, उसने कृषि क्षेत्र को पूंजी संचय के स्रोत के रूप में चुना। कृषि का सामूहिकीकरण पहली योजना के दौरान आरंभ किया गया। औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए लाभों के पुनर्निवेश पर बल दिया गया।
- पहली योजना (1928-32) के दौरान किए गए विशाल निवेश के चलते, दूसरी योजना (1933-37) में उद्योगों का विस्तार हुआ। इस प्रकार वैश्विक महामंदी ने पूँजीवादी व्यवस्था को बदनाम कर दिया और मार्क्सवाद, समाजवाद और आर्थिक नियोजन की ओर ध्यान आकर्षित किया। फलस्वरूप भारत जैसे देशों में भी समाजवादी विचारों ने अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करना आरंभ किया। जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस से समाजवाद को लक्ष्य के रूप में स्वीकार करने का आग्रह किया।
- तीसरी योजना के दौरान (1938-41), शस्त्रीकरण क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया गया क्योंकि यूरोप महाद्वीपीय युद्ध के निकट आ रहा था। चौथी योजना (1945 से आगे) जर्मन युद्ध क्षतिपूर्ति की सहायता से युद्ध के बाद पुनर्निर्माण पर केंद्रित थी और नई सुविधाएँ सृजित करने पर कम से कम ध्यान केंद्रित किया गया। पांचवीं योजना (1951-55) ने भारी औद्योगिकीकरण और परिवहन पर अपना ध्यान केंद्रित रखना जारी रखा।

इन योजनाओं के सामान्य पहलू इस प्रकार थे:

- इन योजनाओं में भारी उद्योगों पर ध्यान केंद्रित किया गया और ये काफी सफल भी रहीं। इस दौरान युराल पर्वत के पूर्व में सैकड़ों कारखानों की स्थापना की गई।
- भारी उद्योग में प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई, लेकिन कृषि क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों ने खराब प्रदर्शन किया।
- कई जल विद्युत संयंत्रों की स्थापना की गई।
- काकेशस के तेल-समृद्ध क्षेत्र में तेल शोधनशालाओं की स्थापना की गई।
- निवेश के घरेलू स्रोतों का प्रभावशाली तरीके से उपयोग किया गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- शिक्षित कुशल श्रमिकों को बढ़ावा दिया गया।
- टेलरवादी सिद्धांतों का उपयोग करके दक्षता पर अतिरिक्त ध्यान दिया गया। इस सिद्धांत के अंतर्गत कार्य को विशिष्ट भागों में तोड़ने और अधिकतम क्षमता के साथ प्रत्येक भाग को निष्पादित करने का प्रावधान था। रिकॉर्ड उत्पादन प्राप्त करने वाले श्रमिकों को स्टख़नोवाइट्स (Stakhanovites) के रूप में जाना जाता था।
- 1930 के दशक के मध्य तक जनता के लिए सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध हो गई थी।

16.4. कृषि का सामूहिकीकरण (1929)

- कृषि के सामूहिकीकरण के तीन उद्देश्य थे:
  - कृषि दक्षता में सुधार लाना और कृषि क्षेत्र से अतिरिक्त श्रमिकों को औद्योगिक क्षेत्र की ओर मोड़ना।
  - खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना और बड़े पैमाने पर किफायत के माध्यम से कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना, जो विखंडित भू-जोतों के समेकन और कृषि के अनुवर्ती मशीनीकरण से आता।
  - उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करना (उदाहरण के लिए, नकदी फसलें)।
- सामूहिकीकरण के लिए किसानों को विवश किया गया और यह स्वैच्छिक नहीं था। यह निर्मम भी था क्योंकि जो किसान इस कार्यक्रम का भाग बनने से मना करते थे प्राय: उनका क्रूरतापूर्वक दमन किया जाता था। आरंभ में, बाध्य सामूहिकीकरण के कठोर कार्यान्वयन के कारण ग्रामीण आबादी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और उत्पादकता में कमी आई। क्योंकि कुलकों ने राज्य को अपनी उपज ले जाने देने की बजाए अपने मवेशियों को मारकर और फसलों को जलाकर इसका प्रतिकार किया। 1932-33 में यूक्रेन में अकाल पड़ा और लाखों लोग भूख से मारे गए। 1932 तक, 60 प्रतिशत किसान परिवार सामूहिकीकरण कार्यक्रम में सम्मिलित हो गए थे लेकिन कृषि उत्पादन 23 प्रतिशत तक गिर गया। दूसरी योजना (1933-37) के दौरान कृषि उत्पादन में सुधार आया।
- **सामूहिकीकरण की सफलता:** कृषि का सामूहिकीकरण इस अर्थ में सफल रहा था कि 1937 तक, 90 प्रतिशत भूमि का सामूहिकीकरण हो गया था। मशीनीकरण के कारण 1937 तक खाद्यान्न उत्पादन में काफी वृद्धि हुई थी।

16.5. स्टालिनवाद का परिणाम

- स्टालिनवाद; लेनिनवाद और मार्क्सवाद दोनों के विपरीत था, क्योंकि- श्रमिकों और किसानों का उतना ही शोषण हो रहा था - जितना ज़ार शासन के दौरान होता था। राज्य ने जनता का दमन करने वाले पूंजीपतियों का स्थान ले लिया और इस प्रकार यहां वास्तव में कोई वर्गहीन समाज नहीं था। यह प्रसिद्ध तर्क है कि स्टालिन के शासन के अंतर्गत 'सभी लोग समान थे, लेकिन कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक समान थे'।
  - **शुद्धिकरण (Purges):** स्टालिन के शासन की एक अन्य विशेषता 'शुद्धिकरण' थी। इसका तात्पर्य स्टालिन या उसकी नीतियों का विरोध करने वाले पार्टी के किसी भी सदस्य को निर्वासन में भेजना, मुकदमा चलाना या कारावास देना या हत्या करना था।
  - लियोन ट्रॉटस्की सोवियत संघ से निर्वासित किया जाने वाला सबसे प्रमुख नेता था। ट्रॉट्स्की का विचार ट्रॉट्स्कीवाद का आधार था, ट्रॉट्स्कीवाद मार्क्सवादी विचारधारा का एक प्रमुख संप्रदाय है जो स्टालिनवाद के सिद्धांतों का विरोधी था। 1929 में उसे सोवियत संघ से निर्वासित कर दिया गया। बाद में 1940 में मेक्सिको में स्टालिन के आदेश पर उसकी हत्या कर दी गई। उसके परिवार के अधिकांश सदस्यों की भी अलग-अलग हमलों में हत्या कर दी गई।
  - स्टालिन की नीतियों का परिणाम एक क्रूर शासन था जिसकी विशेषता निरंकुश समाजवाद और एक व्यक्ति का शासन (एक दल के शासन की बजाए क्योंकि सभी मतभेदों को कुचल दिया जाता था) थी। स्टालिन ने अपने व्यक्तित्व-पूजा को बढ़ावा दिया। उसने 'लौह पुरूष (Man of Steel)' की उपाधि ग्रहण की, जिसका रूसी में स्टालिन के रूप में अनुवाद किया जाता है। उसका

वास्तविक नाम लोसिफ (जोसफ) विसारियनोविच झुगासविली (Iosif (Joseph) Vissarionovich Dzhugashvili) था। स्टालिन के शासन के अंतर्गत पार्टी की वास्तविक शक्ति में गिरावट आई। यद्यपि सभी निर्णय पार्टी द्वारा (कागज पर) लिए जाते थे, लेकिन वास्तविकता में निर्णय लेने की समस्त शक्ति स्टालिन के हाथों में केंद्रित थी।

- **भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं:** लेखकों, कलाकारों और संगीतकारों से सोवियत उपलब्धियों की महिमामंडन करने वाली रचनाएँ करने की आशा की जाती थी। शिक्षा को नि:शुल्क और अनिवार्य बनाकर विद्यार्थियों के विचार परिवर्तन का साधन बनाया गया।
- **सामाजिक सेवा:** स्टालिन के शासन के दौरान शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा के रूप में सामाजिक सेवाओं में वृद्धि हुई।
- **बलात श्रम:** स्टालिन के शासन के अंतर्गत बंदियों से बलात श्रम करवाया गया। गुलग स्टालिन के शासन के अंतर्गत ऐसी सरकारी एजेंसी थी, जो सोवियत संघ के श्रमिक शिविरों का प्रबंधन करती थी। गुलग राजनीतिक उत्पीड़न का प्रमुख साधन बन गई क्योंकि स्टालिन के विरोधियों को भी इन्हीं शिविरों में रखा गया था।
- **रूढ़िवादी चर्च के प्रति कठोर नीति:** स्टालिन ने रूढ़िवादी चर्च के प्रति कठोर नीति अपनाई। कई चर्चों को बंद कर दिया गया और पादरियों पर मुकदमा चलाया गया। यह स्टालिन द्वारा राजनीतिक सत्ता के सुदृढ़ीकरण का भाग था।
- **पृथकतावाद के प्रति शून्य सहनशीलता:** सोवियत संघ के गैर-रूसी धड़े द्वारा स्वायत्तता या स्वतंत्रता की मांग के प्रति स्टालिन को कोई सहानुभूति नहीं थी। गृहयुद्ध (1918-20) के दौरान सोवियत संघ द्वारा यूक्रेन और जॉर्जिया के क्षेत्रों को वापस प्राप्त करने में स्टालिन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्टालिन ने यह भी सुनिश्चित किया कि अज़रबैजान और आर्मेनिया रूस का भाग बने रहें। इन्होंने गृहयुद्ध के दौरान स्वतंत्रता की घोषणा की थी। स्टालिन ने अपने कार्यकाल के अंतर्गत *आयरन हैंड* की नीति जारी रखी। वास्तविक समस्या यह थी कि सोवियत संघ की 47 प्रतिशत आबादी गैर-रूसी थी।
- **आर्थिक क्षेत्र:** आर्थिक मोर्चे पर कुछ सुधार हुआ। भारी उद्योगों में सबसे ज्यादा वृद्धि हुई लेकिन अन्य क्षेत्रों में खराब प्रदर्शन हुआ। खाद्यान्नों की कमी लंबे समय तक जारी रही। इसके अलावा मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं की कमी थी, जो आम आदमी के दैनिक जीवन के लिए आवश्यक थीं।
- **शीत युद्ध:** स्टालिन के शासन के अंतर्गत, रूस संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ बड़े पैमाने पर शीत युद्ध में उलझ गया। इस प्रकार अमरीका के प्रति गहरा संदेह और अमेरिका और सोवियत संघ के बीच बिगड़ते संबंध स्टालिन के शासन की विशेषता थी। इस दौरान सोवियत संघ ने हथियारों के निर्माण पर बहुत धन व्यय किया।

- स्टालिन का कहना था कि 'पूंजीवाद पर अंतिम विजय तक पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व असंभव था'। हम एक अलग विषय के रूप में शीत युद्ध पर विस्तार से चर्चा करेंगे, फिर भी हम स्टालिन के शासन (1929-53) के दौरान शीत युद्ध के महत्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख कर सकते हैं। स्टालिन के अंतर्गत सोवियत संघ; संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ हथियारों की दौड़ में उलझ गया। सोवियत संघ के प्रभाव वाले क्षेत्रों को पश्चिम से अलग करने की स्टालिन की नीति का परिणाम यूरोप में लोहे के पर्दे (Iron Curtain) के रूप में प्रसिद्ध है। लोहे का पर्दा यूरोप और विशेषकर जर्मनी को दो भागों में विभाजित करता था, पहला रूसी प्रभाव वाले क्षेत्र में और दूसरा पश्चिमी प्रभाव वाले क्षेत्र में। लोहे का पर्दा, पर्दे के दोनों ओर के राष्ट्रों के बीच सभी तरह के संपर्कों में कमी को इंगित करता था। शीत युद्ध में मित्र देशों के संगठन का निर्माण करना भी सम्मिलित था। स्टालिन के अंतर्गत, सोवियत संघ ने वॉरसा संधि (NATO जैसा सैन्य गठबंधन), मोलोतोव योजना (सोवियत सहयोगियों को सहायता देने के लिए), कॉमिनफॉर्म (Cominform) (यूरोप के सभी साम्यवादी दलों का समूह जिसका गठन उन पर सोवियत संघ की मजबूत पकड़ सुनिश्चित करने के लिए किया गया था) और कॉमकॉन (Comecon) (कॉमिनफॉर्म की आर्थिक नीतियों का समन्वय करने वाला संगठन) की पहल की। अमेरिका और सोवियत संघ ने कभी भी प्रत्यक्ष युद्ध नहीं लड़ा लेकिन अन्य देशों के बीच युद्ध में विपरीत पक्षों का समर्थन किया; उदाहरण के लिए, कोरियाई युद्ध (1950), वियतनाम युद्ध का पहला चरण (1946-54) आदि।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

मुख्य विषय वस्तु 2: निकिता ख्रुश्चेव 1953 में शीर्ष नेता के रूप में उभरा। उसने स्टालिन के शुद्धीकरण को त्याग दिया और सोवियत संघ में दमन को कम किया। हालांकि, सामान्य नागरिकों का जीवन बेहतर बनाने की दिशा में लक्षित उसकी घरेलू नीतियाँ, विशेषकर कृषिक्षेत्र में अप्रभावी थीं। उसने अपने लक्ष्य के रूप में पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की घोषणा की, लेकिन उसका शासनकाल शीत युद्ध के सर्वाधिक तनावपूर्ण वर्षों का साक्षी बना जो क्यूबा के मिसाइल संकट के समय चरम पर पहुँच गया।

17. विस्टालिनीकरण (De-Stalinization)

- 1953 में स्टालिन का निधन हुआ और 1955 में पांचवीं योजना समाप्त हुई। विस्टालिनीकरण उन राजनीतिक और आर्थिक सुधारों की प्रक्रियाओं को निरुपित करता है जो स्टालिन की मृत्यु के बाद आरंभ हुई थीं। 1956 में साम्यवादी दल के प्रथम सचिव निकिता ख्रुश्चेव (1953-64) ने अपना दूरगामी भाषण दिया, जिसमें स्टालिन की निंदा की गई थी। 1956 के भाषण में,
    - ख्रुश्चेव ने पार्टी को शासन करने देने की बजाय व्यक्ति पूजा को बढ़ावा देने के लिए स्टालिन की निंदा की।
    - ख्रुश्चेव ने 1930 के दशक के दौरान स्टालिन द्वारा किए गए शुद्धिकरण का विवरण प्रकट किया।
    - ख्रुश्चेव ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान स्टालिन के नेतृत्व की आलोचना की।
    - ख्रुश्चेव ने दावा किया कि स्टालिन द्वारा प्रयोग किए गए उपायों से भिन्न उपायों और अहिंसा से समाजवाद प्राप्त किया जा सकता है।
    - ख्रुश्चेव ने तर्क दिया कि "पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व न केवल संभव है बल्कि परमाणु दुर्घटना से बचने के लिए आवश्यक भी है"।

निकिता ख्रुश्चेव द्वारा पालन की गई विस्टालिनीकरण की सामान्य नीति की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं के रूप में निम्नलिखित सुधारों को निरूपित किया जा सकता है, जिसे सोवियत संघ के इतिहास में युगांतरकारी परिवर्तन माना जाता है:

- **राजनीतिक सुधार:** पार्टी की प्रधानता पुनर्स्थापित की गई और व्यक्ति पूजा को त्याग दिया गया। स्टालिन के नाम पर रखे गए स्थानों के नाम परिवर्तित कर दिए गए। इसके साथ ही सीक्रेट पुलिस का उपयोग भी कम कर दिया गया। पर्यटन को बढ़ावा दिया गया और आम आदमी को अधिक स्वतंत्रता दी गई। इसके साथ ही प्रेस पर नियंत्रण भी कम कर दिया गया और इस प्रकार भाषण और अभिव्यक्ति की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता का उपभोग किया जा सकता था। ख्रुश्चेव ने शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का तर्क देकर पश्चिम के साथ तनाव कम करने का प्रयास किया, हालांकि क्यूबा मिसाइल संकट जैसी घटनाओं के कारण शीत युद्ध फिर भी जारी रहा जहाँ सोवियत संघ ने रूस को लक्ष्य करके यूरोप (तुर्की और इटली) में तैनात पश्चिमी देशों की मिसाइलों के प्रत्युत्तर में अमेरिका के बगल में परमाणु मिसाइलें तैनात कर दी थीं।
- **उद्योग**
    - पंचवर्षीय योजनाएं जारी रहीं लेकिन आम आदमी का जीवन स्तर ऊपर उठाने के उद्देश्य के साथ पहली बार मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करने वाले हल्के उद्योगों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
    - अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में विकेंद्रीकरण करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए, अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले संबंधित स्थानीय उद्योगों के संबंध में निर्णय लेने के लिए 100 क्षेत्रीय आर्थिक परिषदों का गठन किया गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- कारखानों का उत्पादन बढ़ाने के लिए मुख्यालय द्वारा दिया गया कोटा पूरा करने की बजाय प्रबंधकों को लाभ कमाने के लिए प्रोत्साहन राशि दी गई।
- गुलग श्रमिक शिविरों को बंद कर दिया गया, जिनका उपयोग कैदियों से बलात श्रम कराने के लिए किया जाता था।

- **कृषि:** 1954 में वर्जिन लैंड योजना आरंभ की गई। इसका तात्पर्य साइबेरिया और कजाकिस्तान में विशाल भू-क्षेत्र पर पहली बार खेती करना था। भूमि की खराब गुणवत्ता और धूलभरी आंधियों से मिट्टी का अपरदन (मिट्टी की सबसे ऊपरी परत सबसे अधिक उपजाऊ होती है) के कारण 1963 तक यह योजना बंद कर दी गई। इसके अतिरिक्त कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए सरकार ने खरीदी गई फसलों के लिए सामूहिक फार्मों को अधिक भुगतान किया। इससे सामूहिक फार्मों को अधिक उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन मिला। इसके साथ ही सामूहिक फार्मों के किसानों को अपने निजी भू-खंडों पर उगाई गई फसलें रखने या बेचने की अनुमति दी गई। लेकिन अभी भी कृषि क्षेत्र में बहुत अधिक केंद्रीकरण बना हुआ था जिससे कृषि क्षेत्र में पिछड़ापन बना हुआ था। सोवियत संघ को अमेरिका से अनाज का आयात करना पड़ता था।
- **संशोधनवाद (Revisionism):** अतिवादी मार्क्सवादियों द्वारा ख्रुश्चेव पर साम्यवाद के मूलभूत सिद्धांतों में संशोधन करने का आरोप लगाया गया। ऐसा इसलिए था क्योंकि ख्रुश्चेव का कहना था कि समाजवाद के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अलग-अलग मार्ग विद्यमान हैं। उसने सैटेलाइट राज्यों को समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपनी विधियों का पालन करने की अनुमति दी। (सैटेलाइट राज्य से आशय उन राज्यों से था जो औपचारिक रूप से स्वतंत्र थे लेकिन राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य रूप से विदेशी शक्ति के प्रभाव के अंतर्गत थे। सोवियत संघ के संदर्भ में इस शब्द का उपयोग पोलैंड, बुल्गारिया, हंगरी, रोमानिया, चेकोस्लोवाकिया और पूर्वी जर्मनी जैसे मध्य और पूर्वी यूरोप के देशों के लिए किया जाता था। कभी-कभी क्यूबा जैसे यूरोप के बाहर स्थित देशों को भी सोवियत सैटेलाइट राज्यों की सूची में सम्मिलित किया जाता था)। इसके साथ ही ख्रुश्चेव ने पूरे विश्व में साम्यवाद के लिए हिंसक क्रांति का समर्थन करने की बजाय पूँजीवाद पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का समर्थन किया। आलोचकों ने पूँजीवाद उपायों के प्रचलन और प्रबंधकीय वर्ग को बढ़ावा देने पर भी विलाप किया - ख्रुश्चेव ने कारखानों का उत्पादन बढ़ाने के लिए इन तरीकों का उपयोग किया था। आलोचकों का मानना था कि ये उपाय साम्यवाद के मूलभूत सिद्धांतों के विरूद्ध हैं। चीन में माओ 1956 से सोवियत संघ का प्रमुख आलोचक था और वह रूस के उस आर्थिक मॉडल से परे हट गया जिसका चीन ने अभी तक अनुसरण किया था।

18. ब्रेजनेव युग (1964-82)

- निकिता ख्रुश्चेव के बाद ब्रेज़नेव सत्ता में आया। वह 1964 से लेकर 1982 तक सत्ता में बना रहा। उसने ब्रेजनेव सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसका तर्क था कि यदि उस देश में समाजवाद को खतरा पैदा होता है तो किसी भी साम्यवादी देश के आंतरिक मामलों में सोवियत संघ का हस्तक्षेप उचित है। जब सोवियत संघ ने अफगानिस्तान (1979) और पोलैंड (1981) में हस्तक्षेप किया तो यह सिद्धांत कार्यान्वित किया गया। पोलैंड में सॉलीडरिटी ट्रेड यूनियन ने बहु-दलीय प्रणाली और लोकतंत्र की दिशा में संक्रमण की मांग करते हुए विरोध-प्रदर्शनों का नेतृत्व किया। ब्रेजनेव के अंतर्गत सोवियत संघ ने क्यूबा तथा अफ्रीकी देशों इथियोपिया, मोज़ाम्बिक और अंगोला की सहायता राशि बढ़ा दी।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

मुख्य विषय वस्तु 3: मिखाइल गोर्बाचोव की ग्लास्नोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन) की नीतियों और उसके द्वारा सोवियत रणनीतिक लक्ष्यों के पुनर्उन्मुखीकरण ने शीत युद्ध की समाप्ति में योगदान दिया। राज्य के प्रशासन में कम्युनिस्ट पार्टी की संवैधानिक भूमिका समाप्त कर दी गई और अनजाने में सोवियत संघ के विघटन का मार्ग प्रशस्त हुआ। हालांकि पूर्वी यूरोप और रूस में साम्यवाद का अस्तित्व अभी भी एक या दूसरे रूप में बना हुआ है।

19. साम्यवादी राज्यों का पतन

- मिखाइल गोर्बाचोव 1985 में कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव बना। दिसंबर 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया और इसके साथ ही सोवियत संघ में 74 साल के साम्यवादी शासन का अंत हो गया।

19.1. दूरगामी प्रभाव

पोलैंड (1989) में साम्यवाद के पतन का दूरगामी प्रभाव पड़ा और एक-एक करके पूर्वी यूरोप के राज्यों में और अंततोगत्वा सोवियत संघ में साम्यवादी शासन का पतन हो गया।

- **पोलैंड:** अगस्त 1988 में सॉलीडरिटी ट्रेड यूनियन द्वारा बड़े पैमाने पर की गयी सरकार विरोधी हड़तालों ने सरकार को 1989 में स्वतंत्र चुनाव करवाने के लिए विवश कर दिया जिसमें साम्यवादियों की पराजय हुई।
- इसके बाद सार्वजनिक क्रांतिकारी विरोध रूस के सभी सैटेलाइट राज्यों में फैल गया। हंगरी में स्वतंत्र चुनाव आयोजित किए गए जिसमें साम्यवादियों की पराजय हुई। पूर्वी जर्मनी में 1989 में साम्यवादी सरकार को त्यागपत्र देना पड़ा और बर्लिन की दीवार (1961 में निर्मित) तोड़ दी गई। 1990 की गर्मियों में सोवियत संघ ने पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के एकीकरण के लिए सहमति व्यक्त की (इसका कारण यह था कि गोर्बाचोव रूसी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए पश्चिमी जर्मनी से सहायता और निवेश चाहता था)। 1989 के अंत में चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया और रोमानिया में साम्यवादी सरकारों को उखाड़ फेंका गया। यूगोस्लाविया (1990) और अल्बानिया (1991) में स्वतंत्र बहु-दलीय चुनाव आयोजित किए गए। दिसंबर 1991 में सोवियत संघ स्वयं ही विघटित हो गया।

19.2. पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में साम्यवाद की आर्थिक विफलता

- सोवियत संघ के विघटन का प्रमुख कारण आर्थिक विफलता थी। अर्थव्यवस्था अत्यधिक-केंद्रीकृत थी और राज्य द्वारा व्यापार पर बड़े-बड़े प्रतिबंध लगाए गए थे, जिसका परिणाम अनवरत अक्षमता के रूप में सामने आया। इन साम्यवादी देशों में संसाधनों के अकुशल उपयोग के कारण जनता के जीवन स्तर में बहुत धीमी गति से सुधार हुआ था। उदाहरण के लिए इस्पात, ईंधन और ऊर्जा का सर्वोच्च उत्पादक होने के बावजूद सोवियत संघ में मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं की भारी कमी थी। इसके अतिरिक्त सोवियत संघ के सैटेलाइट राज्यों पर व्यापारिक प्रतिबंध लगे हुए थे। इसके अंतर्गत उन्हें केवल साथी कम्युनिस्ट देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति थी। इससे उनकी आर्थिक संवृद्धि प्रभावित हुई। यह भी तर्क दिया जा सकता है कि श्रमिकों ने साम्यवाद को विफल बनाया क्योंकि पश्चिमी यूरोप के श्रमिकों के विपरीत साम्यवादी विश्व में श्रमिक वर्ग अपेक्षाकृत खराब स्थिति में रह रहा था। इसके साथ ही साम्यवादी पूर्वी यूरोप की तुलना में पूँजीवाद पश्चिमी यूरोप में स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास और सामाजिक सेवाओं के सामाजिक संकेतक बेहतर थे। 1980 के दशक में पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के लोगों के बीच संपर्क में वृद्धि होने के कारण पूर्वी यूरोप के लोगों ने पश्चिम की समृद्धि और पूर्व की गरीबी में भारी अंतर देखा। उन्होंने इसके लिए साम्यवाद और अपने नेताओं को दोषी ठहराया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- निकिता ख्रुश्चेव ने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया लेकिन उसके बाद आर्थिक वृद्धि धीमी हो गई। निकिता के कृषि सुधार विफल रहे। शीतयुद्ध, अंतरिक्ष की दौड़, हथियारों की दौड़, अन्य देशों के संघर्षों में भागीदारी और सहयोगी देशों को सहायता देने के दबाव का - सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। अत्यधिक-केंद्रीकरण, राज्य एकाधिकार, हल्के उद्योगों की उपेक्षा और मूल उपभोक्ता वस्तुओं में मुद्रास्फीति के कारण सोवियत संघ की स्थिति बिगड़ती चली गई।

19.3. मिखाइल गोर्बाचोव

मिखाइल गोर्बाचोव ने सोवियत अर्थव्यवस्था की असफलता को स्वीकार किया साथ ही उसने सार्वजनिक असंतोष और निम्न जीवन स्तर के लिए दमनात्मक कट्टर साम्यवाद की भूमिका को भी स्वीकार किया। उसने निम्नलिखित सुधारात्मक कदम उठाकर स्थिति को सुधारने का प्रयास किया:

- उसने पश्चिम और चीन के साथ संबंध सुधारने का प्रयास किया। इससे अमेरिका, यूरोप और चीन के साथ सोवियत संघ के संबंधों में **तनाव शैथिल्य (देदान्त)** आया। देदान्त का अर्थ तनाव में अपेक्षाकृत स्थाई कमी है। गोर्बाचोव सोवियत संघ की सैन्य भागीदारी को कम करना चाहता था विशेषकर ऐसे समय जब अर्थव्यवस्था की स्थिति अच्छी नहीं थी। 1986 में उसने अफगानिस्तान से वापसी की प्रक्रिया आरंभ की। उसने राजनीतिक सुधारों के लिए विरोध-प्रदर्शन होने पर सोवियत सैटेलाइट राज्यों में सैन्य हस्तक्षेप न करने का भी निर्णय लिया।
- **ग्लास्नोस्त (खुलापन): -** यह राजनीति, मानवाधिकार और सांस्कृतिक मामलों के क्षेत्रों में खुलेपन की नीति थी। ग्लास्नोस्त का उद्देश्य अकुशलता और भ्रष्टाचार को प्रचारित करने और नयी नीतियों के लिए लोगों को तैयार करने हेतु मीडिया का उपयोग करना ही नहीं था अपितु जनता को शिक्षित करना और नई नीतियों के लिए सार्वजनिक समर्थन जुटाना भी था। इस बात को सुनिश्चित करते हुए कि कम्युनिस्ट पार्टी की आलोचना न हो ग्लास्नोस्त (खुलेपन) को प्रोत्साहित किया गया।
    - **राजनीति:** ग्लास्नोस्त में पहले के असंतुष्टों को क्षमा प्रदान करना सम्मिलित था जिन्हें अब जेलों से छोड़ दिया गया। अतीत में 'शुद्धीकरण' के कारण निर्वासन में रहने वाले महत्वपूर्ण नेताओं को मॉस्को लौटने की अनुमति दी गई। पार्टी के कामकाज में अधिक पारदर्शिता लाई गई। उदाहरण के लिए 1988 के पार्टी सम्मेलन का टेलीविजन पर प्रसारण किया गया। राजनीतिक असंतुष्टों को मानसिक अस्पताल / संस्थानों में भेजने से रोकने के लिए 1988 में एक नया कानून लाया गया।
    - **सांस्कृतिक मामले:** सोवियत फिल्म निर्माता संघ, लेखक संघ आदि जैसे संगठनों के अतिवादी प्रमुखों को हटा दिया गया और लोकतांत्रिक चुनावों के माध्यम से स्वतंत्र विचारधारा वाले लोगों को लाया गया। इसके साथ ही स्टालिन विरोधी फिल्मों और उपन्यासों पर लगा प्रतिबंध भी हटा दिया गया। व्यवस्था की आलोचक काव्यात्मक रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति दी गई। मीडिया रिपोर्टिंग में स्वतंत्रता प्रदान की गई। उदाहरण के लिए यूक्रेन की 1986 की चेरनोबिल परमाणु आपदा पर मीडिया में बहुत स्पष्ट रूप से चर्चा की गई।
- **पेरेस्त्रोइका (सामाजिक-आर्थिक सुधार):** - इन सुधारों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने हेतु ग्लास्नोस्त आरंभ किया गया था।
    - **पेरेस्त्रोइका के अंतर्गत आर्थिक परिवर्तन:** गोर्बाचोव ने 1984 को 'नवीन आर्थिक प्रबंधन' वर्ष के रूप में घोषित किया। पेरेस्त्रोइका के द्वारा गोर्बाचोव सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सरकारी सेवाओं के मध्य प्रतिस्पर्धा पैदा करना चाहता था ताकि दक्षता में सुधार हेतु उन पर दबाव बन सके। पेरेस्त्रोइका का एक अन्य उद्देश्य लोगों के लिए वैकल्पिक रोजगार के अवसर उत्पन्न करना था ताकि बाजार राज्य के साथ रोजगार का बोझ साझा कर सके। इस प्रकार पारिवारिक रेस्त्रां, पारिवारिक व्यापार और हस्तशिल्प आदि जैसे निजी MSMEs को अनुमति प्रदान की गई। इसी प्रकार निजी सेवाओं जैसे कि ट्यूशन, कार मरम्मत, चित्रकला बेचने इत्यादि की भी अनुमति दी गई। कारखाना उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए पेरेस्त्रोइका सुधारों के अंतर्गत कारखाना प्रबंधन में विशेषाधिकार प्रदान न कर स्वतंत्र निकाय के अंतर्गत पूरे उद्योग में गुणवत्ता नियंत्रण प्रकार्य को शामिल किया गया। लॉ ऑन स्टेट

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

इंटरप्राइजेज (1987) के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों का पुनर्गठन किया गया जिसके अंतर्गत बाजार की मांग के अनुसार यह निर्धारित होना था कि क्या और कितना उत्पादन हो। इससे पहले कारखानों को सीधे ग्राहकों से ऑर्डर लेने की अनुमति दी गई थी, लेकिन नए कानून के अधिनियमन के बाद कच्चे माल की खरीद और उत्पादन के संबंध में निर्णय लेने में केंद्रीय योजनाकारों का नियंत्रण समाप्त कर दिया गया।

- पेरेस्त्रोइका के अंतर्गत राजनीतिक परिवर्तन:
  - **सोवियतों के भीतर लोकतंत्र:** स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नियुक्त किए जाने के बजाय स्थानीय सोवियतों के सदस्यों का लोगों द्वारा निर्वाचन किया जाना था। इस प्रकार अब उम्मीदवारों का विकल्प था (हालांकि पार्टी का नहीं)।
  - **कारखानों में लोकतंत्र:** कारखानों के प्रबंधन पदों के लिए चुनाव आरंभ किए गए।
  - **सर्वोच्च सोवियत (संसद) में परिवर्तन:** पहले के 1450 सदस्यों के मुकाबले सर्वोच्च सोवियत को 450 सदस्यों का काफी छोटा समूह बनाया गया। इसे वास्तविक संसद के रूप में कार्य करने के लिए अधिक बार बैठकें करनी थी (अर्थात पहले के प्रति वर्ष 2 सप्ताह के सत्र की बजाए 8 महीने तक)। पहले सर्वोच्च सोवियत दो छोटे निकाय नियुक्त किया करती थी जो वास्तविक रूप से नीति निर्माता निकायों के रूप में कार्य करते थे। अब सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष राज्य का प्रमुख होता। जनप्रतिनिधियों वाली एक नई कांग्रेस (2250 सदस्यों वाली) की स्थापना की गई और इसका कार्य नई सर्वोच्च सोवियत का चुनाव करना था।

19.4. मिखाइल गोर्बाचेव की नीतियों के कारण USSR का पतन क्यों हुआ?

- सर्वप्रथम यह कहा जा सकता है कि USSR का विघटन उसके पूर्ववर्ती नेताओं द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण व्यवस्था में व्याप्त दुर्बलताओं के कारण हुआ और अकेले गोर्बाचोव को इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। उसकी नीतियों ने सम्भवतः एक ऐसे संघ के अंत को त्वरित कर दिया, जिसके भाग्य में विफलता लिखी थी। वैकल्पिक रूप से यह तर्क भी दिया जा सकता है कि गोर्बाचोव वास्तव में दोषी था क्योंकि चीन में उसका समकक्ष डेंग जियाओपिंग सामाजिक क्रांति के पश्चात चीन में बाजार अनुकूल सुधारों की लहर प्रारम्भ करने के बावजूद भी एकल पार्टी कम्युनिस्ट राज्य को बनाए रखने में सफ़ल रहा था।
- पहला तर्क उपर्युक्त घटनाक्रमों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। गोर्बाचोव की नीतियों के कारण USSR का अंत हुआ, इस दूसरे तर्क की पांच प्रमुख कारकों के उल्लेख द्वारा विवेचना की जा सकती है। अर्थात् गोर्बाचोव को अतिवादियों और रूढ़िवादियों दोनों ही के विरोध का सामना करना पड़ा; त्वरित परिणामों के लिए किये गए आर्थिक सुधारों की विफलता; सोवियत गणराज्यों के बीच राष्ट्रवादी भावना; गोर्बाचोव और बोरिस येल्तसिन के बीच प्रतिद्वंदिता और 1991 का तख्तापलट।
  - **अतिवादियों और रूढ़िवादियों द्वारा विरोध:** जब गोर्बाचोव ने अपने सुधारों का कार्यान्वयन प्रारम्भ किया तो पार्टी के अतिवादी सदस्यों ने उसका विरोध किया वहीं पार्टी के उदारवादी सदस्यों ने पर्याप्त सुधार न करने के लिए उसकी निंदा की। जब एक दमनकारी शासन सुधार प्रारम्भ करता है तो शासन के लिए यह सबसे खतरनाक होता है। जो लोग सुधारों की इच्छा करते हैं वे कभी भी संतुष्ट नहीं होते हैं और वे अधिक रियायतों की मांग करते हैं, वहीं अतिवादी तत्व शासन के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं। ऐसा ही कुछ गोर्बाचोव के साथ हुआ। बोरिस येल्तसिन पार्टी का दक्षिण पंथी सदस्य था। वह रूसी सोवियत गणराज्य में पार्टी का नेता था और भ्रष्टाचार का विरोध करने के कारण लोकप्रिय हो गया था। येल्तसिन शीघ्रातिशीघ्र पश्चिमी शैली की बाजार व्यवस्था लागू करना चाहता था। शीघ्र ही वामपंथी रूढ़िवादियों और दक्षिणपंथी उदारवादियों के बीच विभाजन हो गया। ग्लास्नोस्त द्वारा प्रस्तुत अवसर से लाभ उठाते हुए येल्तसिन ने और अधिक उग्र सुधारों के लिए सार्वजनिक प्रदर्शनों का नेतृत्व करना प्रारम्भ कर दिया और जनता में रूढ़िवादियों की आलोचना की। अतः यह स्पष्ट है कि गोर्बाचोव पार्टी के वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों ही को संतुष्ट करने में विफल रहा।

VISION IAS
www.visionias.com

- **आर्थिक सुधारों से त्वरित परिणाम नहीं प्राप्त हुए:** 1980 के दशक का USSR 1930 के दशक के अमेरिका जैसी आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहा था। इन वर्षों में राष्ट्रीय आय में निरंतर गिरावट देखी गई। रूस की एक चौथाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही थी। *लॉ ऑन स्टेट इंटरप्राइजेज* (1987) के कारण भी कुछ समस्याएं थीं। इस कानून के पश्चात वेतन प्रदान करना भी कारखानों का एक कार्य हो गया। इस कानून का उद्देश्य यह था कि कारखाने उत्पादन वृद्धि पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। परन्तु समस्या यह थी कि उत्पादन की गणना उत्पादित वस्तुओं के मूल्य के आधार पर की जाती थी जोकि रूबल (रूसी मुद्रा) में होती थी। इस प्रकार कारखानों ने साबुन, कप आदि जैसी सस्ती वस्तुओं के स्थान पर मँहगी वस्तुओं पर ध्यान केंदित किया। इसके कारण मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं में कमी आई और मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई। स्टोरों में लम्बी कतारें लगती थीं। **साइबेरिया कोयला खदान हड़ताल (1989)** इसी का परिणाम थी। जब श्रमिकों के पास स्वयं को धोने के लिए भी साबुन नहीं था तो वे आक्रोशित हो गए और हड़ताल पर चले गए। जल्द ही उनकी हड़ताल में कज़ाकिस्तान, यूक्रेन और साइबेरिया की अन्य खदानों के लगभग 5 लाख खनिक और शामिल हो गए। 1917 की बोल्शेविक क्रांति के पश्चात यह ऐसी पहली बड़ी हड़ताल थी। गोर्बाचोव ने श्रमिकों को कारखाने का सम्पूर्ण नियन्त्रण जैसी खनिकों की मांग को स्वीकार कर लिया। यह घटना इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि हड़ताली खनिकों की एक प्रमुख मांग एकल पार्टी व्यवस्था का अंत करना भी थी। चुनाव लड़ने के लिए वे पोलैंड की सॉलिडरिटी ट्रेड यूनियन की शैली पर अपनी स्वयं की एक पार्टी बनाना चाहते थे।
- **सोवियत गणराज्यों के बीच राष्ट्रवादी भावनाएं:** सोवियत संघ 15 सोवियत गणराज्यों का एक संघ था, जिनमें प्रत्येक की अपनी स्वयं की एक संसद थी। फ़ेडरल सुप्रीम सोवियत और कांग्रेस ऑफ़ पीपल्स डेपुटीज मास्को में स्थित था। ग्लास्नोस्त और पेरेस्त्रोइका के कारण सोवियत संघ के देशों ने अपनी-अपनी संसद के लिए और अधिक स्वायत्तता की मांग प्रारम्भ कर दी। गोर्बाचोव उनकी मांगों के प्रति इस शर्त पर सहानुभूति रखता था कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी सर्वोच्च रहे। परन्तु छोटी-छोटी रियायतों का दूरगामी प्रभाव हुआ और गणराज्य अनियंत्रित हो गये।
  - **अज़रबैजान और अर्मेनिया: बहुसंख्यक मुस्लिम जनसँख्या वाले** सोवियत गणराज्य अज़रबैजान की अल्पसंख्यक ईसाई जनसँख्या ने अपने निवास क्षेत्र को बहुसंख्यक ईसाई जनसँख्या वाले सोवियत गणराज्य अर्मेनिया में मिलाने की मांग की। परन्तु पार्टी के रूढ़िवादी सदस्य सोवियत गणराज्यों की सीमाओं में परिवर्तन के विरुद्ध थे और गोर्बाचोव ने अजरबैजान के ईसाइयों की मांग को मानने से मना कर दिया। परिणामस्वरुप शीघ्र ही इन दो सोवियत गणराज्यों के बीच युद्ध छिड़ गया और मास्को ने इन पर से अपना नियन्त्रण खो दिया।
  - **एस्टोनिया, लाटविया और लिथुआनिया:** 1990 में इन तीन राज्यों ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। परिणाम स्वरुप USSR ने इस विरोध को दबाने के लिए अपनी सेना भेजी।
  - शीघ्र ही सोवियत गणराज्यों के एक स्वैच्छिक संघ के प्रस्तावक बोरिस येल्तसिन सोवियत गणराज्य रूस (Soviet Republic of Russia) के राष्ट्रपति चुने गये (गोर्बाचोव USSR के राष्ट्रपति थे)।
- **गोर्बाचोव और येल्तसिन के बीच प्रतिद्वंद्विता:** दोनों ही रूस की प्रमुख हस्तियाँ थी और यदि ये दोनों एक साथ मिल कर कार्य करने में सक्षम होते तो शायद USSR की अखंडता बनी रहती, परन्तु इन दोनों में कई मतभेद थे। येल्तसिन का मानना था कि संघ स्वैच्छिक होना चाहिए और यदि कोई एक सोवियत गणराज्य स्वतंत्रता चाहता है तो उसे यह मिलनी ही चाहिए। रूढ़िवादियों के प्रभुत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी में येल्तसिन का विश्वास समाप्त हो गया था और वह एकल पार्टी व्यवस्था के विरुद्ध हो गया था। दूसरी ओर, गोर्बाचोव पार्टी के भीतर ही दो शक्तियों को संतुलित करना चाहता था। यद्यपि वह बहु-पार्टी व्यवस्था के विरुद्ध नहीं था, परन्तु वह सावधानी पूर्वक धीमी गति से सुधार करना चाहता था। इसके अतिरिक्त, जहाँ

येल्तसिन एक शॉक थेरेपी (आघात उपचार) या बाजार अर्थव्यवस्था की ओर त्वरित बदलाव चाहता था, वहीं गोर्बाचोव धीरे-धीर बदलाव करना चाहता था, क्योंकि बाजार अर्थव्यवस्था से बड़े स्तर पर बेरोजगारी और उच्च मुद्रास्फीति की समस्या उत्पन्न हो सकती थी (केवल मूल्य नियन्त्रण से मुद्रास्फीति को नियन्त्रण में रखा जा सकता था, क्योंकि वस्तुओं की आपूर्ति में कमी थी)।

- **1991 का तख्तापलट:** येल्तसिन ने 1990 में कम्युनिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। दूसरी ओर रूढ़िवादियों ने गोर्बाचोव पर हमला किया क्योंकि वह बहु-पार्टी प्रणाली के विचार पर चर्चा के लिए तैयार था। पहले से ही सोवियत गणराज्यों ने अलगाव की मांग करना प्रारम्भ कर दिया था। जॉर्जिया ने 1991 में अपनी स्वाधीनता की घोषणा कर दी। संघ की रक्षा के अंतिम प्रयास के रूप में गोर्बाचोव ने 15 गणराज्यों को स्वैच्छिक संघ बनाने का प्रस्ताव दिया। इससे पहले कि गोर्बाचोव स्वैच्छिक संघ पर हस्ताक्षर कर पाते, वामपंथी उग्रवादियों ने यानायेव के नेतृत्व में तख्तापलट की कार्यवाही कर दी। इसके प्रत्युत्तर में येल्तसिन ने विशाल सार्वजनिक रैलियों का आयोजन प्रारम्भ कर दिया परन्तु सरकार उसे बंदी बनाने में विफल रही। भारी दबाव में तख्तापलट के नेताओं ने त्यागपत्र दे दिए और उन्हें बंदी बना लिया गया। इसके पश्चात येल्तसिन ने सोवियत गणराज्य रूस (USSR में नहीं) में कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अब येल्तसिन सार्वजनिक नजरों में नायक बन चुका था और गोर्बाचोव को मुख्यधारा से अलग कर दिया गया। येल्तसिन ने शीघ्रता से रूसी सोवियत गणतंत्र को बाजार अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर दिया। येल्तसिन ने स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमंडल (CIS) नामक स्वैच्छिक संघ के लिए वार्ता प्रारम्भ की। इसमें सदस्य राज्यों को सम्पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता थी, परन्तु उन्हें रूस के साथ अपनी रक्षा और आर्थिक नीतियों का समन्वय करना था। प्रारम्भ में यूक्रेन, बेलारूस और रूस इसमें सम्मिलित हुए और बाद में 8 अन्य गणतंत्र भी CIS में सम्मिलित होने के लिए सहमत हो गए। दिसम्बर 1991 में यूक्रेन की स्वतंत्रता के लिए मतदान हुआ और गोर्बाचोव ने क्रिसमिस के दिन (दिसम्बर 1991) राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे दिया और USSR का पटाक्षेप हो गया।

20. USSR के पश्चात् साम्यवाद

- 1991 में जो समाप्त हुआ वह साम्यवाद नहीं अपितु स्टालिनवाद था। जल्द ही जिन साम्यवादी दलों में सुधार कार्य हुआ, वे दल पुनः सशक्त हो कर सामने आए और लिथुआनिया, बुल्गारिया, पोलैंड, रूस और दक्षिणी अमेरिका के कई देशों में जहां बहु-पार्टी व्यवस्था थी, ये विभिन्न नामों से सत्ता में रहे। 1991 की शॉक थेरेपी के पश्चात रूस को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। येल्तसिन की बाजार अर्थव्यवस्था अल्पावधि में ही विफल हो गयी। (येल्तसिन को इसका पहले ही आभास हो गया था। उसका तर्क था कि रूस को अल्पावधि में कठिनाईओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु उसे दूरगामी लाभ प्राप्त होंगे)। जब चेचेन्या ने स्वाधीनता की घोषणा की तो येल्तसिन ने वहां सेनाएँ भेज दीं। ड्यूमा के 1995 के चुनावों में ज्युगानोव के नेतृत्व में परिष्कृत कम्युनिस्ट पार्टी ने अनेक सीटों पर विजय प्राप्त कर के वापसी की। IMF ने 1996 के राष्ट्रपति चुनावों में कम्युनिस्टों को विजयी होने से रोकने के लिए रूस को 10 बिलियन डालर का ऋण दिया। इसके पश्चात रूस में आर्थिक सुधार होने प्रारम्भ हुए और येल्तसिन बहुत ही कम अंतर से राष्ट्रपति चुने गये। इसके पश्चात भी रूस ने अपनी नीतियों में कुछ समाजवादी विशेषताओं को जारी रखा है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि साम्यवाद अभी भी जीवित है और 1991 में इसका समापन नहीं हुआ था।

VISION IAS
www.visionias.com

मुख्य विषय वस्तु 4: ***प्रारम्भिक वर्षों में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ चाइना ने रूसी राजनीतिक दर्शन का निकटता से पालन किया। परन्तु माओ ने यह अनुभव किया कि चीन एक कृषक समाज था और कृषि आधारित कृषक क्रांति चीनी हितों के अधिक अनुकूल थी। इसलिए माओ ने चीनी साम्यवाद के लक्ष्य को कृषक क्रांति की अवधारणा की तरफ मोड़ दिया। इन मतभेदों के बावजूद भी, दोनों देश 1950 के दशक तक कई समान मूल्यों को साझा करते रहे। 1950 के दशक में इन दोनों देशों के मध्य एक प्रमुख वैचारिक मतभेद विकसित हुआ। इस समय ख्रुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत संघ ने पूँजीवाद के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का समर्थन किया और रूस की निर्देशित अर्थव्यवस्था में कथित पूँजीवाद विशेषताओं को प्रस्तुत किया। इन दोनों मोर्चों पर सैद्धांतिक मतभेद दुःसाध्य सिद्ध हुए और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ चाइना ने औपचारिक रूप से सोवियत शैली के साम्यवाद की आलोचना की और इसे मार्क्स की शिक्षाओं से एक खतरनाक विचलन बताया।***

21. चीनी साम्यवाद बनाम रूसी साम्यवाद

21.1. 1949 में चीन की समस्याएं

- लम्बी अवधि तक हुए आतंरिक एवं बाह्य युद्धों ने चीन को तबाह कर दिया था। 1916-28 की अवधि को चीन में वॉरलार्ड युग के रूप में जाना जाता है। इस अवधि में चीन में बहुत कम विकास हुआ, लगभग हरतरफ बाधाएं मौजूद थीं। इसके तुरंत बाद 1931 में वह जापान के साथ युद्ध में उलझ गया। इसी समय कुओमिन्तांग (KMT) और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के मध्य गृहयुद्ध चल रहा था और यह 1949 तक चला। 1949 में माओ ज़ेडोंग (माओत्से तुंग) के नेतृत्व में CCP के सत्ता में आने के उपरांत यह गृह-युद्ध समाप्त हुआ। हालांकि इसके बाद भी चीन को युद्ध से कोई राहत नहीं मिली थी क्योंकि इसे फिर से उत्तर कोरिया के पक्ष में कोरियन युद्ध (1950) में हस्तक्षेप करना पड़ा। चीन ने संयुक्त राज्य अमेरिका को चेतावनी दी थी कि वह उत्तर कोरिया पर आक्रमण न करे, परन्तु दोनों कोरिया को एक करने के उत्साह में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्वीकृत सेनाएँ अमेरिका के नेतृत्व में उत्तर कोरिया की सीमाएं पार कर गईं और चीनी सीमाओं के बहुत निकट आ गईं। चीन अपने निकट पड़ोसी देश (कोरिया) को पूंजीवाद का समर्थक बनते देख खतरा अनुभव करने लगा था, अतः उसने संयुक्तराष्ट्र की सेनाओं को पीछे धकेल दिया। अंततः उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के मध्य *38वीं समानांतर (38 डिग्री उत्तरी अक्षांश रेखा)* को दोनों के मध्य की सीमा मान ली गयी।
- चीन को मूलभूत ढांचे के विकास की बहुत अधिक आवश्यकता थी।
- इसे अपने कृषि और औद्योगिक क्षेत्र में व्याप्त अक्षमता से भी निबटना था।
- खराब कृषि उत्पादन विशाल जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा को पूरा करने में विफल हो रहा था और इसलिए चीन को खाद्य सामग्री की कमी और उससे उपजी खाद्य मुद्रास्फीति की दोहरी चुनौती का सामना भी करना पड़ रहा था।
- 1949 के चीनी समाज में असमानता व्याप्त थी। कुओमिन्तांग समृद्ध जमींदारों और उद्योगपतियों का समर्थन कर रहे थे। इसलिए, भूमि सुधार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालिक एजेंडे का भाग था।

चीन द्वारा अपनाया गया मॉडल (प्रारूप) 1958 तक रूस में अपनाए गए मॉडल जैसा ही था। माओ द्वारा शुरू किए गए **"100 फ्लावर कैंपेन' (1957)** का उद्देश्य यह था कि लोग व्यवस्था के प्रति अपने विचार प्रकट करें। 100 फ्लावर कैंपेन के पश्चात माओ ने अनुभव किया कि जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा था। इसलिए उसने 1958 में ग्रेट लीप फॉरवर्ड कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जो बाद में चीन के समाजवाद का मूलभूत कार्यक्रम बन गया था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

21.2. रूसी मॉडल में परिवर्तन क्यों किया गया?

माओ द्वारा रूसी मॉडल या प्रारूप को छोड़ दिया गया क्योंकि:

- भारी औद्योगीकरण पर ध्यान केन्द्रित करने से एक नई श्रेणी के तकनीशियन और इंजीनियर तैयार हो रहे थे। पार्टी कार्यकर्ताओं और तकनीशियन और इंजीनियर वर्ग के बीच संघर्ष बढ़ रहा था। पार्टी के कार्यकर्ताओं का कार्य लोगों को राजनीतिक और आर्थिक रूप से संगठित करना था। उदाहरण के लिए खेतों के सामूहिकीकरण और भूमि के पुन: वितरण कार्यक्रम के दौरान पार्टी के कार्यकर्ताओं ने ही भूमि बेदखली (land eviction) का कार्य किया था।
- **100 फ्लावर कैंपेन (1957):** सरकार चीनी समाज से वर्ग संघर्ष को समाप्त करना चाहती थी। पहली योजना (1953-58) के परिणामों से प्रसन्न हो कर सरकार ने कार्यकर्ताओं और विशेषज्ञों के बीच संघर्ष के समाधान के लिए खुली चर्चा के आयोजन का निर्णय किया। माओ ने कहा "*100 फूलों को खिलने दो और 100 विचारधाराओं की प्रतिस्पर्धा होने दो।*" इस प्रकार 100 फ्लावर कैंपेन के माध्यम से माओं ने "रचनात्मक आलोचनाओं" का स्वागत किया। परन्तु इससे जो प्राप्त हुआ वह एक आक्रामक मुखर आलोचना थी, जिसमें पार्टी कार्यकर्ताओं के अति उत्साह और अक्षमता, सरकार का अति केन्द्रीकरण और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अलोकतांत्रिक होने को लक्षित करते हुए आलोचना की गई। कुछ आलोचकों ने तो बहु-पार्टी प्रणाली का भी सुझाव दे दिया। इन सब का परिणाम यह हुआ कि माओ ने तुरंत ही इस अभियान को बंद कर दिया और आलोचकों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 100 फ्लावर कैंपेन ने यह प्रदर्शित किया कि साम्यवाद के विरुद्ध अभी भी कितना विरोध है। इसलिए उसने रूसी मॉडल को छोड़ कर क्रांति के सरंक्षण और साम्यवाद की प्रगति को संगठित करने के लिए ग्रेट लीप फॉरवर्ड (1958) प्रारम्भ किया।

रूसी मॉडल (प्रारूप) और साम्यवाद के चीनी प्रारूप में मूल विभेदों की निम्नलिखित रूपों में व्याख्या की जा सकती है:

- **कम्यून की नई पद्धति** चीन के सन्दर्भ में विशिष्ट थी। कम्यून सामूहिक खेतों के जमावड़े से कहीं कुछ अधिक था। उन्होंने स्थानीय स्व-शासन की इकाईयों के रूप में कार्य किया, कल्याणकारी सेवाएं उपलब्ध कराईं और पार्टी को जनता के सम्पर्क में बने रहने में सहायता की।
- **भारी उद्योगों पर कम ध्यान देना** और मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं पर अधिक ध्यान देना। इसने दैनिक जीवन की वस्तुओं में कमी को रोकने और मुद्रास्फीति को नियन्त्रण में रख कर आम आदमी की दैनिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया। दूसरी ओर रूस को मूलभूत उपभोक्ता वस्तुओं की कमी को झेलना पड़ा।
- केंद्रीकृत औद्योगिकीकरण के स्थान पर **ग्रेट लीप फॉरवर्ड** के द्वारा **विकेंद्रीकृत औद्योगिकीकरण** पर ध्यान दिया गया। माओ ने घरों के पिछले हिस्से में कम्यून्स द्वारा व्यवस्थित और प्रबंधित 6 लाख इस्पात भट्टियों (6 lakh backyard steel furnaces) की बात की। यह फार्म मशीनरी प्रदान करने वाली बहुत ही छोटे आकार की इकाइयाँ थीं।
- **औद्योगिक अर्थव्यवस्था के स्थान पर कृषि-केन्द्रित अर्थव्यवस्था:** ग्रेट लीप फॉरवर्ड के अंतर्गत माओ ने यह निर्णय लिया कि चीन मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में फैले छोटे उद्योगों के साथ एक कृषि अर्थव्यवस्था होगा। इसके अतिरिक्त उद्योग श्रम-आधारित होंगे जिनकी मशीनों पर निर्भरता कम होगी। इससे बेरोजगारी पर रोक लगी जो औद्योगिकीकृत पश्चिमी देशों का मुख्य लक्षण था। चीन की 600 मिलियन की विशाल जनसंख्या को देखते हुए इसे सर्वश्रेष्ट रणनीति मानी गयी थी। कृषि अर्थव्यवस्था ने समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में भी सहायता प्रदान की।

21.3. 1958 तक रूसी मॉडल के साथ समानताएँ

- प्रथम पंचवर्षीय योजना (1953-58) को रूसी सलाहकारों की सहायता से तैयार किया गया था। रूस ने चीन के औद्योगिकीकरण में भी उसको सहायता प्रदान की। रूसी मॉडल की भाँति प्रथम

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

योजना में भारी उद्योगों पर ध्यान दिया गया और तुलनात्मक रूप से उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन पर कम ध्यान दिया गया। चीन ने USSR की भाँति पंचवर्षीय योजनाओं को अपना कर कमांड अर्थव्यवस्था प्रारूप को अपनाया। इस प्रकार रूस की भाँति चीन ने भी केंद्रीकृत आर्थिक नियोजन को अपनाया।

21.3.1. रूस सदृश्य कृषि परिवर्तन (1950-56)

- चीन ने भूमि सुधार कार्यक्रम को दो चरणों में पूरा किया। **पहले चरण में,** किसानों के बीच **भूमि पुनर्वितरण** के लिए कार्यक्रम लाया गया। इसके कार्यान्वयन में कुछ हिंसा का उपयोग भी हुआ, क्योंकि समृद्ध किसानों ने अपनी भूमि जब्त किए जाने का विरोध किया। **दूसरे चरण में,** सहकारी समितियों का आरंभ किया गया। **सहकारी समितियों** के गठन में खेतों के विखंडित छोटे टुकड़ों के एकीकरण द्वारा सामूहिक फार्म बनाना सम्मिलित था। परन्तु चीन ने रूस में अपनाये गये हिंसक उपायों के स्थान पर अनुनय की विधि को अपनाया। किसानों की प्रत्येक सहकारी समिति में खेतों और उपकरणों का संयुक्त स्वामित्व 100-300 परिवारों के पास था। 1956 तक 95 प्रतिशत चीनी किसान इन सहकारी समितियों के सदस्य थे।

21.3.2. रूस सदृश्य औद्योगिक परिवर्तन (1953-58)

- प्रथम पंचवर्षीय योजना में, चीन ने अधिकतर व्यवसायों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था और रूस ने भी कोयला, इस्पात और लोहे आदि भारी उद्योगों में बहुत अधिक निवेश किया था।
- प्रथम योजना के परिणाम अच्छे थे और उद्योगों में लक्ष्य से 120 प्रतिशत अधिक वृद्धि हुई। चीनी अर्थव्यवस्था में सुधार होना आरम्भ हो गया था। सभी संचार व्यवस्थाएँ बहाल हो गईं थीं और मुद्रास्फीति नियन्त्रण में आ गयी थी। परन्तु इसके साथ कुछ नकारात्मक पक्ष भी जुड़े थे। 1957 के 100 फ्लावर कैंपेन में लोगों ने सरकार की नीतियों की आलोचना की थी और इसलिए माओ को संदेह हुआ कि क्या भारी उद्योगों पर विशेष ध्यान दिया जाना चीन के लिए अच्छा है। इसके अतिरिक्त जब माओ ने रूस पर संशोधनवाद (मार्क्स की शिक्षाओं से खतरनाक/आपत्ति जनक प्रस्थान) का आरोप लगाया, तो उसने चीन को दी जाने वाली सहायता में कमी कर दी और उसके पश्चात USSR और चीन के बीच सम्बन्धों में प्रतिकूल मोड़ आ गया। इसके उपरांत चीन ने वैश्विक समाजवादी कैम्प से रूस के नेतृत्व में बदलाव की मांग की।

21.4. ख्रुश्चेव के नेतृत्व वाले रूसी दृष्टिकोण से मतभेद

- माओ पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के विरुद्ध था, जिसका समर्थन ख्रुश्चेव ने अपने 1956 के भाषण में किया था। वह USSR द्वारा अपनाए गये पूँजीवादी उपायों के उपयोग के भी विरुद्ध था और उसका यह तर्क था कि पूँजीवाद के प्रति USSR का दृष्टिकोण नर्म था। माओ रूस द्वारा पूँजीवादी मार्ग का अनुसरण किए जाने के भी विरुद्ध था। उदाहरण के लिए ख्रुश्चेव ने कारखानों के प्रबन्धन के लिए एक विशेषज्ञ और तकनीकी रूप से एक बेहतर प्रबन्धकीय वर्ग के सृजन का समर्थन किया था। माओ के अनुसार इससे कारखानों के कामगारों के बीच वर्ग असमानता में वृद्धि होगी और तकनीकी रूप से बेहतर वर्ग कारखानों में कामगारों को अपने अधीन कर लेगा। माओ विभेदीकृत वेतन (differential piece wage rate), कार्य प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहन और भूमि के निजी स्वामित्व के विरुद्ध था (हालांकि वह छोटे भूमिखंडों पर किसानों के निजी स्वामित्व के पूर्णतः विरुद्ध नहीं था)। माओ के अनुसार रूस अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप मार्क्स और लेनिन के मूल विचारों में (अर्थात मार्क्सवाद) संशोधन कर रहा था। माओ पूंजीवाद के साथ सह-अस्तित्व के स्थान पर साम्यवाद को प्राप्त करने के लिए हिंसक क्रांति को साधन के रूप में उपयोग करने के पक्ष में था।

VISION IAS
www.visionias.com

- **ग्रेट लीप फॉरवर्ड (1958):** 100 फ्लावर कैंपेन के दौरान जब माओ को आलोचनाएँ झेलना पड़ा तब माओ ने ग्रेट लीप फॉरवर्ड कार्यक्रम प्रारम्भ किया जिसमें **माओवाद** देखने को मिला। 100 फ्लावर कैंपेन के दौरान लोगों को अपने विचार प्रकट करने की अनुमति थी, बहुत से लोगों ने पार्टी की आलोचना करनी प्रारम्भ कर दी और उन्होंने लोकतंत्र की ओर बढ़ने की मांग की। माओ ने अनुभव किया कि साम्यवादी क्रांति की रक्षा के लिए और आम आदमी की आर्थिक समृद्धि के लिए साम्यवाद पर लोगों के विश्वास को बढ़ाना होगा। चीन की अधिकांश जनसंख्या कृषक थी। इस प्रकार ग्रेट लीप फॉरवर्ड का उद्देश्य औद्योगिक विकास का परित्याग किये बिना कम्युनिस्ट क्रांति को बचाने के लिए कृषि विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना था। ग्रेट लीप फॉरवर्ड के साथ चीनी साम्यवाद रूसी मॉडल से दूर होता चला गया।
  - ग्रेट लीप फॉरवर्ड का आशय था कि चीन धीरे-धीरे औद्योगीकरण के साथ-साथ बड़े स्तर पर कृषि अर्थव्यवस्था पर भी ध्यान केन्द्रित करेगा। यह श्रमिक बहुल वाली अर्थव्यवस्था को अपनाना चाहता था, और कारखानों में अत्यधिक मशीनरी के उपयोग को घटाना चाहता था, ताकि लोगों को और अधिक रोजगार प्रदान किया जा सके। जिस औद्योगीकरण के मॉडल को अपनाया जाना था उसमें कुछ चुने हुए केन्द्रों पर भारी उद्योगों के स्थान पर ग्रामीण क्षेत्रों में छितराए हुए लघु उद्योगों पर ध्यान केन्द्रित करना था।
  - ग्रेट लीप फॉरवर्ड में **कम्यून** के रूप में एक नई पद्धति सम्मिलित थी**:**
    - इसका उद्देश्य शक्ति के अति-केन्द्रीकरण को रोकना था और इस हेतु कम्यून नामक एक पहल को अपनाया गया। कम्यून सामूहिक फार्म (खेत) से बड़ी इकाई थी। इसमें अनेकों सामूहिक फार्म सम्मिलित किए गए थे (प्रत्येक सामूहिक फार्म से 100 से 300 किसान परिवार संबद्ध थे) और इस प्रकार से प्रत्येक कम्यून में 30,000 से 75,000 के बीच की जनसंख्या सम्मिलित होती थी। प्रत्येक कम्यून में किसान, वृद्ध, महिलाएं, बच्चे, श्रमिक और 30-40 स्नातक तथा 30-40 तकनीशियनों वाली एक वैज्ञानिक टीम शामिल होती थी।
    - कम्यून्स **केवल साधारण खेतों (फार्मों) का जमावड़ा भर नहीं थे, वे स्थानीय स्व-शासन की संस्थाओं के रूप में भी कार्य करते थे।** स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार कम्यूनों को बाँधों, सिंचाई परियोजनाओं और स्थानीय सड़क निर्माण जैसे मूलभूत ढांचागत परियोजनाओं के कार्यान्वयन का कार्य भी करना होता था। वे घरों के पिछले हिस्से में इस्पात भट्ठियों जैसे अपने स्वयं के कारखाने चलाते थे (ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग मॉडल)। माओ ने 6 लाख घरों के पिछले हिस्से में इस्पात भट्ठियों की स्थापना की बात की थी। इन लघु उद्योगों / कारखानों ने कम्यून के किसानों को फार्म उपकरण प्रदान किये।
    - **सामाजिक सेवाएँ प्रदान करने में भूमिका:** ये कम्यून अपने सदस्यों को मूलभूत सेवाएँ प्रदान करने के लिए शिक्षा के प्रसार का कार्य करते थे, महिलाओं को बेहतर अवसर प्रदान करना और अन्य कल्याणकारी सेवाओं के लिए क्रैच, विद्यालय और प्राथमिक सेवा केन्द्रों का संचालन करना इनके अन्य कार्य थे।
    - कम्यूनों के राजनीतिक ढांचे में एक निर्वाचित परिषद, ब्रिगेड और कार्यकारी टीमें सम्मिलित थीं। दूसरे शब्दों में कम्यूनों का गठन एक निर्वाचित परिषद सहित, ब्रिगेडों और कार्यकारी टीमों के रूप में होता था।
  - **ग्रेट लीप फॉरवर्ड का आकलन:**
    - इसके अंतर्गत लोगों को अल्पावधि में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, परन्तु ग्रेट लीप फॉरवर्ड ने निश्चित रूप से चीन को दीर्घकालिक लाभ पहुंचाए थे।
    - पार्टी कार्यकर्ताओं को सौंपे गये कार्यों को करने में उनकी अनुभवहीनता के कारण अल्पावधि में कुछ कठिनाइयाँ भी आईं। इसके अतिरिक्त 1959 से 1961 तक फसलें भी निरंतर रूप से खराब हुईं। 1956 में रूस द्वारा सहायता से हाथ खींच लेने से चीन को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। ग्रेट लीप फॉरवर्ड से सम्बन्धित कठिनाईयों

www.UPSCPDF.com

के कारण लगभग 20 मिलियन लोगों की समय से पूर्व मृत्यु हो गई। फलस्वरूप माओ के खिलाफ लोगों का आक्रोश बढ़ता गया।
    - दीर्घकालीन रूप से ग्रेट लीप फॉरवर्ड चीन के लिए एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ।
- दीर्घावधि में कृषि और औद्योगिक उत्पादन में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई और इन सबसे लाभ उठाने के लिए प्रयास आरम्भ हो गये थे।
- ग्रेट लीप फॉरवर्ड ने कम्यून जैसी नई पद्धति के माध्यम से अति-केन्द्रीकरण पर रोक लगाई जो किसी भी प्रकार की पहल को दबा देता है। सामूहिक खेती के लिए कम्यून बहुत ही सरल उपकरण है। इनसे स्थानीय सरकार में जनता की भागीदारी सम्भव हो गयी और उनकी शिकायतों को शांत करने में सहायता मिली। वे स्थानीय स्व-शासन की कुशल इकाईयों के रूप में कार्य करने में सफल रहे और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को स्थानीय विचार और जनता की अपेक्षाओं से जोड़े रखा।
- बिखरे हुए और श्रमिक बहुल औद्योगिक मॉडल के कारण ग्रेट लीप फॉरवर्ड बेरोजगारी पर रोक लगाने में सक्षम रहा।
- शिक्षा प्रसार, महिलाओं की स्थिति में सुधार, बेहतर कल्याणकारी सेवाएं – ग्रेट लीप फॉरवर्ड के कुछ अन्य लाभ थे।

चित्र: माओत्से तुंग

21.5. सांस्कृतिक क्रांति (1966-69)

इसे महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति (Great Proletarian Cultural Revolution) के रूप में भी जाना जाता है। क्रांति के उत्साह को बढ़ाने, कम्युनिस्ट क्रांति को बचाने, ग्रेट लीप फॉरवर्ड के पक्ष में जनता का समर्थन जुटाने और ग्रेट लीप फॉरवर्ड को विशुद्ध रूप से मार्क्सवाद और लेनिनवाद की परिपाटी पर बनाए रखने के लिए माओ द्वारा प्रारम्भ किया गया यह एक विशाल प्रचार अभियान था। इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे:

- **कम्युनिस्ट क्रांति की रक्षा करना और ग्रेट लीप फॉरवर्ड को मार्क्सवाद की परिपाटी पर बनाए रखना:** कम्युनिस्ट पार्टी को बचाए रखने के लिए यह माओ का प्रयास था, जिसे कम्युनिस्ट पार्टी के दक्षिण पंथी नेताओं से खतरा था, जो रूसी पद्धति पर पूँजीवादी विशेषताओं को सम्मिलित करना चाहते थे (ख्रुश्चेव के शासनकाल में रूस ने कथित रूप से साम्यवाद के लिए पूँजीवाद का मार्ग चुन लिया था)। इस प्रकार से सांस्कृतिक क्रांति का उद्देश्य दक्षिण पंथी नेताओं का विरोध करना था, जो वेतन में अत्यधिक अंतर और किसानों को बड़े निजी भूखंड जैसे प्रोत्साहनों को प्रारम्भ करने की मांग कर रहे थे, जो उनके अनुसार कम्यूनों की दक्षता में वृद्धि के लिए आवश्यक थे। उन्होंने रूसी पद्धति के अनुसार विशेषज्ञ प्रबन्धन वर्ग के सृजन के पक्ष में तर्क दिया ताकि भारी उद्योगों की वृद्धि के लिए अनुभवहीन पार्टी कार्यकर्ताओं पर निर्भर न रहना पड़े। इस चर्चा के समाधान के लिए 100 फ्लावर कैम्पेन स्पष्ट रूप से चलता रहा। परन्तु इस प्रकार के उपायों में ख्रुश्चेव द्वारा अपनाए गये

पूँजीवादी मार्ग की झलक थी, जिसकी माओ ने संशोधनवाद कह कर आलोचना की थी। माओ के अनुसार, इस प्रकार के दृष्टिकोण से समृद्ध वर्ग और समृद्ध किसान और प्रबंधकों के समृद्ध वर्ग उभरने लगेंगे, जो निर्बल वर्गों का शोषण करेंगे, जिससे कम्युनिस्ट क्रांति प्रभावी रूप से समाप्त हो जाएगी।

- **ग्रेट लीप फॉरवर्ड के लिए समर्थन जुटाना:** माओ ने जब ग्रेट लीप फॉरवर्ड का प्रयोग किया तो इसके प्रारम्भिक चरणों में (1959 से 1963 में अल्पविधि के लिए) कुछ कठिनाइयाँ सामने आईं, जबकि दीर्घकाल में ग्रेट लीप फॉरवर्ड का परिणाम सामने आना बाकी था। इस प्रकार से पार्टी के भीतर माओ का विरोध बढ़ रहा था और ग्रेट लीप फॉरवर्ड पर बड़ी चर्चा चल रही थी और कई लोग इस बात का समर्थन कर रहे थे कि पूँजीवादी उपायों को प्रारम्भ करने का समर्थन किया जाए। इसलिए माओ को ग्रेट लीप फॉरवर्ड कार्यक्रम के लिए जनता का समर्थन जुटाने हेतु प्रचार कार्यक्रम की आवश्यकता थी।
- **सांस्कृतिक क्रांति की विशेषताएँ:** चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष के रूप में माओ ने 1966 में सांस्कृतिक क्रांति का शुभारम्भ किया। माओ के समर्थक रेड गार्ड कहलाते थे (उनमें से अधिकांश ने माओ की सांस्कृतिक क्रांति के समर्थन में विद्यालय और महाविद्यालय छोड़ दिए थे), उन्होंने संपूर्ण चीन का (उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम) भ्रमण किया और माओ के पक्ष में चर्चाएँ कीं। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान चार 'प्राचीनों' (four 'olds') की आलोचना की गयी थी – अर्थात प्राचीन संस्कृति, प्राचीन आदतें, प्राचीन विचार और प्राचीन रीति रिवाज। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवियों को ग्रामीण क्षेत्रों और उनकी चुनौतियों और उपलब्ध अवसरों को समझने के लिए भेजा गया।
- **सांस्कृतिक क्रांति की आलोचना:** सांस्कृतिक क्रांति ने चीन में कुछ सीमा तक अव्यवस्था और गृहयुद्ध जैसी स्थितियाँ उत्पन्न कर दीं। प्रारम्भ में रेड गार्ड्स (अधिकांश छात्र) ने अपनी हिंसा के द्वारा माओ के आलोचकों को लक्षित किया परन्तु शीघ्र ही अति उत्साह में उन्होंने किसी पर भी और सब पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। शिक्षक, पेशेवर लोग, स्थानीय पार्टी अधिकारी – सब को लक्षित किया गया। एक बार छात्र समूह उत्तेजित हो जाता था तो उन पर नियन्त्रण करना कठिन हो जाता था। कुख्यात **'चार लोगों का गिरोह' (Gang of four)** में महत्त्वपूर्ण नेता और माओ की पत्नी शामिल थे। इन्होंने माओ समर्थकों को अत्याचार करने के लिए उकसाया। ऐसा कहा जाता है कि चार लोगों का यह गिरोह माओ से भी अधिक माओवादी था। इसके कारण लाखों लोगों का जीवन बर्बाद हो गया। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान अराजकता के कारण आर्थिक विकास अवरुद्ध हो गया था। लाखों लोगों को परेशान किया गया और वे बर्बाद हो गये। एक वर्ष के भीतर ही अर्थात 1967 तक रेड गार्ड्स के अतिवादी अनियंत्रित हो गये और माओ को सेना बुलाना पड़ा जिसने स्थिति को नियंत्रित किया। माओ ने रेड गार्ड्स के नेताओं और रक्षा मंत्री को इस स्थिति के अनियंत्रित होने के लिए दोषी ठहराया और परिणामस्वरूप कई रेड गार्ड्स पर अत्याचारों के लिए अभियोग चलाया गया और उन्हें मृत्युदंड दिया गया। 1969 में सांस्कृतिक क्रांति को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया और माओ को सभी दोषों से मुक्त घोषित कर दिया गया।
- **सांस्कृतिक क्रांति के सकारात्मक प्रभाव:** यद्यपि सांस्कृतिक क्रांति ने लगभग दस वर्ष तक आर्थिक प्रगति को रोक कर रखा, लेकिन 1970 के दशक के मध्य में कुछ आर्थिक सुधार हुआ। 1976 में माओ की मृत्यु के समय तक चीन आर्थिक सुधार के मार्ग पर चल पड़ा था।
    - छोटे उद्योगों पर ध्यान केन्द्रित करने से वहां उपभोक्ता वस्तुओं की कमी नहीं हुई, जैसी रूस में हुई थी।
    - जनसंख्या का एक उच्च प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता था और यह जनसंख्या भलीभांति शिक्षित, कुशल और कम्यूनों के रूप में संगठित थी।
    - इस दौरान चीन में कोई भी अकाल नहीं पड़ा और खाद्यान्नों का उत्पादन वृद्धिमान जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम रहा।
    - औद्योगिक विकास से चीन में इस्पात के उत्पादन में तीन गुना वृद्धि हुई और पेट्रोलियम उद्योग के लिए एक महत्त्वपूर्ण नींव रखी जा चुकी थी। चीन शून्य से आरंभ कर स्वयं को मशीन निर्माण उद्योग में परिवर्तित करने में सक्षम रहा। औद्योगिक विकास ने चीन को परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में एक शक्ति बनने के लिए आधार प्रदान किया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

WWW.UPSCPDF.COM

मुख्य विषय वस्तु 5: माओ के उत्तराधिकारी डेंग जियाओपिंग ने सांस्कृतिक क्रांति के कारण हुए आर्थिक संकट के पश्चात चीन के आर्थिक पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उसकी आर्थिक नीतियाँ माओ की राजनीतिक विचारधाराओं के प्रतिकूल थीं। चीन को विदेशी निवेश के लिए खोलना, प्रशासन का विकेंद्रीकरण और सीमित निजी प्रतियोगिता प्रारम्भ करने जैसे सुधारों की श्रृंखला के द्वारा डेंग जियाओपिंग के शासनकाल के अंतर्गत चीन एक साम्यवादी बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुआ। थियानमेन विरोध और अन्य प्रजातंत्र समर्थक विरोधों को डेंग जियाओपिंग द्वारा कठोरता से निबटने के कारण चीन साम्यवाद को ऐसे समय में जारी रखने में सफल रहा जब वैश्विक कम्युनिस्ट ढाँचा 1980 के दशक के अंतिम समय में संकट से ग्रस्त हो रहा था।

22. 1976 में माओ की मृत्यु के बाद चीन में साम्यवाद

- **सत्ता के लिए संघर्षः** माओ की मृत्यु के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर सत्ता के लिए संघर्ष उत्पन्न हो गया। माओ विरोधी वर्ग और मजबूत होकर उभरा और डेंग जियाओपिंग उस लॉबी के नेता के रूप में उभरा (1976-89)। 'गैंग आॅफ फोर' (चार लोगों का समूह), जिनका नेतृत्व माओ की पत्नी कर रही थी, के विरुद्ध सांस्कृतिक क्रांति के दौरान किए गए अत्याचार के लिए मुकदमा चलाया गया। तात्कालीन पार्टी नेतृत्व पर गौर करें तो ऐसा लगता है कि यह एक माओ विरोधी कदम था, जो कि स्टालिनवाद को प्रभावहीन करने जैसे ही माओ (वाद) के व्यक्तित्व के प्रभाव को भी कम करना चाहता था। 1978 के मध्य के बाद से डेंग जियाओपिंग चीन का सर्वोच्च नेता बन गया। पूँजीवादी नीति का समर्थक होने के कारण सांस्कृतिक क्रांति के दौरान, डेंग को पार्टी में अपने सभी पदों से अवकाश लेने के लिए बाध्य होना पड़ा था। डेंग जियाओपिंग को सांस्कृतिक क्रांति के दौरान रेड गार्ड्स द्वारा पीटा गया था और उनके बेटे के प्रताड़ित किया गया था। उन्हें चार साल तक एक साधारण कर्मचारी के रूप में काम करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में भेज दिया गया था।
- **डेंग के नेतृत्व में नीतियों में नाटकीय परिवर्तनः** सत्ता में आने के बाद 1978 में डेंग जियाओपिंग ने आकस्मिक नीतिगत बदलाव लाने आरंभ कर दिए। डेंग द्वारा प्रवर्तित नीतियाँ पूँजीवाद-समर्थक और माओवाद व उसकी सांस्कृतिक क्रांति के विपरीत थीं। आर्थिक क्षेत्र में, चीन ने जिन नीतियों को अपनाया, वे अंत में बाजार समाजवाद में परिवर्तित हुईं:-
  - सांस्कृतिक क्रांति के दौरान किए गए परिवर्तन उलट दिए गए थे।
    - जब्त की गई सभी संपत्तियों को उनके मूल मालिकों को लौटा दिया गया।
    - जनता को अभिव्यक्ति और धर्म की अधिक स्वतंत्रता दी गई।
    - बुद्धिजीवी वर्ग को साहित्यिक और अन्य कला-रूपों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने की भरपूर स्वतंत्रता दी गई।
    - स्थानीय सरकार चलाने के लिए बनाई गई क्रांतिकारी समितियों के बदले अधिक लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित समूहों को सत्ता सौंपी गई।
  - डेंग ने पूँजीवाद और 'ओपन डोर' (मुक्त द्वार) आर्थिक नीतियों को अपनाकर **आधुनिकीकरण के चार पहलुओं;** जैसे- कृषि, उद्योग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और रक्षा; को अपना लक्ष्य बनाया। इन चार आधुनिकीकरणों के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए:
    - विदेशी सरकारों और विदेशी बैंकों से ऋण प्राप्त करना।
    - 1980 में चीन अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक में सम्मिलित हो गया।
    - आधुनिक उपकरणों के आयात के लिए विदेशी कंपनियों के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए।

VISION IAS

WWW.UPSCPDF.COM

www.UPSCPDF.com

- **विकेंद्रीकरण** को बढ़ावा दिया गयाः सरकारी नियंत्रण वाले फार्मों को नियोजन, वित्तपोषण और मुनाफे के उपयोग पर अधिक नियंत्रण दिया गया।
- **दक्षता और औद्योगिक उत्पादन को प्रोत्साहनः-**
  - पूँजीवादी उपायों जैसे बोनस, प्रति नग वेतन दर (piece wage rates) और लाभ के बँटवारे को प्रोत्साहन दिया गया।
  - राज्य ने अब कम्यून से उत्पादों की खरीद के लिए उच्च मूल्य चुकाने आरंभ किए।
  - अधिक उत्पादन के लिए कम्यून को प्रोत्साहित करने के लिए उन पर लगने वाले करों को घटा दिया गया।

- **डेंग जियाओपिंग के भविष्य के लक्ष्यः** 1986 में डेंग ने भविष्य के लिए अपने विचारों को सूचीबद्ध किया। डेंग की भविष्य की परिकल्पनाओं या उनके मुख्य लक्ष्यों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है:
  - वह चाहते थे कि लोग अमीर बनें और उनका मानना था कि अमीर होना कोई अपराध नहीं है।
  - उन्हें पूरा विश्वास था कि भविष्य में उद्योगों को और अधिक स्वतंत्रता देने और निर्णय लेने की शक्ति का विकेन्द्रीकरण करने की आवश्यकता होगी।
  - उनका मानना था कि केवल पूँजीवादी निवेश ही एक आधुनिक चीन बनाने में मदद कर सकता है।
  - उनका तर्क था कि पार्टी को प्रशासनिक कार्यों से हाथ खींच लेना चाहिए; इसे स्थानीय स्तर पर कम निर्देश जारी करने चाहिए और निचले स्तर पर अधिक से अधिक पहल करनी चाहिए।
  - उन्होंने तर्क दिया कि चीन को शांतिप्रिय राष्ट्रों के साथ मिलकर सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों का सामना करने की आवश्यकता है।
- **डेंग की नीतियों के नाटकीय परिणाम हुए:**
  - 1979 में अनाज का अभूतपूर्व उत्पादन हुआ जिससे किसान अधिक समृद्ध हुए।
  - हालांकि सरकार द्वारा आर्थिक क्षेत्र में किए गए सुधारों से राजनीतिक क्षेत्र में भी आमूल सुधार की मांग उत्पन्न हुई। 'लोकतंत्र की दीवार' (Democracy Wall) (नवंबर 1978) नामक अभियान से राजनीतिक क्षेत्र में आमूल सुधार की मांग की गई जिस पर लोगों ने गुमनाम पोस्टर चिपकाकर एकल-पार्टी प्रणाली समाप्त करने और लोकतंत्र बहाल करने की मांग की थी।
- **लोकतंत्र की दीवार (Democracy Wall: 1978):** 1978 में डेंग जियाओपिंग की प्रशंसा और समर्थन में पोस्टर अभियान (दीवारों पर) चलाए गए और रैलियाँ निकाली गईं। लेकिन जल्द ही अधिक कट्टरपंथी सुधारों की मांग और भारी प्रदर्शन को देखते हुए सरकार द्वारा इन पोस्टर अभियानों और रैलियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन 'दीवार', जो कि डेंग के निर्वाचन क्षेत्र बीजिंग में थी, को चालू रखने की आज्ञा मिली हुई थी, क्योंकि अब तक इस दीवार का उपयोग लोगों द्वारा गैंग आॅफ फोर पर हमला करने के लिए किया जा रहा था। समस्याएँ 1979 में तब आरंभ होने लगीं, जब दीवार पर लगाए जाने वाले पोस्टर अधिक निर्भीक हो गए। लोग माओ पर आक्षेप लगाने और विभिन्न अधिकारों की मांग करने लग गए थे जैसे (a) सरकार की आलोचना का अधिकार, (b) नेशनल पीपल्स कांग्रेस (संसद) में गैर-कम्युनिस्ट पार्टियों का प्रतिनिधित्व, (c)

VISION IAS

कम्युन्स का उन्मूलन और (d) नौकरियाँ बदलने और विदेश यात्रा की स्वतंत्रता। डेंग की प्रतिक्रिया करुणाशून्य थी। वह एकल-पार्टी प्रणाली का कट्टर समर्थक था। असंतुष्ट लोगों को हिरासत में ले लिया गया और जेल में डाल दिया गया। ध्यातव्य है कि लोकतंत्र की दीवार को 1979 में ध्वस्त कर दिया गया।

- **बाजार समाजवाद (Market Socialism):** ब्रिटानिका में बाजार समाजवाद को इस प्रकार परिभाषित किया गया है: "*बाजार समाजवाद, जिसे उदारवादी समाजवाद भी कहते हैं, एक आर्थिक प्रणाली है जो समाजवादी योजना और मुक्त उद्यम के बीच समझौते का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें उपक्रमों का स्वामित्व सार्वजनिक होता है, परंतु उत्पादन और खपत बाजार की शक्तियों द्वारा निदेर्शित होती हैं, न कि सरकारी योजनाओं द्वारा।*" बाजार समाजवाद के साथ, चीन धीरे-धीरे बाजार अर्थव्यवस्था की तरफ बढ़ने लगा। व्यापारिक बाधाओं को कम करके और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देकर आर्थिक क्षेत्र में विश्व के साथ वृहद् संपर्क स्थापित करने के लिए चीन ने मुक्त-द्वार की नीति को अपनाया। बाजार समाजवाद तक के परिवर्तनकाल का विश्लेषण दो चरणों में किया जा सकता है - (a) 1979 में लोकतंत्र की दीवार के विध्वंस तक डेंग द्वारा अनुसरण की जाने वाली नीतियाँ और (b) डेंग द्वारा उसके बाद अनुसरण की जाने वाली नीतियाँ। इस संदर्भ में 1984 को महत्वपूर्ण बदलावों का वर्ष माना जा सकता है। दूसरे चरण में कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक सुधारवादी उपायों को सम्मिलित किया गया:
  - कम्यून पद्धति को समाप्त कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त भूमि किसानों के बीच वितरित की गई ताकि वे बड़े निजी भूखंडों को प्राप्त कर सकें। इसका मतलब था कि, कम्यून्स वाली भूमि (हालांकि अब भी यह राज्य के स्वामित्व में ही थी) को अलग-अलग किसान परिवारों में बांट दिया गया और उनको अधिक लाभ रखने की अनुमति दी गई। इससे उनके जीवन स्तर में सुधार आया।
  - 1984 में बाजार समाजवाद के पक्ष में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बदलाव किए गए:
    - राज्य द्वारा फसलों की अनिवार्य खरीद को अब त्याग दिया गया।
    - यह निर्णय लिया गया कि राज्य उपयोगी उत्पादों की खरीद जारी रखेगा परंतु बहुत कम मात्रा में। इस प्रकार किसानों को उनके उत्पाद को खुले बाजार में बेचने के लिए प्रोत्साहित किया गया।
    - पोर्क, अनाज, सब्जी, कपास आदि जैसी वस्तुओं पर मूल्य नियंत्रण समाप्त हो गया और मांग-आपूर्ति के अनुरूप खुले बाजार में उनके मूल्य में उतार चढ़ाव की अनुमति दी गई।
  - **बाजार समाजवाद के नकारात्मक प्रभाव:** 1984 आते-आते, बाजार समाजवाद के नकारात्मक प्रभाव दिखाई देने आरंभ हो गए। निर्यात की तुलना में आयात बहुत तेजी से बढ़ने लगा और इस तरह चालू खाता घाटे (करंट अकाउंट डेफिसिट) में भी वृद्धि होने लगी। विदेशी मुद्रा भंडार में तेज गिरावट आई। हालांकि सरकार ने सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) में वृद्धि कर आयात पर नियंत्रण करने का प्रयास किया, परंतु इससे मुद्रास्फीति में वृद्धि हो गई (1986 में मुद्रास्फीति 22 फीसदी थी)।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **थियानमेन चौक प्रोटेस्ट (Tiananmen Square Protests: 1989):** यह विरोध प्रदर्शन चीन में साम्यवाद के लिए एक संकट की घड़ी के समान था और चीनी साम्यवाद उससे बचकर एक विजेता के रूप में उभरा और अस्तित्व में बना रहा।
    - **पृष्ठभूमिः** डेंग जियाओपिंग की नीति वस्तुतः कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी (सुधारकों) और वामपंथी (कट्टरपंथी) गुटों के बीच संतुलन बनाए रखने की थी। इस प्रकार, उन्होंने विद्यार्थियों और बुद्धिजीवियों को आलोचना का अधिकार दिया। परंतु डेंग की नीतियों के तहत मात्र वहीं आलोचनाएँ स्वीकार्य थीं, जो अक्षमता और भ्रष्ट नौकरशाहों को हटाने के उद्देश्य से की जा रही थीं और जिनमें सुधार लाकर सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने में (डेंग को) सहायता मिलती। इस प्रकार डेंग के लेफ्ट-राईट संतुलन की नीति को आघात पहुँचाने वाली आलोचना को स्वीकार नहीं किया गया और इसे सीमारेखा का उल्लंघन माना गया। ऐसे आलोचकों पर कठोर नियंत्रण भी लगाया गया {उदाहरण के लिए लोकतंत्र की दीवार (Democracy Wall) की घटना में}। इसी तरह, 1986 में डेंग ने अपने 4 आधुनिकीकरणों (4 Modernizations) के समर्थन में प्रदर्शनों की अनुमति दी थी लेकिन जब प्रदर्शनकारियों ने अधिक क्रांतिकारी सुधारों की मांग करना आरंभ किया और पोस्टर अभियान पर प्रतिबंध का उल्लंघन किया तो उन्होंने उन पर फिर से पाबंदी लगा दी।
    - **दुविधा (The Dilemma):** डेंग और उसके सहयोगियों के सामने दुविधा यह थी कि क्या समकालीन राजनीतिक सुधारों के बिना आर्थिक सुधार लाना संभव होगा? क्या लोग मात्र बाजार में प्राप्त विकल्पों से संतुष्ट हो जाएंगे और क्या यह संभव है कि राज्य राजनीतिक क्षेत्र (बहु-दलीय व्यवस्था) में विकल्प न दे? पश्चिमी विचारकों और सोवियत संघ के मिखाइल गोर्बाचेव का मानना था कि दोनों तरह के सुधारों - आर्थिक और राजनीतिक - को एक साथ लाया जाना चाहिए और अकेले आर्थिक सुधार संभव नहीं हैं क्योंकि आर्थिक सुधार केंद्रीकृत राजनीति की समाप्ति पर निर्भर है और अर्थव्यवस्था की खराब स्थिति को लोग राजनीतिक व्यवस्था के परिणाम के तौर पर देखते हैं।
    - **थियानमेन चौक की घटनाएं (1989):-**
        - **विरोध प्रदर्शन के क्या कारण थे?** हू याओबांग (Hu Yaobang) की मौत से विरोध प्रदर्शन आरंभ हुआ। हू याओबांग डेंग प्रशासन का एक अधिकारी था, परंतु पोलित ब्यूरो के रूढ़िवादी अधिकारियों ने उसे प्रशासन से बेदखल होने पर बाध्य किया था। परंतु शीघ्र ही सुधारों की धीमी गति, कथित भाई-भतीजावाद और हू के प्रशासन से बेदखल होने के कारण सार्वजनिक विरोध बढ़ गया। 1988-89 में आर्थिक सुधार में समस्याएँ आने लग गईं। मुद्रास्फीति में उछाल आ गया था और वस्तुओं की कीमतों की तुलना में विशेष रूप से सार्वजनिक कर्मचारियों की मजदूरी बहुत कम रह गई थी। सोवियत संघ में, मिखाइल गोर्बाचेव ने राजनीतिक सुधार लाने के प्रति तत्परता दिखाई थी। पड़ोसी देश सोवियत संघ में गोर्बाचेव के सुधारों से प्रोत्साहित होकर और गोर्बाचेव की 1989 की आगामी यात्रा का लाभ उठाते हुए विद्यार्थियों ने थियानमेन चौक पर प्रदर्शन आरंभ कर दिया। यह विरोध प्रदर्शन गोर्बाचेव की यात्रा के दौरान भी जारी रहे।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

चित्र: 4 मई 1989 को थियानमेन स्क्वायर पर छात्रों की भीड़

- **प्रदर्शनकारियों की क्या मांगें थीं?** ये छात्र CPC के भ्रष्टाचारों की समाप्ति के साथ ही राजनीतिक सुधारों और लोकतंत्र की बहाली की मांग कर रहे थे।
- **आंदोलन इतनी बेरहमी से क्यों कुचला गया था?** विरोध प्रदर्शन को समाप्त करने में सेना का सहारा लिया गया था। यहां तक कि छात्रों को तितर-बितर करने के लिए टैंक और पैराट्रूपर्स तक भेजे गए थे और परिणामस्वरूप, मृतकों की संख्या 3,000 तक पहुंच गई थी। जबकि, विरोध प्रदर्शन पूरी तरह शांतिपूर्ण था। सरकार के इस कदम की दुनिया भर में निंदा होने के पश्चात भी डेंग टस से मस नहीं हुए, क्योंकि उनका विश्वास दृढ़ था कि समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था के लिए एकल दलीय व्यवस्था आवश्यक है। सरकार के उस निर्णय से चीन में साम्यवाद और एकल दलीय व्यवस्था का संरक्षण संभव हुआ।

23. चीन में साम्यवाद क्यों जीवित रहा और सोवियत संघ में क्यों विफल हुआ?

माओ की 1976 में मृत्यु हो गई। माओ के जाने के बाद, डेंग जियाओपिंग ने जिन नीतियों को अपनाया, उनका समापन बाजार समाजवाद के रूप में हुआ। उसकी नीतियों में सम्मिलित था- पूँजीवादी उपायों को अपनाना और व्यापार बाधाएँ कम करके अर्थव्यवस्था को खोलना। इस प्रकार, डेंग के नेतृत्व में चीन 'धीरे-धीरे' एक बाजार अर्थव्यवस्था मॉडल की तरफ अग्रसर हुआ।

- यह ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा कि चीन ने जनता को अधिक राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकने वाले **राजनीतिक सुधारों के सूत्रपात्र से पहले ही आर्थिक सुधारों का कार्यान्वयन कर लिया।** राजनीतिक सुधारों का सूत्रपात्र किए बिना ही आर्थिक सुधारों का कार्यान्वयन चीन में साम्यवाद को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ। डेंग ने लोगों को राजनीति में कोई विकल्प दिए बिना बाजार में विकल्प प्रदान किए, अर्थात् खरीदने-बेचने तथा वस्तुओं व व्यवसायों का निजी स्वामित्व रखने का विकल्प। इस प्रकार चीन ने एकल दलीय व्यवस्था जारी रखी। आर्थिक समृद्धि और

आर्थिक स्वतंत्रता ने लोगों की राजनीतिक स्वतंत्रता की मांगों को शांत कर दिया। इसके विपरीत, मिखाइल गोर्बाचेव ने 1991 में ग्लास्तनोस्त (सामाजिक मुद्दों पर बहस की नीति) और पेरेस्त्रोइका (अर्थात पुनर्निर्माण) के माध्यम से राजनीतिक और आर्थिक सुधार लाने का प्रयास किया। लोगों ने सोवियत संघ की दयनीय अर्थव्यवस्था के लिए राजनीतिक व्यवस्था को दोषी ठहराया और जिसके परिणामस्वरूप सोवियत संघ का विघटन हो गया।

- कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर **लेफ्ट-राईट (वामपंथी-दक्षिणपंथी) विभाजन** कभी इतना नहीं गहराया कि वह पार्टी के विभाजन का कारण बने। इसके विपरीत, रूस में लेफ्ट-राईट के बीच विभाजन बहुत गहरा था। सोवियत संघ के अंतिम वर्षों में बोरिस येल्तसिन ने पार्टी की समाजवादी नीतियों की खुले-आम आलोचना की।
- **डेंग जियाओपिंग बनाम मिखाइल गोर्बाचेवः** दोनों ने पूँजीवादी मार्ग का समर्थन किया और दोनों आर्थिक सुधारों के पक्षधर थे। लेकिन जियाओपिंग ने 1976 से ही अपनी नीतियों को अंतिम रूप देना आरंभ कर दिया था, जबकि गोर्बाचेव देर से सत्ता में आए (1985 में)। डेंग बल का प्रयोग करने के लिए भी तैयार थे और एकल दलीय व्यवस्था में दृढ़ता से विश्वास रखते थे, लेकिन गोर्बाचेव के साथ ऐसा नहीं था। उदाहरण, थियानमेन चौक (1989) प्रदर्शन के दौरान डेंग ने बल प्रयोग किया, जबकि गोर्बाचेव बहुदलीय व्यवस्था की मांगों के आगे झुकने लगे थे। ऐसे में परिवर्तन विरोधियों ने तख्तापलट कर उसे अपदस्थ कर दिया। इसके अतिरिक्त, गोर्बाचेव बल प्रयोग के लिए तैयार नहीं थे और सोवियत गणराज्यों की स्वायत्तता की मांगों के प्रति सहानुभूति भी रखते थे।
- सोवियत संघ, जहां की लगभग आधी आबादी गैर रूसी थी, की तुलना में चीन जातीय और सांस्कृतिक रूप से एक अधिक समरूप समाज था। विभिन्न सोवियत गणराज्यों में संस्कृतियाँ और भाषाएँ भिन्न-भिन्न थीं। इस प्रकार अलगाव की मांग सोवियत संघ में कहीं अधिक थी।
- **100 फ्लावर्स कैंपेन** (1957) के कारण चीन के प्रमुख साम्यवादी नेताओं (माओ एवं अन्य) ने सही समय पर सही कदम उठाया। इसके उपरांत चीनी क्रांति को बचाए रखने के लिए ग्रेट लीप फॉरवर्ड (1958) के रूप में एक सुधारात्मक कदम उठाया गया। पुनः चीन ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप साम्यवाद के प्रारूप को अपनाया। दूसरी ओर, रूसी अर्थव्यवस्था जिन समस्याओं का सामना कर रही थी, उनके समाधान के लिए आवश्यक नीतियाँ विकसित करने में स्टालिन, ख्रुश्चेव और अन्य नेता विफल रहे थे।
- चीनी नेतृत्व ने सोवियत संघ की तुलना में अधिक मजबूती के साथ **'जनता के साथ संपर्क'** पर बल दिया। 'कम्यून' जैसे नवाचार ने जनता के साथ संपर्क बनाने में पार्टी की मदद की।
- **चीनी साम्यवाद लचीला था** और पार्टी नेताओं के बीच एकता थी, जो इसे जीवित बनाए रखने में सहायक रहा। बदलती आवश्यकताओं के साथ-साथ चीनी साम्यवाद का रूप भी बदलता रहा। उदाहरण के तौर पर, 1958 तक रूसी मॉडल का अनुसरण किया गया, जिसके बाद ग्रेट लीप फॉरवर्ड के रूप में माओवाद ने चीनी साम्यवाद को प्रभावित किया। 1976 से डेंग जियाओपिंग ने बाजार के अनुकूल आर्थिक नीतियों को अपनाया, जिनका समापन धीरे-धीरे बाजार समाजवाद को अपनाने के रूप में हुआ।
- शीत युद्ध में रूस की बड़ी भूमिका होने के कारण उसके बहुमूल्य संसाधन अन्यत्र पहुंच गए, जिससे उसकी अपनी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचा।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

24. इटली: मुसोलिनी और फासीवादियों का उदय

- **पृष्ठभूमि:** 1870 में एकीकरण के बाद, नवीन इटली राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से दुर्बल था। इसके अतिरिक्त, प्रथम विश्वयुद्ध से अर्थव्यवस्था पर बहुत दबाव पड़ा था। इटली पेरिस शांति सम्मेलन {केन्द्रीय शक्तियों (Central Powers) के विरूद्ध शांति शर्तों पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रथम विश्वयुद्ध के बाद आयोजित} से खाली हाथ लौटा था। पुनः युद्ध के बाद बेरोजगारी में काफी अधिक वृद्धि हुई, साथ ही साम्यवादी क्रांति की वास्तविक संभावनाएं भी मौजूद थीं।

24.1. रोम मार्च (March on Rome: 1922)

इस मार्च का नेतृत्व मुसोलिनी ने किया था जिसके बाद राजा ने उसे सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। उन दिनों, इटली में सरकार पर साम्यवादियों का कब्जा हो जाने का काफी भय था। साम्यवादी पहले ही 1922 में आम हड़ताल का प्रयास कर चुके थे। इसने मुसोलिनी को साम्यवाद विरोधी, पूंजीवाद का समर्थक और साथ ही इटली के उद्धारक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने का अवसर दिया। मुसोलिनी ने रोम मार्च का नेतृत्व करके इस अवसर का लाभ उठाया। 50,000 ब्लैक शर्ट्स (इतालवी फासीवादी दल का जत्था) रोम में आकर मिले, जबकि अन्य जत्थों ने उत्तर में महत्वपूर्ण शहरों पर कब्जा कर लिया। तात्कालीन प्रधानमंत्री मुसोलिनी का प्रतिरोध करना चाहता था, लेकिन राजा ने मुसोलिनी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया।

निम्नलिखित वे कुछ कारण हैं जिनसे उन पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है जिन्होंने मुसोलिनी के सत्तारोहण में योगदान दिया:

- **वर्साय की संधि से निराशा:** मित्र देशों की ओर से प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश करने के बदले 1915 में किये गए वादे के अनुसार सभी क्षेत्र इटली को नहीं दिए गए। उदाहरण के लिए, इटली को दिए जाने वाले कुछ प्रदेश यूगोस्लाविया को दे दिए गए। साथ ही अल्बानिया को इटली को सौंपने का वादा किया गया था, परंतु अल्बानिया को एक स्वतंत्र देश बना दिया गया। इससे सरकार की प्रतिष्ठा में गिरावट आई और सार्वजनिक भावनाएं सरकार के विरूद्ध हो गईं।
- **दयनीय अर्थव्यवस्था:** मुसोलिनी के उदय का एक प्रमुख कारण इटली की अर्थव्यवस्था की दयनीय स्थिति थी। भारी युद्ध व्यय के कारण आर्थिक स्थिति बिगड़ गई थी। साथ ही, इटली ने अपने युद्ध प्रयासों का वित्तपोषण करने के लिए अमेरिका से भारी ऋण लिया था। अब यह ऋण डॉलर में चुकाया जाना था। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी भी व्याप्त थी क्योंकि युद्धकालीन उत्पादन में कमी आ गयी थी। प्रथम विश्व युद्ध के बोझ, युद्ध के बाद आए आर्थिक संकट और अमेरिका से लिए गए ऋण, जिसे अब चुकाया जाना था, के कारण इटली की मुद्रा "लीरा" का मूल्य गिर गया (डॉलर के बाहर जाने और उत्पादन में गिरावट के कारण)। इसके फलस्वरूप मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हुई, जिससे सामान्य लोगों को समस्या हुई जो पहले ही बेरोजगारी से जूझ रहे थे। 2.5 लाख पूर्व सैनिकों को नौकरी खोजने में समस्या आ रही थी।
- **आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली: -** 1919 के चुनावों में सार्वभौमिक "पुरुष" मताधिकार और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली लागू की गई थी (महिलाओं को कहीं जाकर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1945 में मताधिकार प्राप्त हुआ)। आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अंतर्गत चुनाव में प्रत्येक दल को मिलने वाले मतों के अनुपात में संसद में सीटें आवंटित की जाती थीं। इस प्रणाली के

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

परिणामस्वरूप संसद में कई दल हो जाते थे (उदारवादी, राष्ट्रवादी, समाजवादी, साम्यवादी, कैथोलिक पॉपुलर पार्टी और इटालियाई फासीवादी दल)। इस प्रकार, गठबंधन के कारण केवल कमजोर सरकारें ही बन पाती थीं क्योंकि किसी भी अकेले दल को बहुमत नहीं मिल पाता था। ये सरकारें अस्थिर होती थीं (1919-22 तक पांच सरकारें – सभी निर्णायक कार्रवाई करने में अक्षम) और इससे जनता के बीच सरकार के संसदीय रूप की विश्वसनीयता गिर गई, जिनका मानना था कि यह प्रणाली निर्णायक सरकार प्रदान करने में असमर्थ है।

- **साम्यवादियों द्वारा हिंसा:** 1919 और 1920 के दौरान साम्यवादियों के नेतृत्व में हड़तालों का तांता लग गया। 1919 से हिंसक हड़तालें, दंगे, दुकानों की लूटपाट और श्रमिकों द्वारा कारखानों पर कब्ज़ा आम बात थी। सोवियत जैसे संगठन उभरने लगे और समृद्ध जमींदारों को उनकी भूमि से बेदखल कर दिया गया। इस प्रकार इटली में 1920 में साम्यवादी क्रांति का वास्तविक खतरा मौजूद था। लेकिन इसके बाद क्रांति का खतरा कम हो गया क्योंकि आपूर्तिकर्ताओं ने श्रमिकों को कच्चे माल की आपूर्ति बंद कर दी और इस प्रकार कारखानों पर कब्जा विफल होने लगा। साथ ही 1921 में कम्युनिस्ट पार्टी के गठन से भी क्रांति की संभावना कम हो गई क्योंकि इससे वामपंथी विभाजित (सोशलिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी) हो गए। फिर भी इटलीवासियों के बीच क्रांति का भय था। 1922 में, साम्यवादियों ने आम हड़ताल का प्रयास किया। इससे सरकार की विश्वसनीयता में गिरावट आई क्योंकि वह संपत्ति को सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाई थी। ऐसे ही वातावरण में मुसोलिनी ने रोम मार्च का नेतृत्व किया।
- **मुसोलिनी की लोकप्रियता:** मुसोलिनी एक पत्रकार के रूप में प्रसिद्ध था और आरंभ में समाजवादी विचारधारा से प्रभावित था। लेकिन जब प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान समाजवादियों ने युद्ध में इटली की भागीदारी का विरोध किया तो वह उनके विरूद्ध हो गया। तब उसने अपना समाचार पत्र निकाला। उसका दृष्टिकोण समाजवादी था और 1919 में उसने 'समाजवादी और गणतांत्रिक कार्यक्रम' के साथ इतालवी फासीवादी दल (Italian Fascist Party) की स्थापना की। उसने 1919-20 के दौरान श्रमिकों द्वारा कारखानों पर कब्जे का समर्थन किया, लेकिन जब कब्जे विफल होने लगे तो उसने अपना मार्ग बदल दिया। 1920 से, वह साम्यवादियों के विरूद्ध उत्तरोत्तर अतिवादी रुख अपनाता गया और उसके ब्लैक शर्ट दस्तों ने समाजवादी मुख्यालयों पर हमला करना आरंभ कर दिया। 1921 के अंत तक, विशेषकर कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के बाद, संपत्तिशाली वर्ग उसे एक उद्धारकर्ता के रूप में देखने लगा। उसने कैथोलिक चर्च का समर्थन प्राप्त करने के लिए 1921-22 में चर्च-समर्थक भाषण दिया। 1922 में उसने अपने दल के कार्यक्रम के गणतंत्रवादी भाग को छोड़ दिया जिससे मुसोलिनी के प्रति राजा का दृष्टिकोण नरम हो गया। इस प्रकार 1920-22 के बाद मुसोलिनी की नीतियों ने उसे सेना, चर्च, उद्योगपतियों और जमींदारों जैसे रूढ़िवादी और दक्षिणपंथी वर्गों में लोकप्रिय बनाया। इस हेतु समाजवादियों को भी दोषी ठहराया जाना चाहिए क्योंकि वे फासीवादी दस्तों द्वारा की जा रही हिंसा पर अँकुश लगाने के लिए सरकार के साथ काम करने में विफल रहे।

24.2. एसरबो कानून (Acerbo Law) ने सत्ता पर मजबूत पकड़ बनाने में मुसोलिनी की सहायता की (1923)

- इस कानून से आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली समाप्त हो गई थी।
- संसद में अधिकतम मत प्राप्त करने वाले दल को स्वत: दो-तिहाई सीटें आवंटित हो जाती थीं।
- 1924 में फासीवादी दल ने भारी अंतर से चुनावों में विजय प्राप्त की क्योंकि लोग स्थिर सरकार चाहते थे और इस प्रकार उनमें से अधिकांश लोगों ने एक दल को मत दिया जो फासीवाद का समर्थक था।

VISION IAS
www.VISIONIAS.com

24.3. अधिनायकवादी राज्य की दिशा में कदम

मुसोलिनी के अधीन, संविधान में परिवर्तनों के माध्यम से इटली अधिनायकवादी राज्य की दिशा में बढ़ चला। इनमें निम्नलिखित बातें सम्मिलित थीं:

- प्रधानमंत्री अब केवल राजा के प्रति उत्तरदायी था न कि संसद के प्रति।
- नए कानूनों के लिए अब संसद की मंजूरी की आवश्यकता नहीं थी।
- मतदाताओं की संख्या 1 करोड़ से घटाकर सिर्फ 30 लाख कर दी गई, क्योंकि अब केवल समाज के समृद्ध वर्गों को ही मताधिकार दिया गया।
- संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से, मुसोलिनी ने इल ड्यूस (Il Duce) (नेता) की उपाधि धारण की।

24.4. निगमित राज्य या कॉर्पोरेटिव स्टेट

(Corporate State or Corporative State)

मुसोलिनी के अधीन, इटली निगमित राज्य बनने की दिशा में आगे बढ़ा। इसकी निम्नलिखित कुछ विशेषताएँ थीं:

- निगमित राज्य की अवधारणा का लक्ष्य वस्तुतः वर्ग-संघर्ष को ख़त्म करने के उद्देश्य से श्रमिकों और नियोक्ताओं के बीच सहयोग बढ़ाना था।
- श्रमिकों के व्यापार संघों और नियोक्ता संघों को "निगमों" (corporations) में वर्गीकृत किया गया, जहां दोनों समूहों के सदस्यों से आपस में मिलकर काम करने और अपने विवादों का समाधान करने की आशा की जाती थी।
- श्रमिकों को हड़तालों की अनुमति नहीं थी और इसी तरह नियोक्ता कारखानों में तालाबंदी लागू नहीं कर सकते थे। केवल, फ़ासीवादी दल द्वारा नियंत्रित व्यापार संघों को ही श्रमिकों की ओर से बातचीत करने की अनुमति दी गई।
- श्रमिकों की स्वतंत्रता की समाप्ति के चलते उनके लिए क्षतिपूर्ति संबंधी योजनाएं आरंभ की गईं जिनमें उन्हें निःशुल्क छुट्टियाँ दी गईं। उनकी मजदूरी बढ़ा दी गई और उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए कुछ उपाय किए गए।

24.5 लेटरन संधि/समझौता (Lateran Treaty- 1929)

- चर्च और मुसोलिनी दोनों को साम्यवाद का भय था। लेकिन चर्च 1870 से ही सरकार के भी विरूद्ध था, क्योंकि इटली के एकीकरण के दौरान, पोप के राज्यों (Papal states) (जिनकी राजधानी रोम में थी और जो सीधे पोप के शासन के अधीन थे) को बलपूर्वक इटली के राज्य में मिला लिया गया था। इसके उपरांत पोप अपने आप को वेटिकन का बंदी कहता था।
- लेटरन संधि वह संधि थी जिसके माध्यम से मुसोलिनी ने पोप के साथ समझौता किया और राजनीतिक क्षेत्र में अपनी सर्वोच्चता को पुन: सुदृढ़ किया:
    - इटली ने वेटिकन सिटी को संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता दी।
    - पोप को 1870 के बाद क्षेत्र और संपत्ति की हानि के कारण उसकी सभी हानियों के लिए बड़ी राशि का भुगतान किया गया।
    - मुसोलिनी ने कैथोलिक धर्म को राज्य धर्म के रूप में स्वीकार किया।
    - इस संधि द्वारा सभी स्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य बना दी गई।
    - बदले में, पोप ने इटली को मान्यता दी।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

24.6. परिवर्तन

स्थानीय सरकार

- चुनी हुई नगर परिषदों और महापौर के पद का उन्मूलन कर दिया गया। रोम से नियुक्त अधिकारियों द्वारा शहरों का शासन चलाया जाना था। स्थानीय फासीवादी दल के मुखिया {जिन्हें रास (ras) भी कहा जाता था} इन अधिकारियों जितने ही शक्तिशाली थे।

सेंसरशिप

- फासीवाद विरोधी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं पर या तो प्रतिबंध लगा दिया गया या उनके संपादकों को फासीवाद समर्थकों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। मीडिया को युद्ध का महिमामंडन करने और फासीवादी दल की उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार करने का निर्देश दिया गया। व्यक्ति पूजा अर्थात् मुसोलिनी (इल ड्यूस) की भक्ति का प्रचार करने के लिए मीडिया का उपयोग किया गया।

शिक्षा व्यवस्था

- गुप्त पुलिस द्वारा शिक्षा पर निकटता से दृष्टि रखी गई। "विश्वास करो, पालन करो, लड़ो" के विचार को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया क्योंकि सब कुछ संघर्ष की दृष्टि से देखा जाता था। फासीवाद विरोधी शिक्षकों को तंत्र से निकाल दिया गया और बच्चों को युवा संगठनों में सम्मिलित होने के लिए विवश किया गया जो उनमें इल ड्यूस और चरम राष्ट्रवादी विचारधारा के पक्ष में मतारोपण करते थे।

24.7. इटली में मुसोलिनी के शासन का मूल्यांकन

मुसोलिनी के शासनकाल के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का आकलन निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है:

24.7.1. इटली वासियों के लिए फासीवाद के सकारात्मक पहलू

मुसोलिनी के शासन से इटलीवासियों को कुछ सकारात्मक लाभ हुए थे। उसने अर्थव्यवस्था और लोगों का जीवन सुधारने के लिए विभिन्न कदम उठाए। निम्नलिखित को मुसोलिनी के शासन के सकारात्मक लाभों के रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है:

- **उद्योग:** मुसोलिनी की सरकार ने जहां आवश्यक था सब्सिडी देकर उद्योगों को बढ़ावा दिया। 1930 तक लोहा और इस्पात का उत्पादन 1922 के स्तर से दोगुना हो गया। कपड़ा क्षेत्र में होनेवाला सुधार महत्वपूर्ण था। 1930 तक कृत्रिम रेशम का उत्पादन दस गुना बढ़ चुका था। इसी तरह, ऊर्जा क्षेत्र में सुधार दृष्टिगोचर होता था। कई जल विद्युत परियोजनाएं आरंभ की गईं और 1937 तक जल विद्युत उत्पादन दोगुना हो गया।
- **कृषि:** मुसोलिनी के अधीन इटली में गेहूं के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गयी, जिसे अक्सर बैटल ऑफ़ व्हीट (wattle of wheat) कहा जाता है। इसे खाद्य पदार्थों के मामले में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए मुसोलिनी द्वारा आरंभ किया गया था। किसानों को गेहूं उगाने के लिए कई प्रोत्साहन दिए गए लेकिन इस सफलता की कहानी का नकारात्मक पक्ष यह था कि डेयरी उद्योग और अन्य फसलों की कीमत पर गेहूं उत्पादन में वृद्धि हुई थी, क्योंकि किसानों ने इन्हें कम आकर्षक पाया और गेहूं उत्पादन हेतु और अधिक भूमि का उपयोग किया।
- **भूमि सुधार कार्यक्रम** आरंभ किया गया। अधिकतम भूमि को उत्पादक गतिविधियों में शामिल करने के लिए कई गतिविधियां आरंभ की गईं। इसमें पहाड़ी क्षेत्रों में वनारोपण और दलदल सुखाने जैसी गतिविधियां सम्मिलित थीं। इस कार्यक्रम को आंशिक सफलता मिली क्योंकि 1939 तक योजना लक्ष्य का केवल 1/10 ही प्राप्त हो पाया था।
- **लोक निर्माण कार्यक्रम:** यह बहुत ही प्रभावशाली कार्यक्रम था और बेरोजगारी की चुनौती से निपटने और अवसंरचना के निर्माण में सफल रहा था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **लोक मनोबल:** प्रचार में राष्ट्रवाद पर बल, आर्थिक सुधार, बेरोजगारी में कमी और बेहतर फसल उत्पादन से जनता का मनोबल बढ़ा। मुसोलिनी का शासन कानून और व्यवस्था की स्थिरता प्रदान करने में सक्षम रहा था।
- **"काम के बाद" संगठन (After work Organization):** यह संगठन श्रमिकों के लिए अवकाशकालीन गतिविधियां उपलब्ध कराने के लिए बनाया गया था। उदाहरण के लिए, यह संगठन समुद्री यात्राओं का आयोजन करता था और श्रमिकों को छुट्टियों पर जाने के लिए भत्ते दिए जाते थे। इससे श्रमिकों के बीच मनोबल और सामान्य सुख गुणांक और काम की संतुष्टि बढ़ाने में सहायता मिली।
- **विदेशी नीति में सफलता:** मुसोलिनी कम से कम आरंभ में कोर्फू घटना (1923), 1924 में फ्युम पर कब्जे और अबीसीनिया पर हमले के मामले में अपनी विदेश नीति में भी सफल रहा था। इन घटनाओं से इटली वासियों की प्रतिष्ठा बढ़ी क्योंकि इससे वे अपने आपको मजबूत शक्ति के नागरिक के रूप में देखने लगे।

24.7.2. इटली में फासीवाद के नकारात्मक पहलू

इन सभी सफलताओं के बावजूद, मुसोलिनी के शासन के अंतर्गत अभी भी कई समस्याएं अनसुलझी थीं। इनमें से कुछ समस्याएं भौतिक भूगोल में निहित थीं, जबकि अन्य या तो प्रशासनिक अक्षमता के कारण या अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के कारण थीं।

- **आर्थिक समस्याएं: -**
  - इटली में कोयला और तेल जैसे महत्वपूर्ण कच्चे माल की कमी बनी रही। इस प्रकार ऊर्जा सुरक्षा इटली के लिए हमेशा एक चुनौती रही। जलविद्युत में क्षमता निर्माण के लिए अधिक प्रयास किया जाना चाहिए था।
  - निर्यात को हानि पहुँची क्योंकि मुसोलिनी ने इटली की मुद्रा को मजबूत दिखाने के प्रयास में 'लीरा' को उसके वास्तविक मूल्य से काफी ऊँचा दर्शाया। इस प्रकार, बाजार पर राज्य नियंत्रण का विदेशी मुद्रा अर्जन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
- **1929 का आर्थिक संकट:** इटली की अर्थव्यवस्था पर महामंदी का नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इतालवी निर्यात गिरने लगा क्योंकि यूरोप और अमेरिका के निर्यात गंतव्य मंदी की जकड़ में थे और व्यापारिक बाधाएं खड़ी कर दी गई थीं। फिर भी, इल ड्यूस ने लीरा का अवमूल्यन करने की अनुमति नहीं दी जिससे निर्यात अप्रतिस्पर्धी हो गया। इसकी बजाय, मुसोलिनी ने मजदूरी और वेतन में कटौती की जिससे साधारण जनता को समस्या हुई। आर्थिक संकट के चलते बेरोजगारी फैल गई और लोगों की क्रयशक्ति और कम हो गई। यद्यपि "मंदी" के कारण निर्वाह की लागत कम हो रही थी, लेकिन वस्तुओं की कीमतों की तुलना में मजदूरी में तेज़ गिरावट आई, परिणामस्वरूप लोगों द्वारा "वास्तविक" मुद्रास्फीति अनुभव की गई।
- **असमानता:** इटली में आर्थिक समृद्धि में क्षेत्रीय असमानता भी थी। उत्तर समृद्ध था और वहां अधिकांश उद्योग अवस्थित थे जबकि दक्षिण गरीब था और वहां कृषि अर्थव्यवस्था थी। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आज भी दक्षिण इटली आर्थिक विकास के मामले में उत्तरी भाग से पीछे है।
- **सामाजिक सेवाएं:** मुसोलिनी सामाजिक सेवाओं के प्रबंध में विफल रहा। उदाहरण के लिए, 1943 तक सरकारी स्वास्थ्य बीमा की कोई योजना नहीं थीं और इस प्रकार मुसोलिनी का इटली कल्याणकारी राज्य नहीं था।
- **भ्रष्टाचार:** शासन अकुशल और भ्रष्ट था और काफी पैसा अधिकारियों की जेब में चला जाता था।
- **प्रशासन का अति-केंद्रीकरण:** एक प्रमुख समस्या यह थी कि मुसोलिनी काम प्रत्यायोजित नहीं करता था, जिससे वह काम के बोझ के तले दब गया। वह बहुत सारे आदेश देता था और अधिकारी उन आदेशों को लेते थे लेकिन कुछ करते नहीं थे क्योंकि मुसोलिनी ने कार्यान्वयन की निगरानी करने के लिए व्यापक तंत्र नहीं खड़ा किया था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

24.8. मुसोलिनी के पतन के कारण

- मुसोलिनी का कार्यकाल तब समाप्त हो गया जब राजा ने उसे पदच्युत कर दिया। यह जानते हुए भी कि इटली दूसरे युद्ध में भागीदारी का बोझ नहीं उठा सकता, द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रवेश करना उसकी सबसे बड़ी भूल थी। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद होने वाली कठिनाइयों को देखते हुए अधिकांश जनता युद्ध में इटली की भागीदारी के विरूद्ध थी। साथ ही, 1938 में यहूदी-विरोधी नीतियाँ अपनाने और यहूदियों को सरकारी नौकरियों से निकालने पर मुसोलिनी ने लोकप्रियता खो दी। इससे सार्वजनिक धारणा पैदा हुई कि मुसोलिनी ने इटली को जर्मनी का पिछलग्गू राज्य बना दिया है। युद्ध में भागीदारी से आम जनता के लिए ढेर सारी कठिनाइयां पैदा हुईं। भोजन की कमी थी और जनता को करों के बढ़ते बोझ का सामना करना पड़ा जिन्हें युद्ध का वित्तपोषण करने के लिए उगाहा जा रहा था। युद्ध में इटली के प्रवेश करने के बाद वास्तविक मजदूरी में 30% गिरावट आई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, कुछ प्रारंभिक सफलताओं के बाद इटली का सैन्य प्रदर्शन घटिया निकला। जब इतालवी सैनिकों ने उत्तरी अफ्रीका (1943) में ब्रिटिश बलों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया तो इटली को शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा। शीघ्र ही मित्र राष्ट्रों ने सिसली (1943) पर कब्जा कर लिया लेकिन मुसोलिनी ने अब भी आत्मसमर्पण नहीं किया। इसके बाद महापरिषद मुसोलिनी के विरूद्ध हो गई और राजा ने उसे पदच्युत कर दिया(1943)।
- लेकिन इसके बाद हिटलर ने उसे बचा लिया (1943) और जर्मन सैनिकों की सुरक्षा में उसे उत्तरी इटली में शासक के रूप में पदस्थापित किया। 1945 में, जब मित्र राष्ट्र (ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका) उत्तर की ओर बढ़ने लगे तो मुसोलिनी ने स्विट्जरलैंड भागने का प्रयास किया, लेकिन अपने शत्रुओं (जिन्हें पार्टिजन्स भी कहा जाता है) द्वारा पकड़ लिया गया और गोली मारकर मृत्यु के घाट उतार दिया गया।

24.9. मुसोलिनी की प्रणाली कितनी अधिनायकवादी थी?

- अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, मुसोलिनी इस फासीवादी अर्थ में कि "कोई भी व्यक्ति या समूह नहीं होना चाहिए जो राज्य द्वारा नियंत्रित न हो" या जैसा नाजियों ने जर्मनी में किया था, पूरी तरह से अधिनायकवादी प्रणाली का निर्माण करने में विफल रहा था। मुसोलिनी ने कभी भी राजा विक्टर इमैन्यूएल या पोप का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त नहीं किया। 1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में जब उसने यहूदियों पर हमला करना आरंभ किया तो पोप मुसोलिनी का अत्यधिक आलोचक हो गया। साधारण जनता ने केवल तब तक फासीवाद को सहन किया जब तक कि उन्हें इससे लाभ मिला। निगम राज्य व्यापारियों पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण नहीं लागू कर पाया क्योंकि वे केवल अधीनता का दिखावा करते थे और फासीवादी दल के फंड में बड़ा अंशदान करके अपनी स्वतंत्रता खरीद लेते थे।

25. जर्मनी: वाइमर गणतंत्र और हिटलर का उदय

25.1. जर्मन क्रांति (नवंबर 1918-अगस्त 1919)

- यह नवंबर 1918 से लेकर अगस्त 1919 तक चलने वाले टकराव की अवधि थी जिसके परिणामस्वरुप जर्मनी में राजशाही का अंत हुआ और गणतंत्र की स्थापना हुई।
- प्रथम विश्वयुद्ध के अंत में जब जर्मनी हार की ओर बढ़ने लगा तब जनमत वहाँ के सम्राट कैसर के विरूद्ध हो गया। नवंबर 1918 में एक क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप कैसर विल्हेम द्वितीय को गद्दी छोड़नी पड़ी और हॉलैंड निर्वासित होना पड़ा। जनवरी 1919 में हुए लोकतांत्रिक चुनावों के

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

बाद वामपंथी सोशल डेमोक्रेट पार्टी सत्ता में आई। (सोशल डेमोक्रेट्: जिनके कुछ विचार मार्क्सवादी थे, लेकिन उनका मानना था कि हिंसात्मक क्रांति के बजाय शांतिपूर्ण साधनों और संसदीय लोकतंत्र के माध्यम से समाजवाद प्राप्त किया जा सकता है)। उसी समय जर्मनी में स्पार्टावादी विद्रोह (4 जनवरी 1919 से 19 जनवरी 1919) हुआ। यह अतिवादी कम्युनिस्टों की हिंसक क्रांति (आम हड़ताल और गली युद्ध) थी जो रूसी क्रांति (1917) से प्रेरित थी और उन्होंने बर्लिन सहित कई शहरों पर कब्जा कर लिया। स्पार्टावादी विद्रोह से सरकार की विश्वसनीयता का क्षरण हुआ क्योंकि इसे कुचलने के लिए सरकार को फ्री-कॉर्प्स (कम्युनिस्ट विरोधी भूतपूर्व सैन्य अधिकारियों द्वारा खड़ी की गई निजी सेना) की सहायता लेनी पड़ी। अगस्त 1919 में वाइमर में एक नया संविधान अपनाया गया (1919 में बर्लिन में उथल-पुथल थी, इसलिए संविधान सभा की बैठक वाइमर में हुई इसलिए इसका नाम "वाइमर गणतंत्र" पड़ा)। इस प्रकार वाइमर गणतंत्र अस्तित्व में आया और 1919 से लेकर 1933 तक बना रहा।

25.2. वाइमर गणतंत्र के विरूद्ध हुए विफल प्रयास

जर्मन समाज के कुछ वर्ग वाइमर गणतंत्र से घृणा करते थे और उन्होंने इसे उखाड़ फेंकने के कई प्रयास किए। वाइमर गणतंत्र की सरकार वर्साय की संधि पर सहमत हो गई थी और इससे चरम दक्षिणपंथी वर्ग अप्रसन्न थे। अतिवादी वामपंथी जर्मनी को एक कम्युनिस्ट देश के रूप में देखना चाहते थे। वाइमर गणतंत्र के विरूद्ध हुए कुछ विफल प्रयास निम्नलिखित हैं-

- कम्युनिस्टों द्वारा **स्पार्टावादी विद्रोह** (1919)
- दक्षिणपंथी वर्गों द्वारा **कप्प पुत्स्च** (Kapp Putsch-1920): पुत्स्च का अर्थ अवैध रूप से या बलपूर्वक सरकार को अचानक उखाड़ फेंकना है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सरकार ने फ्री-कॉर्प्स को भंग करने प्रयास किया। परन्तु फ्री-कॉर्प्स ने विघटित होने से मना कर दिया और डॉ कप्प को चांसलर घोषित कर दिया। जर्मन सेना दक्षिणपंथी राष्ट्रवादियों के प्रति सहानुभूति रखती थी इसलिए उसने कोई कार्रवाई नहीं की। अंततः सरकार को कम्युनिस्टों की सहायता मिली जिन्होंने आम हड़ताल से बर्लिन को पंगु बना दिया। कप्प को त्यागपत्र देना पड़ा और फ्री-कॉर्प्स को भंग कर दिया गया और वाइमर गणतंत्र बच गया।
- **हिटलर का म्यूनिख बीयर हॉल पुत्स्च (1923):**
    - **ल्यूडेनडॉर्फ:** ल्यूडेनडॉर्फ प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी का बहुत ही महत्वपूर्ण जनरल था और बेल्जियम में लीज की लड़ाई में जर्मन विजय के लिए उत्तरदायी था। वह असीमित पनडुब्बी युद्ध का समर्थक था। उसने 1917 में रूस के साथ कठोर शर्तों पर हुई ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ल्यूडेनडॉर्फ को प्रथम विश्वयुद्ध के बाद त्यागपत्र देने के लिए विवश होना पड़ा। उसकी राय थी कि सरकार में सम्मिलित वामपंथी तत्वों द्वारा सेना की पीठ में छूरा घोंपने के कारण जर्मनी युद्ध हारा था। वह सोशल डेमोक्रेट सरकार का बड़ा आलोचक था।
    - बीयर हॉल पुत्स्च वस्तुतः ल्यूडेनडॉर्फ की सहायता से म्यूनिख में बावेरियन राज्य सरकार का तख्तापलट करने का हिटलर का एक प्रयास था। उसके पश्चात एक राष्ट्रीय क्रांति के द्वारा बर्लिन की राष्ट्रीय सरकार को उखाड़ फेंकने की योजना भी बीयर हॉल पुत्स्च में शामिल थी। रुर क्षेत्र पर फ्रांसीसी कब्जे और परिणामस्वरूप जर्मन मुद्रा के अवमूल्यन की पृष्ठभूमि में यह पुत्स्च आरंभ किया गया था। यह पुत्स्च विफल हो गया और हिटलर पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। हिटलर ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए इस मुकदमे द्वारा प्रदान किए गए मंच का उपयोग किया। पुत्स्च की विफलता से हिटलर को पहली बार राष्ट्रीय प्रचार मिला। उसे 5 वर्ष के कारावास का दण्ड मिला, लेकिन केवल 9 महीने ही वह जेल में रहा क्योंकि बावेरिया के अधिकारी उसके लक्ष्यों के प्रति सहानुभूति रखते थे। पुत्स्च का स्थायी परिणाम नाजी प्रचार में अत्यधिक वृद्धि थी।

VISION IAS
www.VISIONIAS.com

25.3. वाइमर गणतंत्र के तीन चरण

- **अस्थिरता (1919-23):** इस चरण के दौरान वाइमर गणतंत्र को उखाड़ फेंकने के विभिन्न प्रयासों के कारण वाइमर गणतंत्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा था। इन प्रयासों में स्पार्टावादी विद्रोह, कप्प पुत्स्च और बीयर हॉल पुत्स्च शामिल थे। वर्साय की संधि की कठोर शर्तों ने जर्मनी की अर्थव्यवस्था को अत्यंत दुर्बल बना दिया, सरकार की छवि को धूमिल कर दिया और लोगों के आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई।
- **स्थिरता और आर्थिक विकास (1923- 29):** अपने विदेश मंत्री गुस्ताव स्ट्रेसमान के सक्षम नेतृत्व में जर्मनी ने ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ तनाव कम किया। जर्मनी को डेविस प्लान (1924) के अंतर्गत अमेरिकी ऋण मिला और उसका आर्थिक पुनरुद्धार आरंभ हुआ।
- **अस्थिरता (1929-33):** 1929 की महामंदी के कारण अमेरिकी अर्थव्यवस्था चरमरा गई, परिणामस्वरूप जर्मनी के लिए अमेरिकी ऋण की उपलब्धता समाप्त हो गई। इससे जर्मन अर्थव्यवस्था को हानि पहुंची। उसके निर्यात में गिरावट आई और मुद्रा का मूल्य गिर गया। इसके अतिरिक्त बेरोजगारी में भी वृद्धि हुई। इसके साथ ही नाजी पार्टी जर्मनी की सभी समस्याओं के लिए सरकार को दोषी ठहराते हुए सरकार विरोधी प्रचार कर रही थी।

25.4. वाइमर गणतंत्र का पतन

वाइमर गणतंत्र के पतन के निम्नलिखित कारण थे:

- **सरकार की विश्वसनीयता में गिरावट:**
    - **वर्साय की संधि:** सरकार ने वर्साय की संधि स्वीकार कर ली थी, जो अपनी कठोर शर्तों के कारण बहुत अपमानजनक थी और इसके लिए राष्ट्रवादियों ने सरकार को कभी क्षमा नहीं किया।
    - **लोकतंत्र विरोधी भावनाएं:** फ्रांस और ब्रिटेन के विपरीत लोकतंत्र ने विचारधारा के रूप में जर्मनी की मुख्यधारा की चेतना में प्रवेश नहीं किया था। जनता में लोकतंत्र के प्रति सम्मान का पारंपरिक अभाव था क्योंकि जर्मन लोग अधिकारी वर्ग और सेना को देश के सही नेता के रूप में देखने के आदी थे। शिक्षक, वकील, सिविल सेवक और न्यायपालिका जैसे कई वर्ग वाइमर गणतंत्र के विरूद्ध थे।
    - **अस्थिरता:** वाइमर गणतंत्र स्थिर निर्णायक सरकार प्रदान करने में विफल रहा। अस्थिर गठबंधन वाली सरकारों का आना और जाना लगा रहा क्योंकि वाइमर संविधान ने आनुपातिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली अपनाई थी। इस व्यवस्था से सभी राजनीतिक समूहों (सोशल डेमोक्रेट्स, कम्युनिस्ट, कैथोलिक सेंटर पार्टी, नेशनल सोशलिस्ट या नाजी) को उनके द्वारा प्राप्त मतों के अनुपात में सीटें मिलती थीं। इससे ऐसी स्थिति पैदा हुई जिसमें कोई भी दल कभी भी बहुमत में नहीं होता था। इस प्रकार कोई भी सत्ताधारी दल पूरी तरह से अपने कार्यक्रम लागू नहीं कर सकता था।
    - **अनुभवहीनता:** सरकार चलाने में राजनीतिक दलों की अनुभवहीनता का परिणाम राइखस्टैग (संसद) के सुचारु संचालन में कमी के रूप में सामने आया। वाइमर संविधान से पहले, वास्तविक शक्ति चांसलर के पद में निहित थी और राइखस्टैग के पास कम शक्तियाँ होती थीं। यह प्रणाली कई वर्षों से चल रही थी। लेकिन वाइमर संविधान ने राइखस्टैग में अधिक शक्तियां निहित कर दी और चांसलर की शक्तियों में कमी कर दी। चांसलर को अब राइखस्टैग के प्रति उत्तरदायी बनाया गया जिसके पास निर्णय लेने की अंतिम शक्ति थी। लेकिन दलों के बीच आम सहमति की कमी के कारण राइखस्टैग में लगातार अराजकता रही और इस तरह राइखस्टैग जन स्वीकार्यता नहीं प्राप्त कर सका।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- **निजी सेनाएं:** राजनीतिक दलों की निजी सेनाओं ने सरकार के प्राधिकार को कम कर दिया। दलों के बीच असहमति इतनी कटु हो गई थी कि मनचाहा कार्य करवाने और प्रतिद्वंद्वी दलों से सुरक्षा के लिए उन्होंने अपनी निजी सेनाएँ खड़ी कर लीं।
- कम्युनिस्ट और राष्ट्रवादी वैसे भी गणतंत्र में विश्वास नहीं करते थे और सोशल डेमोक्रेटों के साथ सहयोग करना उन्होंने अस्वीकार कर दिया। कम्युनिस्ट हिंसक तरीके से पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना चाहते थे, जबकि राष्ट्रवादी तानाशाही या सैन्य शासन के पक्ष में थे।

- **सड़कों पर हिंसा में वृद्धि** हुई क्योंकि निजी सेनाएँ एक-दूसरे (विशेषकर 1929 के बाद से) से लड़ने लगीं और कामगारों ने हिंसक हड़तालों का आयोजन किया। अन्य घटनाओं में स्पार्टावादी विद्रोह, कप्प पुत्स्च और म्यूनिख बीयर हॉल पुत्स्च सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त राजनीतिक हत्याओं का सिलसिला शुरू हो गया विशेषकर पूर्व फ्री-कॉर्प्स के लोगों द्वारा कम्युनिस्ट नेताओं की हत्या। दक्षिणपंथी दलों के विरोध के कारण सरकार अपराधियों पर लगाम नहीं लगा पा रही थी। न्यायालय भी पूर्व फ्री-कॉर्प के लोगों को आसान दण्ड देकर छोड़ देते थे क्योंकि न्यायपालिका भी दक्षिणपंथी राष्ट्रवादियों के प्रति सहानुभूति रखती थी। 1923-29 के दौरान जब समृद्धि का काल था तब हिंसा कम थी। लेकिन 1929 के आर्थिक संकट के बाद हिंसा बढ़ गई; विशेषकर नाजियों और कम्युनिस्टों के मध्य।
- **वाइमर गणराज्य की आर्थिक समस्याएं:**
  - युद्ध में हुए अत्यधिक व्यय के कारण 1919 में जर्मनी के दिवालिया होने की स्थिति थी। इस प्रकार वाइमर गणतंत्र को विरासत में बहुत ही खराब अर्थव्यवस्था मिली थी।
  - **प्रथम विश्वयुद्ध की क्षतिपूर्ति**: वर्साय की संधि द्वारा आरोपित युद्ध क्षतिपूर्ति की उच्च लागत से जर्मन मुद्रा मार्क का मूल्य गिर गया।
  - **युद्ध क्षतिपूर्ति**: 1921 तक जर्मनी को वार्षिक किश्तों के अस्थायी निलंबन का अनुरोध करना पड़ा। 1922 में जर्मनी वार्षिक भुगतान करने में विफल रहा। 1923 में फ्रांस ने महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र रूर पर कब्जा कर लिया। यहाँ पर जर्मन लोगों ने फ्रांस के लिए कुछ भी उत्पादन करने से मना कर दिया और निष्क्रिय प्रतिरोध के साथ इसका उत्तर दिया। इससे जर्मनी में मुद्रास्फीति बहुत बढ़ गई और मार्क का मूल्य गिर गया।
  - **1923-29:** डेविस प्लान (1924) और यंग प्लान (1929) के कारण 1923-29 तक का समय समृद्धि का वर्ष था। डेविस प्लान के माध्यम से जर्मनी को अमेरिकी ऋण मिलने लगा। अपनी क्षमतानुसार इस ऋण का वार्षिक भुगतान करने की उसे छूट प्राप्त थी। साथ ही फ्रांस ने रुर क्षेत्र खाली करने पर सहमति व्यक्त की। फलस्वरूप जर्मनी में आर्थिक पुनरुद्धार आरंभ हुआ। यंग प्लान (1929) के अनुसार जर्मनी द्वारा भुगतान की जाने वाली कुल युद्ध क्षतिपूर्ति 6600 मिलियन पाउंड से घटाकर 2000 मिलियन पाउंड कर दी गई।
  - जर्मनी पर 1929 के आर्थिक संकट का प्रभाव:
    - अमेरिका ने ऋण देना बंद कर दिया और कई अल्पावधिक ऋणों के पुनर्भुगतान की मांग की।
    - निर्यात बाजारों से कम मांग के चलते जर्मन निर्यात को चोट पहुंची।
    - अमेरिकी कार्रवाइयों से जर्मन मुद्रा में विश्वास का संकट पैदा हो गया और बैंकों में भीड़ लगने लगी।
    - संकट से निपटने वाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति स्ट्रेसमान की 1929 में मृत्यु हो गई।

- कई कारखाने बंद हो गए और 1931 तक लगभग 4 लाख जर्मन बेरोजगार हो गए।
- नए चांसलर ब्रूनिंग (1930-32) ने पेंशन, मजदूरी और बेरोज़गारी भत्ता कम करके संकट का समाधान करने का प्रयास किया। इससे वाइमर गणतंत्र के प्रति कामगार वर्ग के समर्थन में भी कमी आई और दक्षिणपंथी पहले से ही उसके विरूद्ध थे। इस प्रकार 1932 तक वाइमर गणतंत्र पतन के कगार पर था।

- **हिटलर का प्रचार** लगातार सरकार के विरूद्ध लक्षित था। हिटलर वाइमर गणराज्य के अंतर्गत चांसलर (1933) बना अवश्य लेकिन वह वाइमर गणतंत्र और उसके संविधान में विश्वास नहीं करता था। उसने लगातार वर्साय संधि की शर्तें मानने वाले राजनेताओं को 'नवंबर अपराधी' के रूप में संदर्भित किया। हिटलर अपने प्रचार में कहता था कि नवंबर अपराधियों द्वारा जर्मनी की "पीठ में छूरा भोंका" गया था क्योंकि उन्होंने संधि पर हस्ताक्षर किया था। (नवंबर 1918 में सोशल डेमोक्रेटों ने जर्मन क्रांति के परिणामस्वरुप सत्ता पर कब्जा कर लिया था और मित्र देशों के साथ युद्धविराम पर हस्ताक्षर किया था)।

चित्र: हिटलर

25.5. हिटलर के उदय एवं नाजियों की लोकप्रियता के लिए उत्तरदायी कारण

हिटलर के उदय के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी थे:

- **जर्मनी के समक्ष आर्थिक समस्याएं:** आर्थिक समस्याओं और राइखस्टैग की अक्षमता के कारण हिटलर का प्रभाव बढ़ा। आर्थिक समस्याओं में वृद्धि के साथ राइखस्टैग में नाजियों द्वारा जीती गई सीटों की संख्या में भी वृद्धि होती गई क्योंकि लोगों ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने और आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए नाजियों की ओर देखना आरंभ कर दिया था। जर्मनों

का मानना था कि नाजियों का अनुशासन उच्च आर्थिक विकास प्राप्त करने में उनके देश की सहायता करेगा।

- **साम्यवाद का डर:** जर्मनी में फैल रहे साम्यवाद के डर से न केवल निम्न मध्यम वर्ग के बीच बल्कि उन श्रमिकों के बीच भी नाजियों के लिए बड़े पैमाने पर समर्थन बढ़ा जो सोशल डेमोक्रेटों की बजाय नाजियों का समर्थन करने लगे थे। साम्यवाद के डर से समृद्ध ज़मींदारों और उद्योगपतियों का समर्थन भी हिटलर को मिला। इन्हीं उद्योगपतियों और जमींदारों ने हिटलर का वित्तपोषण किया; विशेषकर उसके सत्तारोहण के बाद।
- **नाजी प्रचार:** नाजी कुशल प्रचारक थे और जनता की मनोभावना गढ़ने और प्रभावित करने का यही उनका तरीका था। उनके प्रचार के निम्नलिखित तत्व थे:
    - नाजी जर्मनी की सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं और साथ ही वर्साय की अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए भी सरकार को दोषी ठहराते थे। उन्होंने "पीठ में छूरा भोंकने" की भावना को लोकप्रिय बनाया जिसके अनुसार जर्मनी को प्रथम विश्वयुद्ध में आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता नहीं थी और वह युद्ध जीत सकता था।
    - नाजियों ने 'नवम्बर अपराधियों' (वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने वाले सोशल डेमोक्रेट, मार्क्सवादियों, यहूदी और जेसुइट) से जर्मनी को मुक्ति दिलाकर राष्ट्रीय एकता, समृद्धि और पूर्ण रोजगार का वादा किया। नाजियों ने युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान न करके और वर्साय की संधि को न मानते हुए स्थिति को पलटने का वादा किया। इसके साथ ही पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और ऑस्ट्रिया में रहने वाले सभी जर्मनों को एक साथ राइख में लाने का भी वादा किया।
- हिटलर के पास असाधारण राजनीतिक योग्यता और वाक-पटुता के माध्यम से सार्वजनिक भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता थी। वह अनन्त ऊर्जा वाला व्यक्ति प्रतीत होता था और उसे बहुत मजबूत इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति कहा जाता था।
- नाजी निजी सेना अर्थात Sturmabteilung अथवा S.A. (स्टॉर्म ट्रूपर्स) ने बेरोजगार युवाओं को कम वेतन और एक अधिक आकर्षक वर्दी का प्रलोभन दिया। इस प्रकार बहुत से बेरोजगार युवा S.A. की ओर आकर्षित हुए।
- वाइमर गणतंत्र और नाजियों की सरकार के बीच भारी अंतर था। जहां वाइमर सरकारें अनिर्णायक थीं और एकता से रहित एवं गुटबाजी से ग्रस्त थीं, वहीं नाजियों ने कानून और व्यवस्था, निर्णायक सरकार और राष्ट्रीय गौरव का पुनर्स्थापन सुनिश्चित किया।
- नाजी किसी भी राजनीतिक विकल्प या कम्युनिस्टों या कैथोलिक सेंटर पार्टी का विरोध भी कुचलने में सफल रहे।

25.6. हिटलर को चांसलर क्यों बनाया गया था?

1932 में दक्षिणपंथी (राष्ट्रवादी) सत्ता में आए। उन्होंने हिटलर की नाजी पार्टी को एक गठबंधन सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया, जिसमें पहली बार उसे उप-चांसलर के पद का प्रस्ताव दिया गया परन्तु बाद में उसके आग्रह पर उसे चांसलर का पद देने पर सहमति बनी। दक्षिणपंथी राजनेता हिटलर को अपने साथ इसलिए जोड़ना चाहते थे क्योंकि:

- उन्हें नाजी नेतृत्व वाले पुत्स्च द्वारा हिंसात्मक रूप से उखाड़ फेंके जाने से डर लगता था।
- नाजियों को सम्मिलित किए जाने से उन्हें सुविधाजनक बहुमत प्राप्त हो सकता था, जो न केवल स्थिरता प्रदान करेगा अपितु राईखस्टैग की कम शक्तियों वाली पूर्व-वाइमर स्थिति में वापस लाने का मार्ग प्रशस्त कर सकता था।
- इससे उन्हें कम्युनिस्टों की लोकप्रियता को रोकने में सहायता प्राप्त होगी।
- कई लोगों का यह मानना था कि हिटलर को नियंत्रित करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय उसे अपने साथ मिला लेना है।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

25.7. हिटलर के पास शक्ति का संचय

1933 में चांसलरशिप प्राप्त होने के पश्चात, हिटलर ने नाजियों के लिए एकल पार्टी बहुमत से जीतने की आशा में आम चुनावों की मांग की।

- उसने नाजियों को लाभ पहुँचाने के लिए राज्य की मशीनरी का उपयोग किया। जब हिंसक SA और SS ने कम्युनिस्टों की हत्या की तो उसने पुलिस को उनके विरुद्ध कार्यवाही न करने के लिए कहा। उसने पुलिस के शीर्ष पदों पर भी नाजियों को नियुक्त किया।
- **राईखस्टैग का अग्निकांड (1933):** राईखस्टैग में कुछ उग्र कम्युनिस्टों ने आग लगा दी थी परन्तु यह कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा सुनियोजित कार्य नहीं था। फिर भी हिटलर ने इस आगजनी का दोष कम्युनिस्ट पार्टी को दिया और इस घटना का उपयोग कम्युनिज्म के प्रति भय उत्पन्न करने और चुनावों में बड़े स्तर पर समर्थन प्राप्त करने के लिए किया।
- 1933 के चुनावों में हिटलर कुल 44 प्रतिशत वोटों से विजयी हुआ।
- **एनेबलिंग ला (कानून द्वारा सक्षम किया जाना) 1933:** इस कानून से हिटलर को निरंकुश शक्तियाँ प्राप्त हो गईं और वाईमर संविधान का अंत हो गया। इस कानून के अंतर्गत:
    - सरकारी कानूनों को चार वर्षों तक राईखस्टैग की अनुमति की आवश्यकता नहीं थी। इसका आशय यह था कि हिटलर अब तानाशाह बन गया था और वाईमर गणराज्य का अंत हो गया था चांसलर या सरकार का कानून संविधान के विरुद्ध होकर भी वैध हो सकता था क्योंकि इन कानूनों को प्रभावी होने के लिए संसद की अनुमति की आवश्यकता नहीं थी।
    - इस कानून को पारित करने के लिए 2/3 बहुमत की आवश्यकता थी जिसे उसने बलपूर्वक प्राप्त कर लिया था। मतदान के दौरान SA सैनिकों को राईखस्टैग पर तैनात कर दिया गया और उसके बाहर SS सैनिकों ने "विधेयक या गोली (हत्या)" का नारा लगाया, जिससे वहां अत्यधिक भय वाला वातावरण उत्पन्न हो गया।
- एनेबलिंग विधेयक पारित होने के पश्चात हिटलर ने "**ग्लीकस्कालटंग की नीति"** (बलात समन्वय) की नीति का अनुसरण किया जिसने जर्मनी को एक सर्वाधिकारवादी / फासीवादी राज्य बना दिया। उसने विपक्ष को कुचलने के लिए कुख्यात गेस्टापो (गुप्त पुलिस) का भी उपयोग किया।

25.8. हिटलर का शासन या नाजीवादी कार्यप्रणाली

जर्मनी में हिटलर के शासन की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं:

- अन्य सभी पार्टियों को प्रतिबंधित कर दिए जाने के कारण जर्मनी एकल पार्टी राज्य बन गया था।
- प्रत्येक राज्य में एक नाजी विशेष आयुक्त (नियुक्त तानाशाह) नियुक्त किया गया था और राज्य की विधानसभाओं से उनकी शक्तियाँ छीन ली गईं थीं। वहां अब कोई राज्य या नगरपालिकाओं के चुनाव नहीं होने थे।
- सिविल सेवाओं से यहूदियों को या जो भी नाजियों के विरुद्ध था, उसका सफाया कर दिया गया था।
- ट्रेड यूनियनों को समाप्त कर दिया गया और उनके स्थान पर नाजी पार्टी के कठोर नियन्त्रण वाला जर्मन श्रमिक मोर्चा प्रतिस्थापित कर दिया गया। सभी श्रमिकों को इसी मोर्चे का सदस्य होना अनिवार्य था। हड़तालों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और सभी प्रकार की शिकायतों का निवारण अब सरकार का उत्तरदायित्व था।
- शिक्षा व्यवस्था पर कड़ी नजर रखी गई ताकि बच्चों के मस्तिष्क को शासन के अनुकूल बनाया जा सके –
    - लिंग, यहूदी-विरोधी प्रचार, जातीय श्रेष्ठता (अर्थात आर्य एकमात्र स्वामी जाति है) के सम्बन्ध में रूढ़िवादी दृष्टिकोण, हिटलर समर्थक प्रचार इस अनुकूलन की विशेषताएँ थीं।
    - गेस्टापो शिक्षकों पर निकट से नजर रखता था और बच्चे गेस्टापो से नाजी विरोधी शिक्षकों की शिकायत कर सकते थे।
    - यहूदी बच्चों को विद्यालयों से बाहर कर दिया गया था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- हिटलर यूथ (लड़कों के लिए) और लीग ऑफ़ जर्मन मेडेन्स (लडकियों के लिए): सभी बच्चों को 14 वर्ष की आयु प्राप्त करते ही इन संगठनों में सम्मिलित होना अनिवार्य था।
- "फ़्युहरर सदैव सही हैं", "फ़्युहरर की आज्ञा का पालन करना चाहिए" आदि जैसे नारों को लोकप्रिय बनाया गया।

- मीडिया पर प्रचार मंत्रालय का नियन्त्रण था।
- देश के आर्थिक जीवन को घनिष्ट रूप से दो प्रमुख उद्देश्यों के लिए संगठित किया गया था – बेरोजगारी को घटाना और चालू खाते घाटे (CAD) को कम करने के लिए निर्यात में वृद्धि और जर्मनी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए न्यूनतम आयात। इसकी विशेषताओं में सम्मिलित थे:
  - उद्योगों को यह बताना कि क्या उत्पादन करना है।
  - भोजन की कीमतों पर नियन्त्रण।
  - मुद्रास्फीति से बचने के लिए विदेशी मुद्रा के मूल्यों पर नियन्त्रण; उदाहरणार्थ मुद्रा को स्थिर किया गया।
  - स्वच्छता, सडक निर्माण और स्लम बस्तियों को हटाने जैसी सार्वजनिक कार्यों की बड़ी योजनाएँ।
  - तेल आयात को कम करने के लिए जैव ईंधन के उत्पादन के प्रयास किये गए।
  - व्यापारिक सहभागियों से आयात के बदले में उन्हें जर्मन सामान खरीदने के लिए विवश करना। ऐसा करने के लिए नकद भुगतान मना किया गया और जर्मनी में विदेशियों के बैंक खातों को जब्त किया गया।
- धर्म को राज्य के नियन्त्रण में लाया गया और हिटलर ने नन, पुजारियों को बंदी बना कर और उन्हें बंदी शिविरों में भेज कर उन पर कड़ी कार्यवाही की।
- इच्छामृत्यु अभियान: यहाँ नाजियों ने मानसिक रोगियों की हत्या की। यह नाजी पार्टी की "जातीय स्वच्छता" की नीति पर आधारित था, जिसमें यह विश्वास किया जाता था कि जर्मन लोगों को 'जातीय रूप से अस्वस्थ' और विकलांगता से मुक्त किया जाना है। यह सामाजिक डार्विनवाद में नाजियों के विश्वास का उदाहरण था, यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें 'प्राकृतिक चयन' और 'योग्यतम की उत्तरजीविता' की जैविक अवधारणाओं को राजनीति और समाजशास्त्र में लागू किया जाना है।
- हिटलर के अधीन जर्मनी एक पुलिस राज्य बन गया था।
- 1933 में यातना गृह प्रारम्भ किये गये।
- यहूदी विरोधी नीति:
  - नाजी प्रचार में यहूदियों को जर्मनी की हर समस्या के लिए दोषी ठहराया गया।
  - नौकरियों से यहूदियों को हटा दिया गया।
  - इन प्रचार अभियानों को न्यूरेम्बर्ग कानूनों (1935) द्वारा कानूनी स्थिति प्रदान की गई, जिसमें:
    - यहूदियों को जर्मन नागरिकता से वंचित कर दिया गया।
    - आर्य जाति की शुद्धता के सरंक्षण के लिए यहूदियों को गैर-यहूदियों से विवाह करने से मना कर दिया गया।
    - जिस व्यक्ति का एक भी दादा-दादी/नाना-नानी यहूदी थे, उसे यहूदी की ही श्रेणी में रखा गया।
  - "अंतिम समाधान" यहूदियों का सर्वनाश था, जिसका उद्देश्य सभी यहूदियों को भूखा रख कर मारना या उनसे बंदी शिविरों में उनकी मृत्यु तक श्रम कराना और उन्हें विषैली गैस चैम्बरों में डाल कर मार देना था।

VISION IAS

- प्रत्येक वर्ष भव्य जुलूसों, परेड और रैलियों के द्वारा राज्य की शक्ति का दिखावटी प्रदर्शन।
- 1939 में हिटलर बेरोजगारी को समाप्त करने में सफल हुआ इस सफलता के निम्नलिखित कारण थे:
    - लोक निर्माण योजनाएँ
    - विशाल पार्टी नौकरशाही ने अतिरिक्त रोजगार के अवसर निर्मित किए।
    - यहूदी और नाजी विरोधियों को नौकरियों से हटा दिया गया था। इससे नए स्थान रिक्त हुए।
    - अनिवार्य सैन्य सेवा (कोंस्क्रिप्शन) 1935 में प्रारम्भ की गई थी, जिससे अतिरिक्त नौकरियाँ सृजित हुईं।
    - 1934 में पुन:शस्त्रीकरण प्रारम्भ किया गया जिससे उद्योगों में रोजगार को बढ़ावा मिला।
- हिटलर को सभी वर्गों से समर्थन प्राप्त हुआ अर्थात:
    - किसान – उत्पादन के उचित मूल्य निर्धारित किये गए। इसके अतिरिक्त खाद्य में आत्मनिर्भरता लाने के लिए किसानों को प्रोत्साहन दिया गया।
    - कामगार – “Strength Through Joy (स्ट्रेंथ थ्रू जॉय)” नामक संगठन ने रियायती छुट्टियाँ, नि:शुल्क सिनेमा टिकट आदि वितरित किए गए।
    - व्यवसायियों ने हिटलर का समर्थन इसलिए किया क्योंकि उसने उन्हें कम्युनिस्टों से और प्रतिबंधित ट्रेड यूनियनों से सुरक्षा प्रदान की।
    - सेना हिटलर से इसलिए प्रसन्न थी क्योंकि उसने पुन:सशस्त्रीकरण और अनिवार्य सैन्य सेवा प्रारम्भ की थी। हिटलर ने SS का उपयोग करके “नाईट ऑफ़ लॉन्ग नाईव्स” में रोह्म (Rohm) की हत्या कर दी। रोह्म SA का मुखिया था, वह SA और सेना का विलय कर के एक जनरल बनना चाहता था। इसका सेना के जनरलों द्वारा विरोध किया जाता था। सेना के जनरल कुलीन वर्ग से थे और वे SA को अपराधियों का एक समूह मानते थे। इसके अतिरिक्त वे रोह्म को अपने समकक्ष नहीं देखना चाहते थे, क्योंकि वह कथित रूप से समलैंगिक था।
- पहले चर्चा की जा चुकी है कि हिटलर की विदेश नीति सफल थी। उदाहरण के लिए पुन: सशस्त्रीकरण और अनिवार्य सैन्य सेवा, अंग्रेज-जर्मन नौसेना समझौते (1935) के द्वारा स्ट्रेसा मोर्चे को भंग करना, आस्ट्रिया के साथ अन्सच्ल्स (1938), म्यूनिख सम्मेलन (1938) चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार (1939), USSR के साथ अनाक्रमण संधि आदि।

25.9. हिटलर के शासनकाल का आंकलन

- **सकारात्मक :** उसने अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बेरोजगारी, कानून और व्यवस्था में सफलता प्राप्त की। यदि हिटलर द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने में सफल हो जाता तो वह पूर्णतः सफल होता।
- **नकारात्मक:**
    - आर्थिक सफलता केवल निम्नलिखित उपायों के माध्यम से प्राप्त की गई थी:
        - हिंसक उपाय।
        - रोजगार के अवसर यहूदियों को हटा कर बनाए गये थे।
        - लोक निर्माण योजनाओं के द्वारा रोजगार सृजन, श्रमिकों की वेतन वृद्धि और उन्हें रियायती अवकाश और अन्य सुविधाएँ प्रदान करने, सशस्त्रीकरण प्रारम्भ करने (1934), अनिवार्य सैन्य सेवा (1935) और किसानों को उनकी उपज का उच्च मूल्य प्रदान करने – जैसे उपायों ने व्यय में वृद्धि की जिससे राजकोषीय घाटे में वृद्धि हुई। इस प्रकार युद्ध अनिवार्य हो गया क्योंकि उपर्युक्त उपायों के व्यय को पूरा करने के लिए युद्ध ही एकमात्र समाधान था। युद्ध में विजय से हिटलर को पराजित क्षेत्रों से कच्चे माल की आपूर्ति हो सकती थी और तेजी से बढती हुई जर्मन जनसंख्या के लिए कृषि योग्य भूमि एवं लेबेन्स्रम (रहने का स्थान) प्राप्त हो सकता था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

26. जापान: सैन्य फासीवाद (Japan: Military Fascism)

- जापान में फासीवाद 1931 से 1945 तक चला। इसके प्रमुख लक्षणों में – कम्युनिस्टों का क्रूरता से दमन, सेना का विरोध करने वाले नेताओं की हत्या, चरम राष्ट्रवाद की ओर ध्यान देने के साथ शिक्षा पर कठोर नियन्त्रण, कच्चा माल प्राप्त करने और निर्यात बाजार बढ़ाने के उद्देश्य से एशियाई क्षेत्रों पर कब्जा करने के लिए शस्त्रीकरण और युद्ध की आक्रामक नीति का अनुसरण था।
- 1930 के प्रारम्भ में जापान एक सैन्य तानाशाही में परिवर्तित हो गया था, जिसने उसके चीन में होने वाले साम्राज्यवादी अभियानों को बढ़ावा दिया। आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं ने जापान को सेना के नियन्त्रण में धकेल दिया। जापान ने 1921 के मध्य तक आर्थिक वृद्धि का लाभ उठाया था। इसे प्रथम विश्वयुद्ध (1914-19) से बहुत ही लाभ पहुंचा था, क्योंकि युद्ध के पश्चात यूरोपीय शक्तियाँ आर्थिक रूप से बहुत निर्बल हो चुकी थीं और वर्साय की संधि से सम्बन्धित विवादों में उलझी हुई थीं। यूरोपीय देशों की आर्थिक निर्बलता ने उनके निर्यात को कम प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया था। इसके अतिरिक्त उनकी सैन्य शक्ति भी पूरी तरह से समाप्त हो गई थी, इसलिए वे जापानी आक्रमण को रोकने में असमर्थ थे। केवल अमेरिका ही एक ऐसा शक्तिशाली देश था जो जापान के साम्राज्यवादी विस्तार को रोक सकता था। परन्तु वह अलगाववाद की नीति का अनुसरण कर रहा था, जिसके अंतर्गत वैश्विक मामलों में कोई हस्तक्षेप न करना और किसी भी कीमत पर सैन्य विवाद से बचना शामिल था। जापान ने इस स्थिति का भरपूर लाभ उठाया। 1918 तक प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में जापान ने मित्र राष्ट्रों को जहाजरानी और अन्य सामान निर्यात कर के आर्थिक लाभ अर्जित किया। निर्यात बाजार में इसने यूरोपीय कम्पनियों का स्थान ले लिया था, विशेष रूप से एशिया में। आपूर्ति के जिन ऑर्डर्स को यूरोपीय कम्पनियाँ पूरा करने में असमर्थ थीं उसे जापान ने पूरा किया। प्रथम विश्वयुद्ध के समय जापान की कपास का निर्यात तीन गुना हो गया था और इसके व्यावसायिक पोतों की संख्या दोगुना हो गई थी।
- जापान की सामाजिक स्थितियाँ भी उसकी साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के लिए उत्तरदायी थीं। समाज के प्रभावशाली वर्ग जैसेकि सेना और रूढ़िवादी लोग लोकतंत्र के विरोधी थे और प्रायः सरकार की आलोचना करते रहते थे। चीन के प्रति सेना का दृष्टिकोण सरकार के नर्म और सौहार्द्रपूर्ण दृष्टिकोण के विपरीत था, क्योंकि उपनिवेशी साम्राज्य के विस्तार के लिए सरकार चीन के गृहयुद्ध का लाभ उठाने में विफल रही थी।
- आर्थिक स्थितियों की भी इसमें भूमिका थी। 1922 तक आर्थिक उछाल समाप्त हो गया था क्योंकि यूरोपीय देशों की आर्थिक स्थिति संभल गई थी और उन्होंने कुछ सीमा तक अपने खोए हुए निर्यात बाजार को भी प्राप्त कर लिया था। जापान में बेरोजगारी बढ़ी और किसान भारी मात्रा में हुए फसल उत्पादन के कारण धान की तेजी से घटती कीमतों की मार से प्रभावित थे। किसानों और श्रमिकों के विरोध को क्रूरता से दबा दिया गया था और इस प्रकार वे भी सरकार के विरुद्ध खड़े हो गए। जापान का निर्यात बुरी तरह से प्रभावित हुआ, क्योंकि आयातक देश आयात के लिए भुगतान करने की स्थिति में नहीं थे। ऐसी स्थिति में वैश्विक आर्थिक संकट ने जापान के लिए क्रन्तिकारी मोड़ का कार्य किया। मंचूरिया में चीनी कम्पनियाँ जापानी कम्पनियों का स्थान लेने का प्रयास कर रही थीं और जापानी व्यापार और व्यवसाय संकट में थे। 1931 की पृष्ठभूमि में यह असहनीय था। सेना ने 1931 में सरकार को बताये बिना मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया और 1932 में जब प्रधानमन्त्री ने आक्रमण का विरोध किया तो उस की हत्या कर दी गई। 1945 तक सेना ही देश को फासीवादी ढंग से चला रही थी। सम्राट की प्रतिष्ठा तो बहुत अधिक थी, परन्तु वे जापानी साम्राज्यवाद को नियंत्रित करने में विफल रहे क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं सेना उनके आदेश का पालन ही न करे। इस प्रकार 1930 के दशक में जापान में साम्राज्यवाद के लिए सेना उत्तरदायी थी कोई चुनी हुई सरकार नहीं। इसके अतिरिक्त आर्थिक समस्याओं और छोटे क्षेत्रीय आकार ने भी जापान को साम्राज्यवाद की वृद्धि के लिए प्रेरित किया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

27. स्पेन: फ्रैंको का फासीवाद (Spain: Franco's Fascism)

- 1885 से सम्राट अलफांसो-XIII के आधीन स्पेन एक संवैधानिक राजशाही था। यह कभी भी एक कुशल प्रशासन प्रदान करने में सक्षम नहीं रहा। 1921 में स्पैनिश मोरक्को के मूर्स द्वारा पराजय से शासन की प्रतिष्ठा को गहरा झटका लगा था 1923 में जनरल प्रिमो ने एक रक्तरहित तख्तापलट में सत्ता पर अधिकार कर लिया और 1925 में स्पेनिश मोरक्को में स्पेन के लिए युद्ध में विजय प्राप्त की। परन्तु वैश्विक आर्थिक मंदी (1929) के पश्चात हुए व्यापक विरोध प्रदर्शनों के कारण प्रिमो को त्यागपत्र देना पड़ा। आर्थिक संकट के कारण बेरोजगारी, पेसेटा (स्पेन की मुद्रा) के अवमूल्यन और सेना से समर्थन वापस लेने के कारण अंततः प्रिमो (जो फासीवादी नहीं था) को पद छोड़ना पड़ा। यहाँ तक कि सम्राट अलफांसो-XIII को भी 1931 में रक्तपात से बचने के लिए सिंहासन छोड़ना पड़ा और स्पेन एक गणतन्त्र बन गया। समाजवादियों और कट्टरपंथी मध्यवर्गीय लोगों की एक गठबंधन सरकार सत्ता में आ गई।

27.1. स्पेन के गृहयुद्ध (1936-39) से पूर्व की स्थिति

गणतन्त्र बनने के पश्चात हुए गृहयुद्ध की पूर्वसंध्या पर निम्नलिखित परिस्थितियाँ थीं:

- चर्च और नई रिपब्लिकन सरकार के बीच गहरा विद्वेष था।
- स्पेन के दो प्रान्त इससे स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे।
- 1929 का आर्थिक संकट स्पेन में आर्थिक मंदी का कारण बना। कृषि वस्तुओं की कीमतें गिर गईं, वाइन और जैतून के तेल का निर्यात घट गया और भूमि पर कृषि होनी बंद हो गई थी।
- सैन्य जनरलों द्वारा तख्तापलट का भी खतरा था।
- स्पेन का गृहयुद्ध वामपंथी और दक्षिणपंथियों के बीच संघर्ष का परिणाम था। वामपंथ में सामान्य रूप से ट्रेड यूनियन (अराजकतावादी और श्रमिक-संघवादी), समाजवादी और कम्युनिस्ट सम्मिलित थे, जबकि दक्षिणपंथियों में चर्च, सेना, जमींदार और उद्योगपति सम्मिलित थे।
- दक्षिणपंथी और वामपंथी दोनों ही विरोध करते थे और इस प्रकार गणतन्त्र, जो मध्य मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास कर रहा था वह क्षीण हो रहा था (क्योंकि सरकार वामपंथी समाजवादियों और मध्यवर्गीय कट्टरपंथियों का गठ्बन्धन थी, इसलिए दोनों पक्षों की मांगों में संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही थी)। उदाहरण के लिए दक्षिणपंथी सरकार के निम्नलिखित निर्णयों का विरोध कर रहे थे:
  - स्वाधीनता की मांग कर रहे दो प्रान्तों में से किसी एक को स्वशासन प्रदान करना।
  - धर्मनिरपेक्षता का कार्यान्वयन: चर्च और राज्य को अलग कर दिया गया था। पादरियों को सरकारी वेतनसूची से हटा दिया गया। शिक्षा पर से चर्च का नियन्त्रण हटा दिया गया था। इस प्रकार से चर्च की शक्तियों को कम कर दिया गया इसलिए चर्च और दक्षिणपंथी सरकार का विरोध कर रहे थे।
  - तख्तापलट के खतरे को दूर करने के लिए सेना के कई महत्त्वपूर्ण जनरलों को हटा दिया गया।
  - वामपंथियों की मांगों को पूरा करने के लिए बड़ी निजी सम्पदाओं (भूमि) का राष्ट्रीयकरण किया गया।
  - श्रमिकों की वेतन वृद्धि से उद्योगपति इनके विरोधी हो गये थे।
- वामपंथियों ने मध्यवर्गीय कट्टरपंथियों के साथ सहयोग करने के लिए समाजवादियों का विरोध किया। वे साम्यवादी राज्य की स्थापना के लिए पूंजीवाद के विरुद्ध एक हिंसक क्रांति चाहते थे, अतः उन्होंने हड़तालों, दंगों और दक्षिणपंथी नेताओं की हत्याएँ आरम्भ कर दीं।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

www.UPSCPDF.com

- 1933 में दक्षिणपंथी सत्ता में आए और उन्होंने पिछली गठबन्धन सरकार द्वारा उठाये गये सभी कदमों को पलट दिया। इससे वामपंथी गुट क्रोधित हो गया और उन्होंने स्वयं को **लोकप्रिय मोर्चे** के रूप में संगठित कर लिया और क्रान्तिकारी गतिविधियाँ बढ़ा दी गईं। दक्षिण पंथी सरकार और **जनरल फ्रैंको** के अधीन सेना ने लोकप्रिय मोर्चे का क्रूरता से दमन किया। उदाहरण के लिए, फ्रैंको ने हड़ताली खनिकों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इसी बीच दक्षिणपंथी फासीवादियों ने स्वयं को एक नई **फलांगे पार्टी** के रूप में संगठित कर लिया।
- गम्भीर दमन के कारण लोकप्रिय मोर्चा 1936 में सत्ता में आया। दक्षिणपंथी नेताओं में से एक की हत्या हो गयी और इससे गृहयुद्ध आरम्भ हो गया, जिसे सेना और फलांगे पार्टी (Falange party) द्वारा सरकार को पलटने और सैन्य तानाशाही स्थापित करने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया था।

27.2. स्पेन का गृहयुद्ध (1936-39)

- गृह युद्ध दक्षिणपंथी और वामपंथी शक्तियों के बीच लड़ा गया था। दक्षिणपंथी स्वयं को राष्ट्रवादी कहते थे और वामशक्तियाँ स्वयं को रिपब्लिकन कहती थीं।
- समस्या तब बढ़ गई जब जनरल फ्रैंको के अधीन राष्ट्रवादियों ने स्पेनिश मोरक्को में विद्रोह आरम्भ कर दिया।
- गृह युद्ध के दौरान इटली और जर्मनी ने राष्ट्रवादियों का टैंकों, सेनाओं, हवाई हमलों, भोजन आपूर्ति और कच्चे माल से सहायता की। जर्मनी ने 1937 में गुएर्निका शहर पर बमबारी की और इस कार्रवाई में 1600 निर्दोष नागरिकों की जान चली गयी।
- रूस ने रिपब्लिकन का समर्थन किया, वहीं ब्रिटेन और फ्रांस ने हस्तक्षेप करने से मना कर दिया। अमेरिका और यूरोप से फासीवादी स्वयंसेवक रिपब्लिकन के समर्थन के लिए स्पेन आए। **जवाहरलाल नेहरू** अपनी पुत्री इंदिरा गांधी के साथ 1938 में बर्सिलोना आए थे। बाद में उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा, *यह 1938 का यूरोप था, श्री नेविले चैम्बरलिन तुष्टीकरण में लगे हुए थे और विश्वासघात के मारे कुचले राष्ट्रों के शवों पर, म्यूनिख में आयोजित अंतिम दृश्य की ओर बढ़ रहे थे। वहां मैंने एक संघर्षरत यूरोप में सीधी उड़ान से सीधा बार्सिलोना में प्रवेश किया। वहां मैं पांच दिन रुका और रात में हवा से सीधे गिरते हुए बमों को देखता था। वहां मैंने और कुछ भी देखा, जिसने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया; और वहां, इच्छा और विनाश के बीच कभी भी आ जाने वाली आपदा, मुझे यूरोप में कहीं और से अधिक अपने साथ शांति अनुभव कराती थी। वहां प्रकाश था, साहस और दृढ संकल्प और कुछ सार्थक करने का प्रकाश।"*
- गृहयुद्ध में राष्ट्रवादियों की निम्नलिखित कारणों से विजय हुई:
  - फ्रैंको का समर्थ नेतृत्व
  - वामपंथियों में एकता का अभाव (उदाहरण – अराजकतावादी और समाजवादी बर्सिलोना में एक दूसरे के विरुद्ध लड़े)
  - इटली और जर्मनी ने फ्रैंको को इस आशा से समर्थन दिया कि यूरोप में एक और फासीवादी सरकार बनेगी।

27.3. स्पेन में फासीवाद (1939-75)

गृहयुद्ध का अंत स्पेन में एक फासीवादी सरकार की स्थापना के साथ हुआ, जिसका अस्तित्व 1975 में फ्रैंको की मृत्यु तक रहा। इस सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं:

- फ्रैंको इतना अधिक चतुर था कि उसने स्पेन को द्वितीय विश्व युद्ध से बाहर रखा। इससे हिटलर बहुत निराश हुआ।

VISION IAS

- फ्रैंको का शासन हिटलर और मुसोलिनी के शासन जैसा ही था, जिसमें दमन, सैनिक अदालतें और सामूहिक फांसी जैसे लक्षण थे। उसने मुसोलिनी और हिटलर की भांति "कॉडीलो" (नेता) जैसे- इल ड्यूस और फ्यूहरर की उपाधि धारण की।
- 1960 के दशक में, कॉडिलो ने शासन की दमनकारी नीति को कम करने के लिए कुछ कदम उठाये। उदाहरण के लिए – सैनिक अदालतें समाप्त की गईं, कामगारों को हड़ताल का सीमित अधिकार दिया गया और संसद के लिए चुनाव प्रारम्भ किये गए।
- फ्रैंको का स्पेन पूरी तरह से फासीवादी नहीं था। उदाहरण के लिए:
    - फ्रैंको ने चर्च का समर्थन किया और उसकी शक्तियाँ उसे लौटा दीं (उदाहरणस्वरुप शिक्षा को फिर से चर्च के नियन्त्रण में लाना)। ऐसा किसी भी फासीवादी सरकार में सम्भव नहीं था, जिसमें सभी नियन्त्रण और शक्तियाँ सरकार के हाथों में होती हैं।
    - युद्ध-विरोधी रुख: फ्रैंको ने द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लेने से मना कर दिया और युद्ध के समय में स्पेन निष्पक्ष रहा। यह युद्ध को एक महान राष्ट्र के जन्म के उपकरण के रूप में उपयोग करने की फासीवादी नीति के विरुद्ध है।
- 1977 में संवैधानिक राजशाही के साथ लोकतंत्र स्थापित करने के लिए पहले बहु-दलीय चुनाव आयोजित किये गये थे। 1986 में स्पेन यूरोपीय आर्थिक समुदाय में सम्मिलित हो गया और इसका पर्यटन उद्योग बहुत ही तेजी से विकसित हुआ।

28. फासीवादी दर्शन

- फासीवाद की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है, क्योंकि उनमें मार्क्स जैसा कोई भी फासीवादी लेखक नहीं था, जो इसका गहन अध्ययन करता और फासीवाद के सिद्धांतों का प्रतिपादन करता। इस प्रकार फासीवाद का कोई स्पष्ट सिद्धांत मौजूद नहीं है। वाम पंथियों के बीच एक प्रवृत्ति है कि वे किसी भी दक्षिणपंथी विचारों वाले व्यक्ति को फासीवादी कह देते हैं। (कई बार देश में बहुसंख्यक समूह के कट्टरवाद को फासीवाद कहा जाता है, वहीं अल्पसंख्यक के कट्टरवाद को अलगाववाद कहा जाता है)। जिन नेताओं पर फासीवाद का लेबल लगाया गया था, हम उनके द्वारा किये गए वास्तविक कार्यों के अध्ययन के पश्चात् ही इस प्रश्न के उत्तर तक पहुंच सकते हैं कि फासीवाद क्या है (जैसाकि उपर्युक्त मामलों की चर्चा की गयी है)। कुछ नेता जिन्हें फासीवादी कहा गया है, उनमें हिटलर (जर्मनी), मुसोलिनी (इटली), फ्रैंको (स्पेन), सालाजार (पुर्तगाल) और पेरान (अर्जेन्टीना) सम्मिलित हैं।

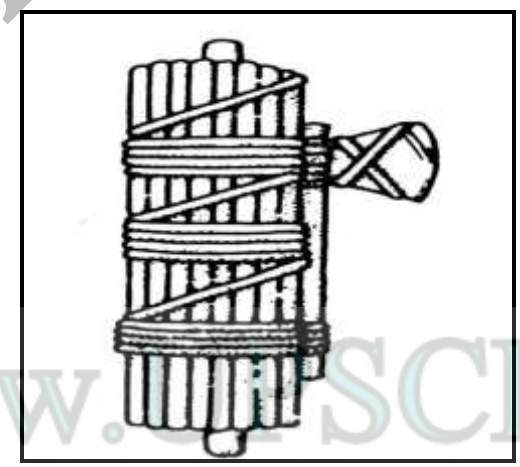

- 'फैसेस' या फासिस (Fasces) शब्द का अर्थ है छड़ों का एक बंडल, जिसमें एक कुल्हाड़ी बाहर निकली हुई है, जो प्राचीन रोमन कोंसुल की शक्ति का प्रतीक थी। एक महान राष्ट्र के निर्माण की

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

दिशा में सभी वर्गों के लोगों का एकता के साथ कार्य करने के रूप में इस चित्र का विश्लेषण किया जा सकता है।

- **मुसोलिनी** 1923 से पूर्व अपने उद्देश्यों को परिवर्तित करता रहा। प्रारम्भ में वह श्रमिक-वर्ग का समर्थक था परन्तु बाद में वह साम्यवाद के विरुद्ध हो गया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि उसका मुख्य उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना था न कि फासीवाद का प्रचार। फिर भी फासीवाद को मुसोलिनी ने जिस प्रकार व्यवहार में उपयोग किया उसके मूलभूत सिद्धांत इस प्रकार हैं:
  - **चरम राष्ट्रवाद** के अवशेषों से एक महान राष्ट्र को निर्मित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसमें एक राष्ट्र के अन्य राष्ट्रों से अधिक श्रेष्ठ होने की अवधारणा का प्रचार भी सम्मिलित है।
  - **अधिनायकवादी सरकार:** जितना सम्भव हो सके राज्य लोगों के जीवन के कई पक्षों को नियंत्रित करता है। इसका कारण यह है कि राज्य की महानता सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि राज्य किसी व्यक्ति के हितों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण है।
  - **एकल पार्टी व्यवस्था:** मुसोलिनी के फासीवादी राज्य में प्रजातंत्र के लिए कोई स्थान नहीं था और साम्यवाद से इनकी विशेष रूप से शत्रुता थी। साम्यवाद से शत्रुता भी एक कारण था जिसने फासीवाद को लोकप्रियता दिलाई, क्योंकि इसने मध्यवर्ग के बीच साम्यवादी अधिग्रहण के भय को रोक दिया था। केवल एक ही पार्टी थी और वह थी फासीवादी पार्टी। राष्ट्र के कुलीन वर्ग फासीवादी पार्टी के सदस्य थे।
  - **चमत्कारी या करिश्माई नेता:** उस नेता के करिश्माई व्यक्तित्व पर बहुत बल दिया जाता था जो जनता के बीच मजबूत छवि बनाने के लिए अपने रोमांचकारी भाषणों और कुशल प्रचार से जनता के बीच सशक्त छवि प्रस्तुत करता था। उसे सर्वोच्च नेता या इल ड्यूस (Il Duce) के रूप में प्रस्तुत किया जाता था।
  - **ऑटार्की (Autarchy):** इसके अंतर्गत आर्थिक स्वाधीनता को राष्ट्रीय नीति के रूप में माना जाता है। देश के आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने से सभी उत्पादन देश के भीतर ही होंगे और बेरोजगारी समाप्त हो जाएगी। यदि देश में सभी आर्थिक उत्पादन हो रहे हैं तो देश हर नागरिक को रोजगार उपलब्ध करा कर उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकेगा। आयात कम करने और निर्यात में वृद्धि करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है ताकि देश अपनी आवश्यकताओं को स्वयं ही पूरा कर सके। इसलिए देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया और उसे प्राप्त करने के लिए – बाजार, राज्य और अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियन्त्रण का समर्थन किया गया था।
- **फासीवाद का विकास क्यों हुआ?** कई विचारकों का तर्क है कि फासीवाद मध्यवर्गीय लोगों का आन्दोलन था, जिसे उन्होंने अपनी आर्थिक समृद्धि के उद्देश्य से चलाया था। इसी प्रकार कुछ लोगों का तर्क है कि पूंजीवाद के कारण फासीवाद उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि पूंजीवाद का आधारभूत लक्षण पूंजीपति वर्ग की समृद्धि है।

29. नाजीवाद (राष्ट्रीय समाजवाद) {Nazism (National Socialism)}

'नाजीवाद' या राष्ट्रीय समाजवाद का साम्यवाद (कम्युनिज्म) से कोई लेना देना नहीं है। इस शब्द का उपयोग फासीवाद के लिए ही किया जाता है, जोकि हिटलर के समय जर्मनी में प्रसिद्ध था। इसलिए नाजीवाद कुछ और नहीं है बल्कि यह एक प्रकार का फासीवाद ही है। नाजीवाद के कुछ मूलभूत सिद्धांतों को निम्नलिखित रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है:

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **समाजवाद/मार्क्सवाद/समाजवाद के विरुद्ध:** यद्यपि सत्ता में आने के पश्चात हिटलर श्रमिकों की स्थितियों में सुधार करने में सफल रहा था, परन्तु राष्ट्रीय समाजवाद में शब्द 'समाजवाद' का उपयोग नाज़ियों द्वारा श्रमिकों को अपनी पार्टी की ओर आकर्षित करने के लिए किया गया था।
- **चरम राष्ट्रवाद:** नाजीवाद को राष्ट्र के पुनर्जन्म के लिए समर्पित एक जीवन शैली के रूप में वर्णित किया गया था। नाजीवाद की मांग थी कि सभी वर्गों को राष्ट्र की महानता या गौरव के पुनर्निर्माण के लिए एकजुट होना चाहिए।
- **एकल नेता:** एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है जिसमें सम्पूर्ण राष्ट्र का विश्वास हो ताकि वह देश के गौरव के निर्माण का नेतृत्व करने में सक्षम हो। इस प्रकार व्यक्तित्व को सुव्यवस्थित प्रचार के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाता है। नेता रोमांचक भाषण देता है और सार्वजनिक रूप से अपनी छवि को एक हीरो के रूप में उभारता है। बच्चों के अन्दर स्वयं को फ्यूहरर (नेता) की सेवा में समर्पित करने की भावना फूंकने के लिए शिक्षा व्यवस्था का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया जाता है।
- **एकल पार्टी प्रणाली:** ऐसा इसलिए था क्योंकि केवल नाजियों ने ही जर्मनी के गौरव का पुनर्निर्माण किया था। अतः सभी पार्टियों के साथ-साथ विशेष रूप से साम्यवादियों का सफाया होना चाहिए था।
- **सर्वसत्तावादी सरकार (Totalitarian Government):** एक सर्वसत्तावादी सरकार में जनता के जीवन के सभी पहलुओं से संबद्ध संगठन की दक्षता पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है। व्यक्ति का हित सदैव राष्ट्रीय हितों के पश्चात आता है। जनता के बीच इस संदेश को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचार की भूमिका को मान्यता दी गई।
- **सैन्य शक्ति:** राष्ट्र को सैन्य रूप से सशक्त होना चाहिए। सम्पूर्ण राज्य को सैन्य स्तर पर संगठित किया जाना चाहिए। ऐसा इसलिए था क्योंकि युद्ध को राष्ट्र की महानता के पुनर्निर्माण के उपकरण के रूप में देखा गया था।
- **जातिवाद का सिद्धांत:** यह नाजीवाद का एक अनोखा और महत्वपूर्ण अंग था। इसका तर्क था कि सम्पूर्ण मानव जाति को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है, अर्थात आर्य और अनार्य। जर्मन लोग आर्य थे। वे लम्बे, नीली आँखों वाले, सुंदर और स्वामी जाति से सम्बन्धित होने के कारण विश्व पर शासन करने का भाग्य लेकर आए थे। स्लाव, एशियाई, अश्वेत और विशेषकर यहूदी लोगों के अनार्य होने के कारण उनके भाग्य में दासता लिखी थी। वे नीच और लालची थे।
- **आर्थिक आत्मनिर्भरता:** राष्ट्र को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहिए। इसका उद्देश्य बेरोजगारी को कम करना था। जहाँ तक सम्भव हो आयात पर निर्भरता नहीं होनी चाहिए। राज्य को स्वदेशी उद्योगों के विकास द्वारा आयात प्रतिस्थापन को लक्षित करना चाहिए और कच्चे माल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विदेशी क्षेत्रों पर भी अधिकार करना चाहिए।

30. नाजीवाद और इटली के फासीवाद में समानताएँ

हिटलर द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाले नाजीवाद और इटली में मुसोलिनी के फासीवाद के सिद्धांतों में निम्नलिखित समानताएँ थीं:

- राष्ट्रवाद के पुनर्जन्म के लिए दोनों ही सिद्धांतों में चरम राष्ट्रवाद पर बल दिया जाता था।
- अधिनायकवादी सरकार, राज्य की सर्वोच्चता और एकल पार्टी प्रणाली अन्य समान विशेषताएँ थीं।
- आर्थिक आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय नीति के रूप में प्रयोग किया गया (इससे बेरोजगारी कम करने के उद्देश्य में सहायता प्राप्त होगी)।
- युद्ध का गुणगान, देश की सैन्य शक्ति के निर्माण पर ध्यान देना और राष्ट्र की महानता के पुनर्निर्माण के लिए युद्ध को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करने की धारणा रखना।
- आवश्यक रूप से साम्यवाद विरोधी।
- राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सभी वर्गों के मध्य एकता।
- सुव्यवस्थित प्रचार के माध्यम से नेता के व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करना।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

31. नाजीवाद और फासीवाद में अंतर

- नाजीवाद की तुलना में फासीवाद को अस्पष्ट कहा जा सकता है क्योंकि नाजीवाद द्वारा स्वीकृत सिद्धांतों में अधिक स्पष्टता है। एक अन्य अंतर यहूदियों के प्रति नीति के सम्बन्ध में भी है। इटली का फासीवाद 1938 तक यहूदी विरोधी नहीं था। इसके बाद ही मुसोलिनी ने हिटलर की यहूदी विरोधी नीति को अपनाया था।
- हिटलर और मुसोलिनी ने फासीवाद को व्यावहारिक रूप कैसे दिया और सम्बन्धित देशों में फासीवाद का विकास कैसे हुआ, इसमें भी कुछ अंतर थे। इन अंतरों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है:
    - जर्मनी में नाजीवाद का प्रसार इटली के फासीवाद से अधिक गहरा और व्यापक था।
    - आर्थिक आत्मनिर्भरता के लक्ष्य के प्रति जर्मन नाजी व्यवस्था अधिक दक्ष और सफल थी और हिटलर बेरोजगारी को समाप्त करने में सफल रहा था। इसके विपरीत इटली में बेरोजगारी में वृद्धि हुई और यह आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति में विफल रहा।
    - उत्पीड़न के मामले में नाजी अधिक क्रूर थे और काफी सीमा तक उन्होंने मानवाधिकारों का उल्लंघन किया था। यहूदियों को व्यवस्थित रूप से मौत के घाट उतारने के लिए हिटलर ने यातना शिविरों की स्थापना की और यहाँ तक कि पोलैंड की गैर-यहूदी जनसंख्या को भी इन यातना शिविरों में भेजा गया। शिविरों में लोगों से अवैतनिक श्रम कराया जाता था और उन्हें भोजन से वंचित रखा जाता था। बहुत लोग भूख से मर गये और बहुतों को जहरीले गैस के कक्षों में भेजा गया। इसके विपरीत इटली में इतने बड़े स्तर पर कोई अत्याचार नहीं हुए।
    - मुसोलिनी चर्च के प्रति अपनी नीति में अधिक सफल रहा। 1929 में राजनीतिक क्षेत्र से हटने के लिए उसने पोप के साथ एक समझौता किया और उसके बदले में उसने पोप को धार्मिक क्षेत्र में स्वतंत्रता दी। दूसरी ओर, हिटलर इस प्रकार की कूटनीति के लिए अधीर था और वह समाज में चर्च का कोई भी प्रभाव नहीं चाहता था। चर्च के प्रति उसने बहुत ही कठोर नीति का पालन किया और चर्च को दबाने के नाजी प्रयासों में चर्च के कई सदस्यों को मार डाला गया।
    - हिटलर और मुसोलिनी की संवैधानिक स्थितियाँ भी भिन्न थीं। इटली में राजशाही अभी भी अस्तित्व में थी और राजा ने 1943 में मुसोलिनी को बर्खास्त करने का आदेश देकर उसके राज्य का अंत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके विपरीत जर्मनी में हिटलर से ऊँची कोई भी सत्ता नहीं थी जो उसे संवैधानिक रूप से पदच्युत या गिरफ्तार कर सके।

32. साम्यवाद और फासीवाद में समानताएं

यद्यपि दोनों ही अवधारणाएँ वामपंथी और दक्षिणपंथी एकरूपता के चरम छोर पर हैं। फिर भी उन्हें जिस प्रकार विभिन्न देशों में अपनाया गया था, हम उन्हीं में से कुछ समानताएँ खोजने का प्रयास कर सकते हैं:

- एक दलीय व्यवस्था।
- आत्मनिर्भरता पर ध्यान केन्द्रित करना (उदाहरण – खाद्य सुरक्षा और आयात घटाने पर बल देना)।
- राष्ट्र की महानता का निर्माण या राष्ट्र के पुनर्जन्म पर बल देना।
- अधिनायकवादी साम्राज्य अर्थात लोगों के सामाजिक और आर्थिक पक्षों को राज्य द्वारा संयोजित करना। राज्य ही निर्णय लेगा कि उद्योग क्या उत्पादन करेगा और राज्य ही देश की अर्थव्यवस्था को भी नियंत्रित करेगा।
- आक्रामक विदेश नीति – राष्ट्र के गौरव के पुनर्निर्माण के लिए फासीवादी युद्ध को एक उपकरण के रूप में मानते थे। साम्यवादी हिंसक आन्दोलन में विश्वास करते हैं और इस आन्दोलन के निर्यात द्वारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद पर बल देते हैं। स्टालिन ने आक्रामक विदेशी नीति का अनुकरण किया। उसने पूर्वी यूरोप को अपने प्रभाव क्षेत्र में सम्मिलित किया और विदेशी शक्तियों के विरुद्ध किये जा रहे संघर्ष में क्यूबा, अंगोला और वियतनाम आदि देशों का समर्थन भी किया।

VISION IAS
WWW.VISIONIAS.COM

33. फासीवाद और साम्यवाद में अंतर

फासीवाद और साम्यवाद में बहुत से अंतर हैं परन्तु यहां कुछ को सूचीबद्ध किया गया है:

- विचारधारा में अंतर– अर्थात साम्यवाद वामपंथी विचारधारा का अनुकरण करता है वहीं फासीवाद दक्षिणपंथी विचारधारा को मानता है।
- नेता को सर्वोच्च माना जाता है और उसके व्यक्तित्व का महिमामंडन किया जाता है। उदाहरण के लिए हिटलर ने फ़्युहरर की उपाधि धारण की और उसे एक मसीहा के रूप में प्रचारित किया गया जो जर्मनी को उसके कष्टों से बाहर लाएगा। इसके विपरीत रूस और चीन जैसे देशों में साम्यवादी पार्टी को शीर्ष पर स्थापित किया गया है। जब माओ और स्टालिन जैसे नेताओं ने व्यक्तित्व को प्रोत्साहित किया तो पार्टी को विकृत करने के लिए उनकी आलोचना की गयी। एक आदर्श साम्यवादी व्यवस्था में पार्टी की सामूहिक इच्छा सर्वोपरि है न कि किसी एक नेता की।
- सैद्धांतिक रूप से साम्यवाद युद्ध के विरुद्ध है। साम्यवादी नेताओं ने फ़्रांस-प्रशा युद्ध (1870-71), रूस-जापान युद्ध (1904-05) और प्रथम विश्व युद्ध आदि का विरोध किया क्योंकि युद्ध को वे पूंजीवाद का उप-उत्पाद मानते थे। यद्यपि पहले का USSR और आज का चीन एक आक्रामक विदेश नीति का अनुसरण करते हैं – लेकिन वे महान राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए युद्ध को मान्यता नहीं देते हैं। स्टालिन ने अपनी आक्रामक विदेश नीति के पक्ष को उचित ठहराने के लिए साम्यवादी क्रांति को पूंजीवाद से बचाने की बात कही। इसके विपरीत द्वितीय विश्व युद्ध में फासीवादी शक्तियों ने युद्ध को राष्ट्र के गौरव के पुनर्निर्माण के लिए अपरिहार्य उपकरण के रूप में देखा।
- दोनों प्रकार की व्यवस्थाओं ने जिस आर्थिक व्यवस्था का अनुकरण किया वह दोनों के बीच प्रमुख अंतर बिंदु है। साम्यवादी धन के सामूहिक स्वामित्व पर विश्वास करते थे, वहीं फासीवादी धन के निजी स्वामित्व के पक्ष में थे (यद्यपि देश की अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियन्त्रण दोनों ही व्यवस्थाओं की समान विशेषता है)।

VISION IAS

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

www.UPSCPDF.com